॥ निवेदन ॥

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जक्त-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी व उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। अब तक जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और कोई २ जो छपी थी तो ऐसे छिन्न भिन्न, बेजोड़ और अशुद्ध रूप में कि उन से पूरा लाभ नही उठ सकता था।

हमने देश, देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ ऐसे हस्त-लिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकर शब्द जहाँ तक पिछले पाँच बरस के उद्योग से हो सका असल या नकल कराके मँगवाये और यह कार्रवाई बराबर जारी है। जहाँ तक हो सकता है सर्व साधारन के उपकारक शब्द चुनकर कई लिपियों का मुक़ाबला करके ठीक रीति से शोध कर संग्रह किये जाते हैं, ऐसा नहीं होता कि औरों के छापे हुए ग्रंथों की भाँति बेसमझे और बेजाँचे छाप दिये जायँ। लिपि के शोधने में प्रायः उन्हीं ग्रंथकार महात्मा के पंथ के जानकार अनुयायी से सहायता ली जाती है और शब्दों के चुनने में यह भी ध्यान रक्खा जाता है कि वह सर्व साधारन की रुचि के अनुसार और ऐसे मनोहर और हृदय-बेधक हों जिन से आँख हटाने का जी न चाहे और अंतःकरन शुद्ध हो।

कई बरस से यह पुस्तक-माला छप रही है और जो जो कसरें जान पड़ती हैं वह आगे के लिये दूर की जाती हैं। कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत नोट में दे दिये जाते हैं। जिन महात्मा की बानी है उन का जीवन-चरित्र भी साथ ही छापा जाता है। परंतु इस सब जतन पर भी यह नहीं कहा जा सकता कि हमारी पुस्तकें निर्दोष हैं अर्थात उन में अशुद्धता और क्षेपक नाम-मात्र नहीं हैं।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उन की दृष्टि में आवैं उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजें जिस में

कबीर साहब की शब्दावली के पहिले भाग का दूसरा एडिशन प्रेमी और भक्तजन के सामने पेश करके नीचे लिखी हुई बातों पर उन की तवज्जह दिलाई जाती है--

१-कई पद जो क्षेपक या दुबारा कुछ बदले हुए रूप में छप गये थे उन्हें निकाल कर उन की जगह कबीर साहब के जँचे हुए दूसरे पद रख दिये गये और उन के सिवाय और भी कितने ही नये अति मनोहर और रोचक पद बढ़ा दिये गये हैं।

२-बहुतेरे पदों में दूसरी लिपियों से मिला कर कई कड़ियाँ बढ़ाई या बदली गई हैं और [illegible] की गई है।

३-जीवन-चरित्र में बहुत सा हाल और [illegible] लिखी गई हैं।

४-गूढ़ शब्दों के अर्थ और जिन महात्माओं या और लोगों के नाम किसी पद में आये हैं उन की कथा संक्षेप के साथ उस पद के नीचे नोट में लिख दी गई है।

५-ऊपर लिखे हुए कारनों से दूसरे छापे में पहिले छापे के १२० सफ़हे की जगह १३६ सफ़हे हो गये और इस लिये दाम ।=) के बदले ॥) कर दिया गया।

प्रोप्राइटर, बेलवेडियर प्रेस

जूलाई १९०९ इलाहाबाद

॥ सूचीपत्र ॥

शब्द — पृष्ठ

अ

कबीर साहब का जीवन-चरित्र

संसार का कुछ ऐसा नियम सदा से चला आया है कि किसी महा-पुरुष के जीवन समय में बहुत कम लोग इस बात के जानने की परवाह करते हैं कि वे कहाँ पैदा हुए, कैसी उनकी रहनी गहनी है, उन में विशेष गुण हैं और क्या [illegible] करने और परमार्थ का लाभ देने के लिये उन्हों ने [illegible] है। लेकिन जब वे इस पृथ्वी को छोड़ देते [illegible] जिन से संसार के तिमर हटाने का लाभ प्राप्त [illegible] है तब बहुत से लोग नींद से जाग [illegible] सम्बन्ध में अपनी बुद्धि के अनुसार [illegible] और बहुत सी बातें बनाते हैं [illegible] इन्हीं कारनों से प्राचीन महात्माओं [illegible] बाबत उन के समय के लोगों ने [illegible] जीवन-चरित्र लिखना बहुत कठिन हो जाता है।

कबीर साहब का जीवन-चरित्र [illegible] नहीं लिखा जा सकता परन्तु [illegible] लिखते हैं।

ऐसा जान पड़ता है कि कबीर साहब [illegible] समय में वर्तमान थे। [illegible] लोदी ने कबीर साहब के मरवा डालने का [illegible] हमारा कबीर साहब की पुस्तक " [illegible] मे भी किया है।

"कबीर कसौटी" नामी पुस्तक [illegible]

[illegible]

[illegible]

इसके अनुसार विक्रम सम्वत १५७५ अर्थात सन १५१८ ईस्वी में कबीर साहब का देहांत हुआ। सिकंदर लोदी १५१७ ईस्वी में मरा था इस से पक्का अनुमान होता है कि कबीर साहब सिकंदर लोदी के समय में थे। "कबीर कसौटी" में कबीर साहब की अवस्था देहांत के समय १२० बरस की होना लिखा है यदि यह ठीक है तो कबीर साहब का जन्म सम्वत १४५५ अर्थात १३९९ ईस्वी में ठहरता है।

कबीर साहब के पिता का नाम नूरअली और माता का नाम नीमा था जो काशी में रहते थे। किसी २ का कथन है कि नीमा के पेट से कबीर साहब पैदा हुए परंतु विशेष कर ऐसा कहा जाता है कि नूरअली जुलाहा गंगा नदी अथवा लहरतारा तलाव के किनारे सूत धो रहा था कि उस को एक बालक बहता दिखाई दिया उस ने उस को निकाल लिया और अपने घर लाकर पाला पोसा। पंडित भानुप्रताप तिवारी चुनारगढ़ निवासी जिन्हों ने इस विषय में बहुत खोज किया है उन के अनुसार कबीर साहब की असल मा एक हिंदुनी विधवा थी जो सन १४१४ ईस्वी में रामानंद स्वामी के दर्शन को गई। दंडवत करने पर रामानंद जी ने आशीर्वाद दिया कि तुम को पुत्र हो। स्त्री घबरा कर रोने लगी कि मैं तो विधवा हूं मुझे पुत्र क्यों कर हो सकता है। रामानंद जी बोले कि अब तो मुंह से निकल गया पर तेरा गर्भ किसी को लखाई न पड़ेगा। उसी दिन से उस विधवा को गर्भ रहा और दिन पूरा होने पर लड़का पैदा हुआ जिसे उसने लोक निन्दा के डर से लहरतारा के तलाव में डाल दिया जहाँ से उसे नूरू जुलाहा निकाल घर लाया। कबीर कसौटी के अनुसार जेठ की बड़सायत सोमवार के दिन नीरू ने बच्चे को पाया।

बालकपन ही मे कबीर साहब ने बानी द्वारा उपदेश करना आरम्भ कर दिया था। ऐसा कहते हैं कि कबीर साहब रामानंद स्वामी के जो रामानुज मत के अवलम्बी थे शिष्य हुए। यद्यपि कबीर साहब स्वतः संत थे और उनकी गति रामानन्द स्वामी से कहीं बढ़कर थी तौ भी गुरू

धारन करने की मर्यादा कायम करके इन्हीं ने इन को गुरु बना लिया। कहते हैं कि रामानन्द स्वामी को इनके चेले की कुछ खबर भी न थी। एक दिन वह अपने आश्रम में पर्दे के भीतर पूजा कर रहे थे: ठाकुर जी को स्नान करा के वस्त्र और मुकुट पहिना दिया परंतु फूलों का हार पहिराना भूल गये, इस सोच में पड़े थे कि यदि मुकुट उतार कर पहिनावें तो बेअदबी है [illegible] छोटी पड़ती थी कि इतने में [illegible] माला की गाँठ खोल कर पहिना दो। रामानन्द स्वामी [illegible] और बाहर निकल कर कबीर साहब [illegible] कहा कि तुम हमारे गुरु हो।

कबीर साहब के रामानन्द जी [illegible] चाहिये कि वह [illegible] निर्मल चैतन्य देश का धनी था जो [illegible] उसी की भक्ति और उपासना [illegible] उसी परमपुरुष और [illegible] और इन के अतिरिक्त जो [illegible] कह पूरे या थोड़े [illegible] हैं।

कबीर साहब ने [illegible] पक्ष नहीं किया [illegible] कथन है —

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

कहते हैं कि रामानन्द स्वामी ने जो [illegible] अपने पिता के श्राद्ध के दिन [illegible] मँगाया। कबीर साहब [illegible] गये। यह [illegible]

रहे हो मरी गाय कैसे खानी खायगी? कबीर साहब ने जवाब दिया कि जैसे तुम्हारे गुरूजी के मरे पुरखा पिंड खायँगे।

मांस, मद्य वरन हर प्रकार के नशे का कबीर साहब ने अपनी बानी मे निषेध किया है।

कबीर साहब जुलाहा के घर में तो पले थे ही और आप भी कपड़ा बुनने का काम करते थे। वह गृहस्थ आश्रम में थे, और भेषो के डिम्ब पाखंड और अहङ्कार को बहुत निंदनीय कहा है। कबीर साहब की स्त्री का नाम लोई और बेटे और बेटी का कमाल और कमाली था। किसी २ ग्रंथकारो का कथन है कि कबीर साहब बालब्रह्मचारी थे और कभी ब्याह नहीं किया, एक मुर्दा लड़के और लड़की को जिलाकर उनका नाम कमाल और कमाली रक्खा और उनके पालन का भार लोई को जो उनकी चेली थी सौंप दिया पर यह ठीक नहीं जान पड़ता।

जो कुछ हो लोई कबीर साहब की सच्ची और ऊँचे दर्जे की भक्त थी। एक बार का ज़िकर है कि कबीर साहब ने किसी खोजी को भक्ति का उदाहरण दिखाने के लिये अपने करगह मे जहाँ वह लोई के साथ दोपहर को ताना बुन रहे थे धीरे से ढरकी अपनी बँहोली में छिपा ली और लोई से कहा कि देख ढरकी गिर गई है उसे ज़मीन पर खोज वह उसे तुर्त ढूंढ़ने लगी आख़िर को हार कर काँपती हुई उसने अर्ज़ की कि नही मिलती इस पर कबीर साहब ने जवाब दिया कि तू पागल है रात के समय बिना दिया बाले ढूढ़ती है कैसे मिले। अपने स्वामी के मुख से यह बचन सुनतेही उस को सचमुच ऐसा दरसने लगा कि अँधेरा है, बत्ती जला कर ढूढ़ने लगी जब कुछ देर हो गई कबीर साहब ने खफ़ा हो कर कहा कि तू अंधी है देख मैं ढूढ़ता हूं और उस के सामने ढरकी बँहोली से गिरा कर फिर उठा लिया और उसे दिखा कर कहा कि कैसे झटपट मिल गई, इस पर लोई रोकर बोली कि स्वामी छिमा करो न जानें मेरी आँख मे क्या पत्थर पड़ गये थे। तब कबीर साहब ने उस जिज्ञासू से कहा कि देखो यह रूप भक्ति का है कि जो भगवन्त कहैं वही भक्त को वास्तविक दरसने लगे।

बहुत सी कथायें कबीर साहब की बाबत प्रसिद्ध हैं जिन का लिखना अनावश्यक है क्योंकि वह समझ में नहीं आतीं। इस में संदेह नहीं कि भक्तजन सर्व समर्थ हैं और उन के लिये कोई बात असंभव नहीं है पर इसी के साथ यह भी है कि संत करामात नहीं दिखलाते अपने भगवंत की भाँति अपने सामर्थ्य को प्रायः गुप्त रखते और साधारन जीवों की तरह संसार में बर्ताव करते हैं। तौभी थोड़े से चमत्कार जिन का भक्तमाल और दूसरे ग्रंथों में वर्णन है और महात्मा गरीबदास और दूसरे भक्तों ने भी उन को संकेत में अपनी बानी में कहा है नीचे लिखे जाते हैं क्योंकि उन्हें न केवल सर्व साधारन पसंद करेंगे वरन उन से महात्माओं की बानी जहाँ यह कौतुक इशारे में लिखे हैं भली प्रकार से समझ में आवैगी।

(१) एक बार काशी के पंडितों ने जो कबीर साहब से बहुत इर्षा रखते थे कबीर साहब की ओर से कंगलों के खिलाने का न्योता चारो ओर फेर दिया हज़ारों आदमी कबीर साहब के द्वारे पर इकट्ठा हुए जब कबीर साहब को इसकी ख़बर हुई तो एक हाँड़ी में थोड़ा सा भोजन बनवा कर और कपड़े से ढाँक कर अपने किसी सेवक से कहा कि हाथ भीतर डाल कर जहाँ तक निकले लोगों को बाँटते जाव इस प्रकार से सब न्योतहरी पेट भर कर खागये और जब कपड़ा उठाया गया हाँड़ी ज्यों की त्यों भरी निकली। इस कथा को ऐसे भी लिखा है कि भगवंत आप बंजारे का रूप धर कर बैलों पर अन्न लादे आये और कबीर साहब के ओसारे मे गाँज दिया जो सब मँगतों को बाँटने पर भी न चुका।

(२) जब कबीर साहब की सिद्धि शक्ति की महिमा काशी मे बहुत फैली और संसारियों की बड़ी भीड़ भाड़ होने लगी तो कबीर साहब अपनी निंदा करा कर लोगों से पीछा छुड़ाने के हेतु एक दिन एक हाथ किसी वेश्या के गले मे डाल कर और दूसरे हाथ मे पानी से भरी बोतल, शराब का धोखा देने को, लेकर बजार भर घूमे जिस मे लोगों ने समझा कि वह पतित हो गये और उनके घर जाना छोड़ दिया।

(३) छैमाही रूपक धरे कबीर साहब काशिराज के दर्बार में पहुंचे वहां किसी ने आदर सत्कार न किया। जब दर्बार से लौटने लगे तो थोड़ा सा जल बोतल से धरती पर डाल कर सोच में हो गये। राजा ने सबब पूछा तो जवाब दिया कि इस समय जगन्नाथ जी का रसोइया पुरी के मंदिर में आग लग जाने से जलने लगा था मैंने यह पानी डाल कर आग बुझा दी और रसोइये की जान बचा ली। राजा ने पुरी से समाचार मंगाया तो यह बात ठीक निकली।

(४) सिकन्दर लोदी बादशाह ने कबीर साहब को मार डालने के लिये सिक्कड़ से बंधवा कर गंगाजी में डलवा दिया पर न डूबे तब आग में डलवाया पर एक बाल बाँका न हुआ फिर मस्त हाथी उन पर छोड़ा वह भाग गया।

कबीर साहब के गुरमुख शिष्य जो संत गति को प्राप्त हुए धर्मदास जी काशी के एक प्रसिद्ध वैश्य साहूकार थे। वह पहले सनातन धर्म के अनुयायी थे और ब्राह्मणों की उन के यहाँ बड़ी भीड़ भाड़ रहा करती थी। उन से कबीर साहब मिले और सत मत की महिमा गाई इस पर धर्मदास जी ने उनका काशी के पंडितो से शास्त्रार्थ कराया जिस में वह लोग पूरी तरह परास्त हुए और धर्मदास जी ने कबीर साहब को गुरू धारन करके उन से उपदेश लिया और बहुत काल तक उनका सतसंग और सुरत शब्द का अभ्यास करके आप भी सतगति को प्राप्त हुए। उन की बानी बचन से उन की गुरु भक्ति, अपूर्व प्रेम और गति विदित होती है।

कबीर साहब ने मगहर में जो काशी से कुछ दूर बस्ती के ज़िले में है देह त्याग की। उन के गुप्त होने का समय जैसा कि ऊपर लिख आये हैं सम्वत १५७५ जान पड़ता है। उन के मगहर में शरीर त्याग करने के बहुत से प्रमान हैं। धर्मदास जी ने अपनी आरती में इस भाँति लिखा है—

यहँई आरती पीर कहाये। मगहर आमी नदी बहाये॥

नाभा जी ने कहा है :—

भजन भरोसे आपने, मगहर तज्यो शरीर।
अविनाशी की गोद में, बिलसैं दास कबीर॥

दादू साहब का वाक्य है :—

काशी तज मगहर गये, कबीर भरोसे नाम।
सनेही साहब मिले, दादू पूरे काम॥

इन के अंतकाल के सम्बन्ध में यह प्रसिद्ध है कि हिन्दुओं ने इन के मृतक शरीर को जलाना और मुसलमानों ने गाड़ना चाहा इस पर बहुत झगड़ा हुआ अंत को चद्दर उठा कर देखा तो मृतक स्थान पर शरीर नदारद था सुगंधित फूल पड़े थे। तब हिन्दुओं ने फूल लेकर मगहर में उनकी समाधि बनाई और मुसलमानों ने क़बर। यह समाधि और क़बर अब तक वर्तमान है और इस बात को जताती हैं कि यह सब वर्ण के झगड़े संतों ने तुच्छ और केवल संसारियों के योग्य विचार कर उन्हीं के लिये छोड़ दिये।

इस में संदेह नहीं कि कबीर साहब स्वतः संत थे जिन्हों ने संसार में कर्म भर्म मिटाने और सच्चे परमार्थ का रास्ता दिखाने को कलियुग में पहला संत अवतार धरा जैसा कि उनकी बानी बचन से जिस में पूरा भेद पिंड, ब्रह्मंड और निर्मल चेतन्य देश का दिया है विदित है। इस के प्रमाण में दो शब्द "कर नैनों दीदार महल में प्यारा है" और "कर नैनों दीदार यह पिंड से न्यारा है" (सफ़हा ७७ और ८१ देखिये) काफ़ी हैं इन में पूरा भेद सिलसिलेवार दिया है और इन को एक प्राचीन लिपि से लेकर अमृतसर के कबीरपंथी महंत भाई गुरदत्त सिंह जी ने भेजा है।

कबीर साहब की बानी जैसी मधुर, मनोहर और प्रेम से भिनी हुई है उसका असर पढ़ने से मालूम होता है—उस से किसी बड़े से बड़े कवि या विद्वान की बानी का मुक़ाबला नहीं हो सकता क्योंकि संतमुख बानी अनुभवी है और कवियों की बानी विद्या बुद्धि की॥

कबीर साहब की शब्दावली

॥ पहिला भाग ॥

सतगुरु और शब्द महिमा

॥ शब्द १ ॥

चल सतगुरु की हाट, ज्ञान बुधि लाइये ।
कीजे साहिब से हेत, परम पद पाइये ॥ १ ॥
सतगुरु सब कछु दीन्ह, देत कछु ना रह्यो ।
हमहिं अभागिनि नारि, सुक्ख तजि दुख लह्यो ॥ २ ॥
गई पिया के महल, पिया सँग ना रची ।
हिरदे कपट रह्यो छाय, मान लज्जा भरी ॥३॥
जहवाँ गैल सिलहली, चढ़ौं गिरि गिरि पड़ौं ।
उठहुं सम्हारि सम्हारि, चरन आगे धरौं ॥ ४ ॥
भला बना संजोग, प्रेम का चोलना ।
तन मन अरपौं सीस, साहब हँसि बोलना ॥ ५ ॥
जो गुरु रूठे होयँ, तो तुरत मनाइये ।
हुइये दीन अधीन, चूक बकसाइये ॥ ६ ॥
जो गुरु होयँ दयाल, दया दिल हेरि हैं ।
कोटि करम कटि जायँ, पलक छिन फेरि हैं ॥ ७ ॥
कहैं कबीर समुझाय, समुझ हिरदे धरो ।
जुगन जुगन करो राज, अस दुर्मति परिहरो ॥ ८ ॥

॥ शब्द २ ॥

सतगुरु चरन भजस मन मूरख, का जड़ जन्म गँवावस रे टेक

कर परतीत जपस उर अंतर, निसि दिन ध्यान लगावस रे १॥

द्वादस कोस वसत तेरो साहब, तहाँ सुरत ठहरावस रे ॥२॥

त्रिकुटी नदिया अगम पंथ जहँ, बिना मेंह झर लावस रे ॥३॥

दामिनि दमकत अमृत बरसत, अजब रंग दरसावस रे ॥४॥

इंगला पिंगला सुखमन से घस, नभ मंदिर उठि धावस रे॥५॥

लागी रहे सुरत की डोरी, सुन में सहर बसावस रे ॥६॥

बंक नाल उर चक्र सोधि के, मूल चक्र फहरावस रे ॥७॥

मकर तार के द्वार निरखि के, तहाँ पतंग उड़ावस रे ॥८॥

बिन सरहद अनहद जहँ बाजै, कौने सुर जहँ गावस रे ॥९॥

कहैं कबीर सतगुरु पूरे से, जो परचै सो पावस रे ॥१०॥

॥ शब्द ३ ॥

मैं तो आन पड़ी चोरन के नगर, सतसंग बिना जिय तरसे।

इस सतसँग में लाभ बहुत है, तुरत मिलावै गुर से॥२॥

मूरख जन कोइ सार न जानै, सतसँग में अमृत बरसे ॥३॥

सब्द सा हीरा पटकि हाथ से, मुट्ठी भरी कंकर से ॥४॥

कहैं कबीर सुनो भाई साधो, सुरत करो वहि घर से ॥५॥

॥ शब्द ४ ॥

साधो सतगुरु अलख लखाया, जब आप आप दरसाया। टेक।

बीज मध्य ज्यों वृच्छा दरसै, वृच्छा मद्धे छाया।

परमातम में आतम तैसे, आतम मद्धे माया ॥ १ ॥

ज्यों नभ मद्धे सुन्न देखिये, सुन्न अंड आकारा ।
निःअच्छर तें अच्छर तैसे, अच्छर छर बिस्तारा ॥ २ ॥
ज्यों रवि मद्धे किरन देखिये, किरन मध्य परकासा ।
परमातम तें जीव ब्रह्म इमि, जीव मध्य तिमि स्वाँसा॥३॥
स्वाँसा मद्धे सब्द देखिये, अर्थ सब्द के माहीं ।
ब्रह्म तें जीव जीव तें मन यों, न्यारा मिला सदाहीं ॥४॥
आपहि बीज बृच्छ अंकूरा, आप फूल फल छाया ।
आपहि सूर किरन परकासा, आप ब्रह्म जिव माया॥५॥
अंडकार सुन्न नभ आपै, स्वाँस सब्द अरथाया ।
निःअच्छर अच्छर छर आपै, मन जिव ब्रह्म समाया ॥६॥
आतम में परमातम दरसै, परमातम में झाँईं ।
झाँईं में परछाँईं दरसै, लखै कबीरा साँईं ॥७॥

॥ शब्द ५ ॥

भाई कोई सतगुर संत कहावै। नैनन अलख लखावै। टेक
डोलत डिगै न बोलत बिसरै, जब उपदेस दृढ़ावै ।
प्रान-पूज्य* किरिया तें न्यारा, सहज समाधि सिखावै ॥१॥
द्वार न रूंधै पवन न रोकै, नहिं अनहद अरुझावै ।
यह मन जाय जहाँ लग जबहीं, परमातम दरसावै ॥२॥
करम करै निःकरम रहै जो, ऐसी जुगत लखावै ।
सदा बिलास त्रास नहिं मन में, भोग में जोग जगावै॥३॥
धरती त्यागि अकास हुं त्यागै, अधर मड़ैया छावै ।
सुन्न सिखर के सार सिला पर, आसन अचल जमावै ॥४॥

*प्रान से पूजने योग्य सतगुर ।

भीतर रहा सो बाहर देखै, दूजा दृष्टि न आवै।
कहत कबीर बसा है हंसा, आवागवन मिटावै ॥५॥

॥ शब्द ६ ॥

जब तें मन परतीति भई ॥टेक॥
तब तें अवगुन छूटन लागे, दिन दिन बाढ़त प्रीति नई॥१॥
सुरतिनिरतिमिलिज्ञानजौहरी,निरखिपरखिजिनवस्तुलई
थोड़ी बनिज बहुत है बाढ़ी,उपजन लागे लाल मई ॥२॥
अगम निगम तू खोजु निरंतर,सत्त नाम गुरु मूल दई।
कहैं कबीर साध की संगति,हुती बिकार सो छूटि गई ॥३॥

॥ शब्द ७ ॥

साधो सब्द साधना कीजै।
जेहिं सब्द तें प्रगट भये सब सोई सब्द गहि लीजै ॥टेक॥
शब्दहि गुरू सब्द सुनि सिष भे सब्द सो बिरला बूझै।
सोई सिष्य सोइ गुरू महातम जेहिं अंतर गति सूझै ॥ १ ॥
सब्दै वेद पुरान कहत है सब्दै सब ठहरावै।
सब्दै सुर मुनि संत कहत हैं सब्द भेद नहिं पावै ॥२॥
सब्दै सुनि सुनि भेष धरत हैं सब्द कहै अनुरागी।
षट दरसन सब सब्द कहत है सब्द कहै बैरागी॥ ३ ॥
सब्दै माया जग उतपानी सब्दै केरि पसारा।
कहैं कबीर जहँ सब्द होत है तवन भेद है न्यारा ॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

साधो सब्द सौं बेल जमाई ॥ टेक ॥
तीन लोक सापा फैलाई गुरु बिन पेड़ न पाई॥ १ ॥

साषा के तर पेड़ छिपाना साषा ऊपर छाई ।
साषा तें बहु साषा उपजी दुइ साषा अधिकाई ॥ २ ॥
बेल एक साषा दुइ फूटी ता तें भइ बहुताई ।
साषा के बिच बेल समानी दिन दिन बाढ़त जाई ॥ ३॥
पाँचो तत्त तीन गुन उपजे फूल बास लपटाई ।
उपजा फल बहु रंग दिखावै बीज रहा फैलाई ॥४॥
बीज माहिं दुइ दाल बनाई मध अंकूर रहाई ।
कहैं कबीर जो अंकुर चीन्है पेड़ मिलेगा आई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ९ ॥

साँईं दरजी का कोइ मरम न पावा ॥ टेक ॥
पानी की सुई पवन कै धागा, अष्ट मास नव सीयत लागा॥१
पाँच पेवँद की बनी रे गुदरिया, तामें हीरा लाल लगावा॥२।
रतन जतन की मेटुकी बनावा, प्रान पुरुष को ले पहिरावा३
साहबकबीरअस दरजी पावा, बड़े भाग गुरु नाम लखावा४

॥ शब्द १० ॥

साधोसब्दसभन से न्यारा। जानैगा कोइ जाननहारा।टेक।
जोगी जती तपी सन्यासी अंग लगावै छारा ।
मूल मंत्र सतगुरु दाया बिनु कैसे उतरै पारा ॥१॥
जोग जज्ञ ब्रत नेम साधना कर्म धर्म ब्यौपारा ।
सो तो मुक्ति सभन से न्यारी किमि छूटै जम द्वारा॥२॥
निगम नेति जा के गुन गावै संकर जोग अधारा ।
ब्रह्मा बिस्नु जेहि ध्यान धरतु हैं सो प्रभु अगम अपारा।३॥
लागा रहै चरन सतगुरु के चंद चकोर की धारा ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो नपसिप सब्द हमारा ॥४॥

॥ शब्द ११ ॥

तोहिं मोरि लगन लगाये रे फकिरवा ॥टेक॥

सोवत ही में अपने मँदिर में, सब्दन मारि जगाये रे (फ०) ॥१

बूड़त ही भव के सागर में, बहियाँ पकरि समुझाये रे (फ०) २

एकै वचन वचन नहिं दूजा, तुम मो से बंद छुड़ाये रे (फ०) ॥३

कहैं कबीर सुनो भाई साधो, सत्तनाम गुन गाये रे (फ०) ॥४॥

॥ शब्द १२ ॥

गुरू मोहिं घुंटिया अजर पियाई ॥टेक॥

जब से गुरु मोहिं घुंटिया पियाई, भई सुचित मेटी दुचिताई १

नाम औषधी अधर कटोरी, पियत अघाय कुमति गइ मोरी २

ब्रह्मा विस्नु पिये नहिं पाये, खोजत संभू जन्म गँवाये ॥३॥

सुरति निरति कर पियै जो कोई, कहैं कबीर अमर होय सोई ४

॥ शब्द १३ ॥

जिनकी लगन गुरू सों नाहीं ॥ टेक ॥

ते नर खर कूकर सम जग में, बिरथा जन्म गँवाहीं ॥१॥

अमृत छोड़ि विषय रस पीवैं, धृग धृग तिन के ताँई ॥२॥

हरी बेल की कोरी तुमड़िया, सब तीरथ करि आई ॥३॥

जगन्नाथ के दरसन करिके, अजहुं न गई कडुवाई ॥४॥

जैसे फल उजाड़ को लागो, बिन स्वारथ झरि जाई ॥५॥

कहैं कबीर बिन वचन गुरू के, अंत काल पछिताई ॥६॥

बिरह और प्रेम।

॥ शब्द १ ॥

॥ चौपाई ॥

दरसन दीजे नाम सनेही। तुम बिन दुख पावे मेरी देही॥ टेक॥

॥ छंद ॥

दुखित तुम बिन रटत निसि दिन, प्रगट दरसन दीजिये।
बिनती सुनु प्रिय स्वामियाँ, बलि जाउँ बिलँब न कीजिये।१।

॥ चौपाई ॥

अन्न न भावे नींद न आवे। बार बार मोहिं बिरह सतावे।२।

॥ छंद ॥

बिबिधि बिधि हम भई ब्याकुल, बिन देखे जिव ना रहे।
तपत तन जिव उठत झाला, कठिन दुख अब को सहे॥३॥

॥ चौपाई ॥

नैनन चलत सजल जल धारा। निसि दिन पंथ निहारौं तुम्हारा।४

॥ छंद ॥

गुन अवगुन अपराध छिमा कर, औगुन कछु न बिचारिये।
पतित-पावन राखिये प्रन,* अपना प्रन न बिसारिये॥५॥

॥ चौपाई ॥

गृह आँगन मोहिं कछु न सोहाई।
बज्र भई और फिस्यो न जाई॥ ६ ॥

॥ छंद ॥

नैन भरि भरि रहे निरखत, निमिख नेह न तोड़िये।
बाँह दीजे बंदी-छोड़ा, अबके बंद छोड़ाइये॥ ७॥

---

*छक्का। [illegible]

॥ चौपाई ॥

मीन मरै जैसे बिन नीरा। ऐसे तुम बिन दुखित सरीरा॥८॥

॥ छंद ॥

दास कबीर यह करत बिनती, महा पुरुष अब मानिये।
दया कीजे दरस दीजे, अपना कर मोहिं जानिये ॥९॥

॥ शब्द २ ॥

मन मस्त हुआ तब क्यों बोले ॥ टेक ॥

हीरा पायो गाँठि गठियायो, बार बार वा को क्यों खोले॥१॥
हलकी थी जब चढ़ी तराजू, पूरी भई तब क्यों तोले ॥ २ ॥
सुरत कलारी भइ मतवारी, मदवा पी गइ बिन तोले ॥३॥
हंसा पाये मानसरोवर, ताल तलैया क्यों डोले ॥ ४ ॥
तेरा साहब है घट माहीं, बाहर नैना क्यों खोले ॥ ५ ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, साहब मिल गये तिल ओले*॥६

॥ शब्द ३ ॥

गुरु दयाल कब करिहौ दाया।
काम क्रोध हंकार बियापै, नाहीं छूटै माया ॥ १ ॥
जौं लगि उत्पति बिंदु रचो है, साँच कभूं नहिं पाया।
पाँच चोर सँग लाय दियो है, इन सँग जन्म गँवाया॥ २॥
तन मन डस्यो भुवंगम† भारी, लहरै वार न पारा।
गुरु गारुड़ी‡ मिल्यो नहिं कबहीं, बिष पसर्यौ बिकरारा§ ३
कहैं कबीर दुख का सौं कहिये, कोई दरद न जानै।
देहु दीदार दूर करि परदा, तब मेरो मन मानै ॥ ४ ॥

*ओट। †साँप। ‡जिसको साँप के बिष उतारने का मंत्र आता है। §भारी।

॥ शब्द ४ ॥

बालम आओ हमारे गेह रे। तुम बिन दुखिया देह रे।।टेक
सब कोइ कहै तुम्हारी नारी, मो को यह संदेह रे।
एकमेक ह्वै सेज न सोवै, तब लग कैसो सनेह रे॥ १॥
अन्न न भावै नींद न आवै, गृह वन धरै न धीर रे।
ज्यों कामी को कामिनि प्यारी, ज्यों प्यासे को नीर रे॥२॥
है कोइ ऐसा परउपकारी, पिय से कहै सुनाय रे।
अब तो बेहाल कबीर भये हैं, बिन देखे जिव जाय रे॥३॥

॥ शब्द ५ ॥

सतगुरु हो महराज मो पै साँई रँग डारा॥ टेक॥
सब्द की चोट लगी मेरे मन में बेध गया तन सारा॥१॥
औषध मूल कछू नहिं लागे क्या करे बैद बिचारा॥२॥
सुर नर मुनि जन पीर औलिया कोइ न पावे पारा॥३॥
साहब कबीर सर्व रँग रँगिया सब रँग से रँग न्यारा॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

भींजै चुनरिया प्रेम रस बूंदन॥ टेक॥
आरत साज के चली है सुहागिन पिय अपने को ढूंढन॥१॥
काहे की तोरी बनी है चुनरिया काहे के लगे चारो फूंदन।
पाँच तत्त की बनी है चुनरिया नाम के लागे फूंदन॥२॥
चढ़िगे महल खुल गइ रे किवरिया दास कबीर लागे झूलन४

॥ शब्द ७ ॥

दुलहिनी गावहु मंगलचार।
हम घर आये परम पुरुष भरतार॥ १॥

तन रत करि मैं मन रत करिहौं, पंच तत्व तब राती।
गुरूदेव मेरे पाहुन आये, मैं जोबन में माती ॥ २ ॥
सरीर सरोवर वेदी करिहौं, ब्रह्मा वेद उचार।
गुरूदेव संग भाँवरि लेइहौं, धन धन भाग हमार ॥ ३ ॥
सुर तेंतीसो कौतुक आये, मुनिवर सहस अठासी।
कहैं कबीर हम ब्याहि चले हैं, पुरुष एक अविनासी ॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

मैं अपने साहब संग चली ॥ टेक ॥

हाथ में नरियर मुख में बीड़ा, मोतियन माँग भरी ॥१॥
लिली घोड़ी जरद बछेड़ी, तापै चढ़ि के चली ॥ २ ॥
नदी किनारे सतगुर भेंटे, तुरत जनम सुधरी ॥ ३ ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, दोउ कुल तारि चली ॥४॥

॥ शब्द ९ ॥

सखियो हमहूं भई ससुरासी ॥ टेक ॥

आयो जोबन बिरह सतायो, अब मैं ज्ञान गली अठिलाती १
ज्ञान गली में सतगुरु मिलि गे, सोदइ हमें पिया की पाती २
वा पाती में अगम संदेसा, अब हम मरने को न डेराती ३
कहत कबीर सुनो भाई साधो, वर पाये अविनासी ॥४॥

॥ शब्द १० ॥

कैसे जीवेगी बिरहिनी पिया बिन, कीजे कौन उपाय ॥ टेक

दिवस न भूख रैन नहिं सुख है, जैसे कलिजुग जाम।
खेलत फाग छाँड़ि चलु सुंदर, तज चलु धन औ धाम ॥१

बन खँड जाय नास लौ लावे, मिलि पिय से सुख पाय ।
तलफत मीन बिना जल जैसे, दरसन लीजे धाय ॥ २ ॥
बिना अकार रूप नहिं रेखा, कौन मिलेगी आय ।
आपन पुरुष समझि ले सुंदरी, देखो तन निरताय ॥३॥
सब्द सरूपी जिव पिव बूझो, छाँड़ो भ्रम की टेक ।
कहैं कबीर और नहिं दूजा, जुग जुग हम तुम एक ॥४॥

॥ शब्द ११ ॥

कैसे दिन कटिहैं जतन बताये जइयो ॥ टेक ॥
येहि पार गंगा ओहि पार जमुना,
बिचवाँ मड़इया हमकाँ छवाये जइयो ॥ १ ॥
अँचरा फारि के कागज बनाइन,
अपनी सुरतिया हियरे लिखाये जइयो ॥ २ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो,
बहियाँ पकरि के रहिया बताये जइयो ॥ ३ ॥

॥ शब्द १२ ॥

सतगुरु मोरी चूक सँभारो ।
हौं अधीन हीन मति मोरी । चरनन तें जिन टारो ॥ टेक ॥
मन कठोर कछु कहा न माने । बहु वा को कहि हारो ॥ १ ॥
तुम हीं तें सब होत गुसाँई । या को बेग सँवारो ॥ २ ॥
अब दीजे संगत सतगुर की । जा तें होय निस्तारो ॥३॥
और सकल संगी सब बिसरैं । होउ तुम एक पियारो ॥४॥

कर देख्यो हित सारे जग से। कोइ न मिल्यो पुनि भारो ५॥
कहैं कबीर सुनो प्रभु मेरे। भवसागर से तारो ॥ ६ ॥

॥ शब्द १३ ॥

मिलना कठिन है, कैसे मिलौंगी पिय जाय ॥टेक॥
समझि सोचि पग धरौं जतन से, बार बार डिग जाय।
ऊँची गैल राह रपटीली, पाँव नहीं ठहराय ॥ १ ॥
लोक लाज कुल की मरजादा, देखत मन सकुचाय।
नेहर वास बसौं पीहर में, लाज तजी नहिं जाय ॥२॥
अधर भूमि जहँ महल पिया का, हम पै चढ़ो न जाय।
धन भइ बारी पुरुष भये भोला, सुरत झकोला खाय ॥३॥
दूती सतगुरु मिले बीच में, दीन्हो भेद बताय।
साहब कबीर पिया से भेंटे, सीतल कंठ लगाय ॥ ४ ॥

॥ शब्द १४ ॥

गुरू ने मोहिं दीन्ही अजब जड़ी ॥ टेक ॥
सो जड़ी मोहिं प्यारी लगतु है, अमृत रसन भरी ॥१॥
कायानगर अजब इक बँगला, ता में गुप्त धरी ॥ २ ॥
पाँचो नाग पचीसो नागिन, सूंघत तुरत मरी ॥ ३ ॥
या कारे ने सब जग खायो, सतगुरु देख डरी ॥४॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, ले परिवार तरी ॥ ५ ॥

॥ शब्द १५ ॥

गुरु हमें सजीवन मूर दई ॥ टेक ॥
जल थोड़ा बरषा भइ भारी, छाय रही सब लालमई ॥१॥
छिन छिन पाप कटन जब लागे, बाढ़न लागी प्रीति नई २

अमरापुर में खेती कीन्हा, हीरा नग तें भेंट भई ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, मन की दुबिधा दूर भई ॥४॥

॥ शब्द १६ ॥

गगन की ओट निसाना है ॥ टेक ॥
दहिने सूर चन्द्रमा बायें, तिन के बीच छिपाना है ॥१॥
तन की कमान सुरत का रोदा, सब्द बान ले ताना है २
मारत बान बेधा तनही तन, सतगुरु का परवाना है ॥३॥
मार्यो बान घाव नहिं तन में, जिन लागा तिन जाना है ४॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, जिन जाना तिन माना है ॥५॥

॥ शब्द १७ ॥

जा के लगी सब्द की चोट ॥ टेक ॥
का पोखर का कुआँ बावड़ी, का खाईं का कोट ॥१॥
का बरछी का छुरी कटारी, का ढालन की ओट ॥२॥
या तन की बारूद बनी है, सत्तनाम की तोप ॥ ३ ॥
मारा गोला भरमगढ़ टूटा, जीत लिया जम लोक ॥४॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, तरिहैा सब्द की ओट॥५॥

॥ शब्द १८ ॥

साँईं बिन दरद करेजे होय ॥ टेक ॥
दिन नहिं चैन रात नहिं निंदिया, कासे कहूं दुख रोय ॥१॥
आधी रतियाँ पिछले पहरवाँ, साँईं बिन तरस तरस रही सोय
पाँचो मारि पचीसो बस करि, इन में चहै कोइ होय॥३॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सतगुरु मिले सुख होय॥४॥

॥ शब्द १९ ॥

हमरी ननंद निगोड़िन जागे ॥ टेक ॥
कुमति लकुटिया निसि दिन व्यापे,सुमति देखि नहिं भावे।
निसि दिन लेत नाम साहब को,रहत रहत रँग लागे ॥१॥
निसि दिन खेलत रही सखियन सँग,मोहिं बड़ो डर लागे।
मोरे साहब की ऊँची अटरिया,चढ़त में जियरा काँपे ॥२॥
जो सुख चहै तो लज्जा त्यागे,पिय से हिलि मिलि लागे।
घूँघट खोल ग्रंग भर भेंटे,नैन आरती साजे ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो,चतुर होय सो जाने।
निज प्रीतम की आस नहीं है,नाहक काजर पारे ॥४॥

॥ शब्द २० ॥

अमरपुर ले चलु हो सजना ॥ टेक ॥
अमरपुरी की संकरी गलियाँ,अड़वड़ है चढ़ना ॥ १ ॥
ठोकर लगी गुरु ज्ञान सब्द की,उघर गये झपना ॥२॥
वोहि रे अमरपुर लागि बजरिया,सौदा है करना ॥३॥
वोहि रे अमरपुर संत बसतु हैं,दरसन है लहना ॥४॥
संत समाज सभा जहँ बैठी,वहीं पुरुष अपना ॥ ५ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो,भवसागर है तरना ॥६॥

॥ शब्द २१ ॥

भक्ती का मारग झीना रे ॥ टेक ॥
नहिं अचाह नहिं चाहना चरनन लौलीना रे ॥१॥

साध के सतसँग में रहे निस दिन मन भीना रे ॥२॥
सब्द में सुत ऐसे बसे जैसे जल मीना रे॥ ३ ॥
मान मनी को यों तजे जस तेली पीना रे ॥ ४ ॥
दया छिमा संतोष गहि रहे अति आधीना रे॥ ५॥
परमारथ में देत सिर कछु बिलँब न कीना रे ॥ ६॥
कहैं कबीर मत भक्ति का परगट कह दीना रे॥ ७ ॥

॥ शब्द २२ ॥

ऋतु फागुन नियरानी,कोइ पिया से मिलावे ॥ टेक ॥
सोइ तो सुंदर जाको पिय को ध्यान है,
सोइ पिय के मन मानी ।
खेलत फाग अंग नहिं मोड़े, सतगुरु से लिपटानी ॥१॥
इक इक सखियाँ खेल घर पहुंचीं,इक इक कुल अरुझानी ।
इक इक नाम बिना बहकानी,हो रही ऐंचा तानी ॥ २ ॥
पिय को रूप कहाँ लग बरनों, रूपहि माहिं समानी ।
जो रँग रँगे सकल छवि छाके, तन मन सभी भुलानी ॥३॥
यों मत जाने यहि रे फाग है,यह कछु अकथ कहानी।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो,यह गति बिरले जानी ॥४॥

॥ शब्द २३ ॥

पिया मेरा जागे मैं कैसे सोइ री ॥ १ ॥
पाँच सखी मेरे सँग की सहेली,
उन रँग रँगी पिया रँग न मिली री ॥ २ ॥

सास सयानी ननद झोरानी,
उन डर डरी पिय सार न जानी री ॥ २ ॥
ज्ञान ऊपर सेज बिछानी,
जाय न सकी मागी लाज लजानी री ॥ ३ ॥
रात दिवस मोहिं कूका मारे,
मैं न सुनी रचि रहि सँग जार री ॥ ४ ॥
कहै कबीर सुनु सखी सयानी,
बिन सतगुरु पिया मिले न मिलानी री ॥ ५ ॥

॥ शब्द २४ ॥

मोहिं लागि गये बान सुरंगी हो ॥ टेक ॥
धन सतगुरु उपदेश दियो है। होइ गयो चित्त भिरंगी हो॥१॥
ध्यान पुरुष की बनी है तिरिया, घायल पाँचो संगी हो ॥२॥
घायल की गति घायल जाने, का जानै जात पतंगी हो ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, निसि दिन प्रेम उमंगी हो ॥४॥

॥ शब्द २५ ॥

हमन हैं इश्क़ मस्ताना, हमन को होशियारी क्या।
रहैं आज़ाद या जग से, हमन दुनिया से यारी क्या ॥१॥
जो बिछुड़े हैं पियारे से, भटकते दर बदर फिरते।
हमारा यार है हम में, हमन को इंतिज़ारी क्या ॥ २ ॥
ख़ल्क़ सब नाम अपने को, बहुत कर सिर पटकता है।
हमन गुरु नाम साँचा है, हमन दुनिया से यारी क्या ॥३॥
न पल बिछुड़ें पिया हम से, न हम बिछुड़ें पियारे से।
उन्हीं से नेह लागी है, हमन को बेक़रारी क्या ॥ ४ ॥

कबीरा इश्क़ का माता, दुई को दूर कर दिल से।
जो चलना राह नाज़ुक है, हमन सिर बोझ भारी क्या॥५॥

॥ शब्द २६ ॥

मन लागो मेरो यार फकीरी में ॥ टेक ॥
जो सुख पावो नाम भजन में, सो सुख नाहिं अमीरी में १
भला बुरा सब को सुन लीजै, कर गुजरान गरीबी में ॥२॥
प्रेम नगर में रहनि हमारी, भलि बनि आई सबूरी में ॥३॥
हाथ में कूंडी बगल में सोंटा, चारो दिस जगीरी में ॥४॥
आखिर यह तन खाक मिलेगा, कहा फिरत मगरूरी में ५
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, साहब मिलै सबूरी में ॥६॥

॥ शब्द २७ ॥

कोइ प्रेम की पेंग झुलाओ रे ॥ टेक ॥
भुज के खंभ प्रेम की रसरी, मन महबूब झुलाओ रे ॥१॥
सूहा चोला पहिरि अमोला, निज घट पिय को रिझाओ रे२
नैनन बादर की झर लाओ, स्याम घटा उर छाओ रे ॥३॥
आवत जावत स्वुत के मग पर, फिकिर पिया को सुनाओ रे
कहत कबीर सुनो भाई साधो, पिय को ध्यान चित लाओ रे ४

॥ शब्द २८ ॥

नाचु रे मेरो मन नट होय ॥ टेक ॥
ज्ञान कै ढोल बजाय रैन दिन, सब्द सुनै सब कोई।
राहू केतु नवग्रह नाचैं, जमपुर आनँद होई ॥ १ ॥
छापा तिलक लगाय बाँस चढ़ि, होइ रहु जग से न्यारा।
सहस कला कर मन मेरो नाचै, रीझै सिरजनहारा ॥२॥

जो तुम कूदि जाव भवसागर, कला वदौं मैं तेरी।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, हो रहु नौनिधि चेरो ॥३॥

॥ शब्द २९ ॥

गुरु बिन दाता कोइ नहीं जग माँगनहारा।
तीन लोक ब्रह्मंड में सब के भरतारा ॥ १ ॥

अनुरागी तीरथ चले का तीरथ तारे।
काम क्रोध मद ना मिटा का देह पखारे ॥ २ ॥

सागर की नौका बनी बिच लोहा भारे।
शब्द भेद जाने नहीं मूरख पचि हारे ॥ ३ ॥

यांछ* मनोरथ पिय मिले घट भया उजारा।
सतगुरु पार उतारि हैं सब संत पुकारा ॥ ४ ॥

पाहन को का पूजिये या में का पावे।
अठसठ† के फल घर मिलें जो साध जिमावे ॥ ५ ॥

कहैं कबीर बिचार के अंधा खल डोले।
अंधे को सूझे नहीं घट ही में बोले ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३० ॥

साधो सहज समाधि भली।
गुरु प्रताप जा दिन से जागी, दिन दिन अधिक चली ॥१॥

जहँ जहँ डोलौं सो परिकरमा, जो कुछ करौं सो सेवा।
जब सोवौं तब करौं दंडवत, पूजौं और न देवा ॥ २ ॥

कहौं सो नाम सुनौं सो सुमिरन, खावँ पियौं सो पूजा।
गिरह उजाड़ एक सम लेखौं, भाव मिटावौं दूजा ॥ ३ ॥

*इच्छा अनुसार। †अठसठ तीरथ।

आँख न मूंदौं कान न रूंधौं, तनिक कष्ट नहिं धारौं ।
खुले नैन पहिचानौं हँसि हँसि, सुंदर रूप निहारौं ॥४॥
सब्द निरन्तर से मन लागा, मलिन वासना त्यागी ।
ऊठत बैठत कबहुं न छूटै, ऐसी तारी लागी ॥ ५ ॥
कहैं कबीर यह उनमुनि रहनी, सो परगट कर गाई ।
दुख सुख से कोइ परे परम पद, तेहि पद रहा समाई ॥६॥

॥ शब्द ३१ ॥

गुरु बड़े भृंगी हमारे गुरु बड़े भृंगी ।
कीट सोँ ले भृंग कीन्हा आप सों रंगी॥टेक॥
पाँव ओरै पंख ओरै और रँग रंगी ।
जाति कुल ना लखै कोई सब भये भृंगी॥१॥
नदी नाले मिले गंगै कहलावैं गंगी ।
दरियाव दरिया जा समाने संग में संगी ॥ २ ॥
चलत मनसा अचल कीन्ही मन हुआ पंगी ।
तत्त में निःतत्त दरसा संग में संगी ॥ ३ ॥
बंध तें निर्बंध कीन्हा तोड़ सब तंगी ।
कहैं कबीर किया अगम गम नाम रँग रंगी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३२ ॥

मैं का से बूझौं अपने पिया की बात री॥टेक॥
जान सुजान प्रान-प्रिय पिय बिन, सबै बटाऊ जात री १
आसा नदी अगाध कुमति बहै,रोकि काहू पै न जात री २
काम क्रोध दोउ भये करारे, पड़े बिषय रस मात* री ॥३॥

---

* माते ।

ये पाँचो अपमान के संगी, सुमिरन को अलसात री ॥४
कहैं कबीर बिछुरि नहिं मिलिहो, ज्यौं सरवर बिन पात* री ॥५॥

॥ शब्द ३३ ॥

नारद साध सों अँतर नाहीं ।
जो कोइ साध सों अंतर राखै, सो नर नरके जाहीं ॥ टेक ॥
जागे साध तो मैं हूं जागूं, सोवै साध तो सोऊँ ।
जो कोइ मेरे साध दुखावै, जरा मूल से खोऊँ ॥ १ ॥
जहाँ साध मेरो जस गावै, तहाँ करौं मैं बासा ।
साध चलै आगे उठ धाऊँ, मोहिं साध की आसा ॥ २ ॥
माया मेरी अर्ध-सरीरी, औ भक्तन की दासी ।
अठसठ तीरथ साध के चरनन, कोटि गया और कासी ३॥
अंतरध्यान नाम निज केरा, जिन भजिया तिन पाई ।
कहैं कबीर साध की महिमा, हरि अपने मुख गाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३४ ॥

मोहिं तोहि लागी कैसे छूटै । जैसे हीरा फोरे न फूटै ॥ टेक ॥
मोहिं तोहिं आदि अंत बन आई । अब कैसे कै दुरत दुराई १
जैसे कंवल-पत्र जल बासा । ऐसे तुम साहब हम दासा ॥२॥
जैसे चकोर तकत निसि चंदा । ऐसे तुम साहब हम बंदा ॥३॥
जैसे कीट भृंग लौ लाई । तैसे सलिता सिंधु समाई ॥४॥
हम तो खोजा सकल जहाना । सतगुरु तुम सम कोउ न आना
कहैं कबीर हमरा मन लागा । जैसे सोनै मिला सुहागा ६

॥ शब्द ३५* ॥

सतगुरु के सँग क्यों न गई री ॥ टेक ॥
सतगुरु सँग जाती सोना बनि जाती,
अब माटी के मैं मोल भई री ॥ १ ॥
सतगुरु हैं मेरे प्रान अधारा,
तिनकी सरन मैं क्यों न गही री ॥ २ ॥
सतगुरु स्वामी मैं दास सतगुरु की,
सतगुरु न भूले मैं भूल गई री ॥ ३ ॥
सार को छोड़ि असार से लिपटी,
धृग धृग धृग मति मंद भई री ॥ ४ ॥
प्रान-पती को छोड़ि सखीरी,
माया के जाल में अरुझ रही री ॥ ५ ॥
जो प्रभु हैं मेरे प्रान अधारा,
तिन की मैं क्यों ना सरन गही री ॥ ६ ॥

चितावनी और उपदेश

॥ शब्द १ ॥

बिन सतगुरु नर रहत भुलाना, खोजत फिरत राह नहिं जाना।
केहर-सुत† ले आयो गरड़िया, पाल पोस उन कीन्ह सयाना १
करत कलोल रहत अजयन‡ सँग, आपन मर्म उनहुं नहिं जाना २
केहर इक जंगल से आयो, ताहि देख बहुतै रिसियाना ३

---

*इस शब्द में कबीर साहब की छाप नहीं है परंतु जो कि अति मनोहर है और लाहौर के कबीरपंथी महंत ने कबीर साहब का करके दिया है हम उसे छापते हैं। †शेर का बच्चा। ‡बकरी।

पकरि कै भेद तुरत समुझाया, आपन दसा देख मुसक्याना ४
जग कुरंग बिच बसत बासना, खोजत मूढ़ फिरत चौगाना ५
कर उसवास* मनै में देखे, यह सुगंधि धौं कहाँ बसाना ६
अर्ध उर्ध बिच लगन लगी है, छक्यो रूप नहिं जात बखाना ७
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, उलटि आपु में आपु समाना ८

॥ शब्द २ ॥

बिन सतगुरु नर भरम भुलाना ॥ टेक ॥
सतगुरु सब्द क मर्म न जाने, भूलि परा संसारा ॥१॥
बिना नाम जम धरि धरि खैहै, कौन छुड़ावनहारा ॥२॥
सिरजनहार का मर्म न जाने, धृग जीवन जग तेरा ॥३॥
धरमराय जब पकरि मँगैहैं, परिहै मार घनेरा ॥ ४ ॥
सुत नारी को मोह त्यागि कै, चीन्हो सब्द हमारा ॥५॥
सार सब्द परवाना पावो, तब उतरो भव पारा ॥६॥
इक मन ह्वै के चढ़ो नाव पर, सतगुरु खेवनहारा ॥७॥
साहब कबीर यह निर्गुन गावैं, संतन करो बिचारा ॥८॥

॥ शब्द ३ ॥

तुक जिंदगी बंदगी कर लेना, क्या माया मद मस्ताना ॥टेक
रथ घोड़े सुख पाल पालकी, हाथी और बाहन नाना ।
तेरा ठाट काठ की टाटी, यह चढ़ चलना समसाना[†] ॥१॥
रेसम पाट‡ पाटम्बर अम्बर, जरी बस्त्र का बाना ।
तेरे काज गजी गज चारिक§, भरा रहे तोसाखाना ॥२॥
खर्चे की तदबीर करो तुम, मंजिल लंबी जाना ।
पहुँचने का गाँव न मग में, चौकी न हाट दुकाना ॥३॥

*सोच । †समसान । ‡रूजी कपड़ा । §चार एक ।

जीते जी ले जीत जनम को,यही गोय यहि मैदाना।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो,नहिं कलि तरन जतन आना।४

॥ शब्द ४ ॥

सुगवा पिंजरवा छोरि करि भागा ॥टेक॥
इस पिंजरे में दस दरवाजा। दसो दरवाजे किवरवा लागा १
अँखियन सेती नीर बहन लाग्यो।
अब कस नाहिं तू बोलत अभागा ॥ २ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो।
उड़ि गे हंस टूटि गयो तागा ॥ ३ ॥

॥ शब्द ५ ॥

कौनो ठगवा नगरिया लूटल हो ॥ टेक ॥
चंदन काठ कै बनल खटोलना। तापर दूलहिन सूतलहो।१।
उठो री सखी मोरी माँग सँवारो। दूलहा मो से रूसल हो२
आये जमराज पलंग चढ़ि बैठे। नैनन आँसू टूटल हो ३
चारि जने मिलि खाट उठाइन। चहुं दिस धूधू ऊठल हो४
कहत कबीर सुनो भाई साधो।जग से नाता छूटल हो ५

॥ शब्द ६ ॥

हम का ओढ़ावे चदरिया, चलती बिरिया ॥टेक॥
प्रानराम जब निकसन लागे,उलट गईं दूनों नैन पुतरिया१
भीतर से जब बाहर लाये,छूटि गई सब महल अटरिया२
चार जने मिलि खाट उठाइन,रोवत ले चले डगर डगरिया ३
कहत कबीर सुनो भाईसाधो,संग चलेगी वहि सूखीलकरिया४

॥ शब्द ७ ॥

क्या देख दिवाना हूवा रे ॥ टेक ॥
माया मूली सार बनी है, नारी नरक का कूवा रे ॥१॥
हाड़ मास नाड़ी का पिंजर, ता में मनुवाँ सूवा रे ॥२॥
भाई बंद और कुटँब कबीला, ता में पचि पचि मूवा रे ॥३॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, हार चला जग जूवा रे॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

बीती बहुत रहि थोरी सी ॥ टेक ॥
गाढ़ परे नर झींखन लागे, निकर प्रान गयो चोरी सी१
भाई बंद कुटुंब सब आये, फूंक दियो मानो होरी सी॥२॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, सिर पर देत हैं भौंरी सी॥३॥

॥ शब्द ९ ॥

सोच समुझ अभिमानी, चादर भइ है पुरानी ॥ टेक ॥
टुकड़े टुकड़े जोड़ि जुगत सों, सी के अँग लिपटानी ।
कर डारी मैली पापन सों, लोभ मोह में सानी ॥ १ ॥
ना यहि लगो ज्ञान के साबुन, ना धोई भल पानी ।
सारी उमिर ओढ़ते बीती, भली बुरी नहिं जानी ॥२॥
सङ्का मान जान जिय अपने, यह है चीज बिरानी ।
कहत कबीर धर राखु जतन से, फेर हाथ नहिं आनी ॥३

॥ शब्द १० ॥

खेल ले नैहरवाँ दिन चारि ॥ टेक ॥
पहिली पठौनी तीन जने आये, नौवा बाम्हन बारि ॥१॥
बाबुल जी मैं पैयाँ तोरी लागौं, अब की गवन दे टारि

दुसरी पठौनी आपै आये. लेके डोलिया कहारि ॥ ३ ॥
धरि बहियाँ डोलिया बैठारिन, कोऊ न लागै गोहारि॥४॥
ले डोलिया जाय बन में उतारिन, कोइ नहिं संगि हमारि।५
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, इक घर है दस द्वारि ॥६॥

॥ शब्द ११ ॥

हँड़िया फँदाय धन चलु रे, मिलि लेहु सहेली ।
दिनाँ चारि को संग है, फिर अंत अकेली ॥ १ ॥
दिन दस नैहर खेलि ले. सासुर निज भरना ।
बहियाँ पकरि पिय ले चले. तब उजर न करना ॥ २ ॥
इक अँधियारी कोठरी, दूजे दिया न बाती ।
लेहिं उतारि ताही घराँ, जहँ संग न साथी ॥ ३ ॥
इक अँधियारी कूइयाँ, दूजे लेजुर* टूटी ।
नैन हमारे अस ढुरैं, मानो गागर फूटी ॥ ४ ॥
दास कबीरा यों कहै, जग नाहिन रहना ।
संगी हमरे चलि गये, हमहूं को चलना ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

साँई के सँग सासुर आई ॥ टेक ॥
संगनसूती स्वाद न जान्यौ, गयो जोबन सुपने की नाँई ॥१॥
जनाचारि मिलि लगन सोधाई, जना पाँच मिलि मंडप छाई
सखी सहेली मंगल गावैं. दुख सुख माथे हरदी चढ़ाई ॥२॥
नाना रूप परी मन भाँवरि, गाँठि जोरि भइ पति की आई ।
अरघै दै दै चली सुवासिन, चौकहिं राँड़ भई सँग साँई ॥३॥
भयो बियाह चली बिन दूलह. बाट जात समधी समुझाई ।
कहैं कबीर हम गवने जैबै, तरब+ कंत लै तूर बजाई ॥४॥

*रस्सी । +तरैंगे ।

॥ शब्द १३ ॥

बहुरि नहिं आवना या देस ॥ टेक ॥
जो जो गये बहुरि नहिं आये, पठवत नाहिं सँदेस ॥१॥
सुर नर मुनि औ पीर ओलिया, देवी देव गनेस ॥ २ ॥
धरि धरि जनम सबै भरमे हैं, ब्रह्मा बिस्नु महेस ॥३॥
जोगी जंगम औ सन्यासी, डीगम्बर दुरवेस ॥४॥
चुंडित मुंडित पंडित लोई, सुर्ग रसातल सेस ॥५॥
ज्ञानी गुनी चतुर औ कबिता, राजा रंक नरेस ॥६॥
कोइ राम कोइ राम बखाने, कोइ कहै आदेस ॥७॥
नाना भेष बनाय सबै मिलि, ढूंढ़ि फिरे चहुं देस ॥ ८ ॥
कहैं कबीर अंत ना पैहो, बिन सतगुरु उपदेस ॥ ९ ॥

॥ शब्द १४ ॥

वा दिन की कछु सुध कर मन माँ ॥ टेक ॥
जा दिन लैचलु लैचलु होई, ता दिन संग चलै नहिं कोई ।
तात मात सुत नारी रोई, माटी के संग दिये समोई
सो माटी काटेगी तन माँ ॥ १ ॥
उलझन नेहा कुलफन नारी, किसको बीबी किसको बाँदी ।
किसका सोना किसकी चाँदी, जा दिन जम लैचलिहै बाँधी ।
डेरा जाय परै वहि बन माँ ॥ २ ॥
टाँड़ा तुम ने लादा भारी, बनिज किया पूरा ब्यौपारी ।
जूवा खेला पूंजी हारी, अब चलने की भई तयारी ।
हित चित मन तुम लाओ धन माँ ॥ ३ ॥

जो कोइ गुरु से नेह लगाई, बहुत भाँति सोई सुख पाई।
माटी में काया मिलि जाई, कहै कबीर आगे गोहराई।
साँच नाम साहब को सँग माँ ॥ ४ ॥

॥ शब्द १५ ॥

जोगी जन जागत रहो मेरे भाई।
जागत रहियो सोय मत जैयो, चोर मूसि लै जाई ॥ १ ॥
बिरह फाँसि डालै हित चित करि, मारै ढिंग बैठाई।
बाजीगर बंदर करि राखै, ले जाय संग लगाई ॥ २ ॥
रस कसि लेत निचोरि कामिनी, बुधि बल सब छलि खाई।
गाँडे की छोई करि डारै, रहन न देत मिठाई ॥ ३ ॥
तसकर[*] तरज[†] हरन[‡] मृग-चितवन, कंदर्प[§] लेत चुराई।
घृत पावक निज नारि निकट ढिंग, कोइ बिरले जन ठहराई ॥४॥
बन के तपसी नागा लूटे, सुर नर मुनि छलि खाई।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, जग लूटा ढोल बजाई ॥ ५ ॥

॥ शब्द १६ ॥

हमारे मन कब भजिहो गुरु नाम ॥ टेक ॥
बालापन जनमत हीं खोयो, ज्वानी में व्यापा काम।
बूढ़ भये तन थाकन लागे, लटकन लागे चाम ॥ १ ॥
कानन बहिर नैन नहिं सूझै, भये दाँत बेकाम।
घर की त्रिया बिमुख होइ बैठी, पुत्र कियो कलकान ॥ २ ॥
खटिया से भुइयाँ कर दीन्हो, जम का गड़ा निसान।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, दुविधा में निकसत प्रान ॥ ३ ॥

---

[*] चोर। [†] ठग। [‡] हर लेने वाला। [§] वीर्य्य। झगड़ा।

॥ शब्द १७ ॥

मन हलवाई हो, सतनाम विमल पकवान ॥ टेक ॥

काया कराही कर्म घृत भरु, मन मैदा को सानु ।
ब्रह्म अगिन उदगारि* के, तू अजव मिठाई छानु ॥१॥
तन हमारो ताखरी† हो, मन हमारो सेर ।
सुरति हमरी डाँड़िया हो, चित हमारो फेर ॥२॥
गगन मंडल में घर हमारो, त्रिकुट मोर दुकान ।
सुरति हमरी उनमुनी, तातें लागि वस्तु विकान ॥३॥
लोभ लहर नदिया वहै हो, लख चौरासी धार ।
बिन गुरु साकिन बूड़ि मुए, कोइ गुरमुख उतरे पार ॥ ४ ॥
कहैं कबीर स्वामी अगोचरा, तुम गति अगम अपार ।
संतन लाद्यो सत्त नाम, सब विष लाद्यो संसार ॥ ५ ॥

॥ शब्द १८ ॥

करो जतन सखी साँईं मिलन की ॥ टेक ॥

गुड़िया गुड़वा सूप सुपलिया,
तजि दे बुधि लरिकैयाँ खेलन की ॥ १ ॥
देवना पित्तर भुइयाँ भवानी,
यह मारग चौरासी चलन की ॥ २ ॥
ऊँचा महल अजब रँग वँगला,
साँईं की सेज वहाँ लगी फूलन की ॥ ३ ॥
तन मन धन सब अर्पन कर वहँ,
सुरत सम्हार परु पइयाँ सजन की ॥ ४ ॥

*जगा कर। †पलरा।

कहैं कबीर निर्भय होय हंसा,
कुंजी बता दों ताला खुलन की ॥ ५ ॥

॥ शब्द १९ ॥

अपने घट दियना बारु रे ॥ टेक ॥
नाम कै तेल सुरत कै बाती, ब्रह्म अगिन उदगारु रे ॥ १ ॥
जगमग जोत निहारु मँदिर में, तन मन धन सब वारु रे ॥२॥
झूठी जान जगत की आसा, बारंबार बिसारु रे ॥ ३ ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, आपन काज सँवारु रे ॥ ४ ॥

॥ शब्द २० ॥

मन तुम नाहक दुंद मचाये ॥ टेक ॥
करि असनान छुवो नहिं काहू, पाती फूल चढ़ाये ॥१॥
मूरति से दुनिया फल माँगै, अपने हाथ बनाये ॥२॥
यह जग पूजै देव देहरा, तीरथ बर्त अन्हाये ॥ ३ ॥
चलत फिरत में पाँव थकित भे, यह दुख कहाँ समाये॥४॥
झूठी काया झूठी माया, झूठे झूठ लखाये ॥ ५ ॥
बाँझिन गाय दूध नहिं देहै, माखन कहँ से पाये ॥ ६ ॥
साँचे के सँग साँच बसत है, झूठे मारि हटाये ॥ ७ ॥
कहैं कबीर जहँ साँच वस्तु है, सहजै दरसन पाये ॥ ८ ॥

॥ शब्द २१ ॥

मन फूला फूला फिरै जगत में कैसा नाता रे ॥ टेक ॥
माता कहै यह पुत्र हमारा, बहिन कहै बिर* मेरा।
भाई कहै यह भुजा हमारी, नारि कहै नर मेरा ॥ १ ॥
पेट पकरि के माता रोवै, बाँहि पकरि के भाई।
लपटि झपटि के तिरिया रोवै, हंस अकेला जाई॥२॥

*बीर=भाई।

जब लग जीवै माता रोवै, बहिन रोवै दस मासा ।
तेरह दिन तक तिरिया रोवै, फेर करै घर वासा ॥३॥
चार गजी चरगजी मँगाया, चढ़ा काठ की घोड़ी ।
चारो कोने आग लगाया, फूंक दियो जस होरी ॥४॥
हाड़ जरै जस लाह कड़ी को, केस जरै जस घासा ।
सोना ऐसी काया जरि गइ, कोई न आयो पासा ॥५॥
घर की तिरिया ढूंढ़न लागी, ढूंढ़ि फिरी चहुं देसा ।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, छाँड़ो जगकीआसा॥६॥

॥ शब्द २२ ॥

छाँड़ि दे मन बौरा डगमग ॥ टेक ॥
अब तो जरै मरै बनि आवै, लीन्हो हाथ सिंधोरा ।
ध्यान धरो करो दृढ़ गुरू की, सुनो सब्द घनघोरा ॥१॥
होइ निसंक मगन ह्वै नाचे, लोभ मोह भ्रम छाँड़े ।
सूरा कहा मरन सों डरपे, सती न संचय भाँड़े ॥२॥
लोक लाज कुल की मरजादा, यही गले में फाँसी ।
आगे ह्वै पग पाछे धरिहो, होय जगत में हाँसी ॥३॥
अगिन जरे ना सती कहावै, रन जूझै नहिं सूरा ।
बिरह अगिन अंतर में जारै, तब पावै पद पूरा ॥४॥
यह संसार सकल जग मैला, नाम गहै तेहि सूंचा ।
कहैं कबीर भक्ति मत छाँड़ो, गिरत परत चढ़ु ऊँचा॥५॥

॥ शब्द २३ ॥

भूला मन समुझावै जो पै भूला मन समुझावै॥टेक॥
अरब खरब लों दर्ब गाड़े, खरिचन खान न पावै ।
जब जम आइ करै कंठ घेरो, दै दै सैन बुझावै ॥१५॥

बोइ बबूर अंब फल चाहत, सो फल कैसे पावै।
खोंटा दास गाँठि लै डोलन, भलि भलि वस्तु मोलावै ॥२॥
गुरु परताप साध की संगति, मन-बांछित फल पावै।
जाति जोलाहा नाम कबीरा, बिमल बिमल गुन गावै॥३॥

॥ शब्द २४ ॥

मन बनियाँ बानि न छोड़ै ॥ टेक ॥
जनम जनम का मारा बनियाँ, अजहूं पूर न तौलै।
पासँग कै अधिकारी लै लै, भूला भूला डोलै॥ १ ॥
घर में दुबिधा कुमति बनी है, पल पल में चित तोरै।
कुनबा वाके सकल हरामी, अमृत में बिष घोरै ॥ २॥
तुमहीं जल में तुमहीं थल में, तुमहीं घट घट बोलै।
कहैं कबीर वा सिप को डरिये, हिरदे गाँठि न खोलै ॥३॥

॥ शब्द २५ ॥

उठि पछिलहरा† पिसना पीस ॥ टेक ॥
ढोरु पछोरु पलक छिन दम दम।
अनहद जाँत गड़ा तोरे सीस ॥ १ ॥
कर बिन चलै झींक बिन निघरै*।
बंकनाल चलै बिस्वा बीस ॥ २ ॥
मन मैदा माहीं कर चालो।
चोकर तजि दो पाँच पचीस ॥ ३ ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो।
आपुइ आय मिलैं जगदीस ॥ ४ ॥

*जो चाहै सो। †चक्की में जो पीछे से थोड़ा सा अन्न रह जाता है उसे चोकर या कोई अनाज डाल कर और चक्की को तेज़ चलाकर साफ़ कर लेते हैं।

॥ शब्द २६ ॥

तुम जाइ अजोरे बिछावो, अँधेरे में का करिहो॥ टेक ॥
जब लग स्वाँसा दीप जरतु है, जैसे बनै तो बनावो ॥१॥
गुन के पलंग ज्ञान के तोसक, सूरति तकिया लागावो ॥२॥
जो सुख चाहो सो सतमहले*, बहुरि दुक्ख नहिं पावो ॥३॥
दास कबीर गुरु सेज सँवारो, उन की नारि कहावो ॥४॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, आवा गवन मिटावो ॥५॥

॥ शब्द २७ ॥

कहै कोइ लाखों, करैया कोइ और है ॥ टेक ॥
कंसा कहै बसुदेव को निरबंस करौं† ।
रुक्मा कहै सिसुपाल के सिर मौर है‡ ॥ १ ॥

---

*परम और अबिनाशी सुख सातवें लोक में पहुंचे बिना नहीं प्राप्त हो सकता ।

†राजा कंस से नारद मुनि ने कहा था कि अपने बहनोई वासुदेव जी की किसी औलाद के हाथ से तुम मारे जाओगे इस लिये वह अपनी बहिन की सब औलाद को ज्योंही उत्पन्न हुई मारता गया केवल आठवीं औलाद श्रीकृष्ण अचरज रीति से बच गये जिन्हो ने बाल अवस्थाही में अपने मामा कंस का बध किया ।

‡जय विजय बैकुंठ के द्वारपाल थे जिन्हो ने सनकादिक को एक समय में बैकुंठ के द्वारे पर रोक दिया । इस पर सनकादिक ने सराप दिया जिस के प्रभाव से उन दोनों ने पहिले हिरण्याक्ष और हिरण्यकश्यप का चोला पाया, दूसरे जन्म में रावन और कुंभकरन हुए और तीसरे जन्म में शिशुपाल और दन्तवक्र ।

रुक्मिनी जी के भाई रुक्म ने अपने बल के घमंड में अपनी बहिन और पिता की इच्छा के विरुद्ध रुक्मिनी जी का ब्याह राजा शिशुपाल से ठहराया । जब बरात आई श्रीकृश्न ने रुक्म शिशुपाल और दूसरे सूर बीर राजाओं का घमंड तोड़ने और अपने भक्त रुक्मिनी जी और उन के पिता की मनोकामना पूरी करने के हेतु रुक्मिनी को हर कर अपने साथ ब्याह कर लिया । कुछ काल पीछे शिशुपाल और रुक्म दोनों भिन्न २ अवसर पर श्रीकृश्न के हाथ से मारे गये ।

रावना* कहै मैं तो जम को भी मार डारौं ।
मेघनाथ कहै अपार बल मोर है* ॥ २ ॥
कासिपा कहै पहलाद को मैं मारि डारौं† ।
देखो मेरे भाई याही मेरो कौल है ॥ ३ ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो ।
भक्त-बछल सतनाम माहीं ठौर है ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३८ ॥

नागिन ने पैदा किया नागिन डँसि खाया ।
कोइ कोइ जन भागत भये गुरु सरन तकाया ॥१॥
सृंगी रिषि‡ भागत भये बन माँ बसे जाई ।
आगे नागिन गाँसि के वोहीं डंसि खाई ॥ २ ॥
नेजाधारी सिव बड़े भागे कैलासा ।
जोति रूप परगट भई परवत परकासा ॥ ३ ॥
सुर नर मुनि जोगी जती कोइ बचन न पाया ।
नाम तेल ढूंढ़े नहीं कच्चे धरि खाया ॥ ४ ॥

*रावन लंका का राजा और मेघनाद उसका बेटा दोनों भारी जोधा थे अंत को रावन श्रीरामचन्द्र और मेघनाद लछमन जी के हाथ से मारे गये ।

†हिरण्यकश्यप बड़ा ईश्वर-द्रोही था और अपने भगवत-भक्त बेटे प्रह्लाद को भक्ति के अपराध से मार डालने पर तत्पर था । ईश्वर ने नरसिंहावतार धर कर अपने नख से हिरण्यकश्यप का पेट फाड़ कर उस का बध किया ।

‡सृंगी ऋषि की कथा मिश्रित अंग के आखिर शब्द की पहली कड़ी के नोट में देखिये ।

नागिन डरपै संत से उहवाँ नहिं जावै ।
कहैं कबीर गुर मंत्र से आपे मरि जावै ॥ ५ ॥

॥ शब्द २९ ॥

पानी बिच मीन पियासी। मोहिं सुनि सुनि आवत हाँसी। टे०
... से तू धर्म करतु है, क्या मथुरा क्या कासी ॥१॥
... में वस्तु भरी नहिं सूझै, बाहर खोजन जासी ॥२॥
मृग ... नाभि में हैं कस्तूरी, बन बन खोजत बासी ॥३॥
... कबीर सुनो भाई साधो, सहज मिलै अबिनासी ॥४॥

॥ शब्द ३० ॥

अवधू निरंजन जाल पसारा ॥ टेक ॥
स्वर्ग पताल जीव मृत-मंडल, तीन लोक बिस्तारा ।
ब्रह्मा बिस्नु सिव प्रगट कियो है, ताहि दियो सिर भारा १
ठाँव ठाँव तीरथ ब्रत थाप्यो, ठगने को संसारा ।
माया मोह कठिन बिस्तारा, आपु भयो करतारा ॥२॥
सतगुरु सब्द को चीन्हत नाहीं, कैसे होय उधारा ।
जारि भूंजि कोइला करि डारै, फिरि फिरि लै अवतारा ॥३॥
अमर लोक जहँ पुरुस बिराजे, तिन का मूँदा द्वारा ।
जिन साहब से भये निरंजन, सो तो पुरुष है न्यारा ॥ ४ ॥
कठिन काल तें बाचा चाहो, गहो सब्द टकसारा ।
कहैं कबीर अमर करि राखौं, मानो सब्द हमारा ॥५॥

॥ शब्द ३१ ॥

चंदा झलकै यहि घट माहीं। अंधी आँखन सूझै नाहीं १
यहि घट चंदा यहि घट सूर। यहि घट गाजै अनहद तूर ॥२॥

*सुगंधि ।

यहि घट बाजै तबल निसान। बहिरा सब्द सुनै नहिं कान३
जब लग मेरी मेरी करै। तब लग काज न एकौ सरै।४॥
जब मेरी ममता मरि जाय। तब प्रभु काज सँवारैं आय५
जबलगसिंघरहैबनमाँहिं। तब लग वह बन फूलै नाहिं६
उलट स्यार सिंघ को खाय। उकिठा*बन फूलै हरियाय७
ज्ञान के कारन करम कमाय। होय ज्ञान तब करम नसाय८
फल कारन फूलै बनराय। फल लागे पर फूल सुखाय॥९॥
मिरग पास कस्तूरी बास। आपु न खोजै खोजै घास॥१०॥
पारै पिंड† मीन लै खाई। कहैं कबीर लोग बौराई॥११॥

॥ शब्द ३२ ॥

सुनता नहीं धुन की खबर अनहद का बाजा बाजता।
रसमंद मंदिर बाजता बाहर सुने तो क्या हुआ ॥१॥
गाँजा अफीम और पोसता भाँग और सराबैं पीवता।
इक प्रेम रस चाखा नहीं अमली हुआ तो क्या हुआ ॥२॥
कासी गया और द्वारिका तीरथ सकल भरमत फिरै।
गाँठी न खोली कपट की तीरथ गया तो क्या हुआ ॥३॥
पोथी किताबैं बाँचता औरों को नित समुझावता।
त्रिकुटी महल खोजै नहीं बक बक मरा तो क्या हुआ ॥४॥
काजी किताबैं खोजता करता नसीहत और को।
महरम नहीं उस हाल से काजी हुआ तो क्या हुआ ॥५॥
सतरंज चौपड़ गंजिफा इक नर्द है बदरंग की।
बाजी न लाई प्रेम की खेला जुआ तो क्या हुआ ॥६॥

*सूखा। †पिंडा।

जोगी दिगम्बर सेवड़ा कपड़ा रँगे रँग लाल से।
वाक़िफ़ नहीं उस रंग से कपड़ा रँगे से क्या हुआ ॥७॥
मंदिर झरोखे रावटी गुल चमन में रहते सदा।
कहते कबीरा हैं सही घट घट में साहब रमि रहा ॥८॥

॥ शब्द ३३ ॥

जोगिया खेलियो बचाय के, नारि नैन चलैं बान ॥टेक॥
शृंगी* की भिंगी करि डारी, गोरख† के लिपटान ॥१॥
कामदेव महादेव* सतावै, कहा कहा करौं बखान ॥२॥

*शृंगी ऋषि और महादेव जी को जिस २ प्रकार से माया ने छला वह कथायें मिश्रित अंग के आखिर शब्द की पहली और चौथी कड़ियों में लिखी हैं।

†कहते हैं कि गोरखनाथ जोगी बन में तपस्या करते थे। एक रोज़ माया स्त्री का रूप धारन करके उनके पास आई और कहा मेरे पति को जंगल में शेर खा गया अब मैं अकेली बन में डरती हूं दया करके रात को यहाँ रहने दो सुबह को मैं चली जाऊँगी। उन्हों ने कहा अच्छा और एक कोठरी में किवाड़ भीतर से बंद कराके बैठा दिया और कह दिया कि अगर मैं भी आकर कहूं कि खोलो तौ भी किवाड़ मत खोलना। उसने कहा अच्छा—ऋषिजी बैठे भजन करने तो ध्यान में वह स्त्री सनमुख आने लगी उसका नक़्श हृदय पर पड़ गया था बार बार उसी का रूप नज़राई पड़ने लगा, भजन से उठ बैठे, आवाज़ दी कुंडी खोलो। उसने कहा हम नहीं खोलेंगे तुमने मना किया था। फिर बेचारे ऐसे काम बस हो गये कि छत तोड़के कोठे में कूद पड़े। दूसरे रोज़ नदी के पार उसको कंधे पर बैठा कर ले जाना पड़ा। उसने खूब एड़ लगाई और कहा बड़ा सरकश घोड़ा था इसके लिये मैंने लोहे की लगाम बनवाई थी यह तो काबू नहीं आता था अब देखो मैं उसके सिर पर सवार हूं। गुरु जी के होश आया तब माया रूपी स्त्री को छोड़ के भागे।

आसन छोड़ि मुछंदर* भागे, जल माँ मीन समान ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, गुरु चरनन लिपटान ॥४॥

॥ शब्द ३४ ॥

तेरे गवने का दिन नगिचाना, सोहागिनि चेत करौ री ।टेक॥
बालापन तन खेल गँवायौ, तरुनै चाल कुचाल ।
का उत्तर देइहौ रे सजनी, पिय पूछै जब हाल ।
समुझ मन का करिहौ री ॥ १ ॥
भवसागर औगाध भँवरवा सूझै वार न पार ।
केहि बिधि पार उतरबौ सजनी, नहिं खेवट नहिं नाव ।
खेवैया बिन का करिहौ री ॥ २ ॥
सील सुमति की चुनरी पहिरो, सत मति रंग रँगाय ।
ज्ञान तेल सों माँग सँवारौ, निर्भय सेंदुर लाय ।
कपट पट खोल धरौ री ॥ ३ ॥

* मुछन्दरनाथ का ज़िक्र है कि एक रोज़ किसी ने कहा कि राज्य का रस और आनन्द बड़ा मीठा है मुछन्दरनाथ बोले अच्छा तजरबा करना चाहिये। जोगी गति तो थी ही दूसरी देह में अपने जीव को प्रवेश करने की सामरथ रखते थे, एक राजा मरता था उसकी देह मे प्रवेश किया और अपने चेले गोरखनाथ को कह दिया कि भोग बिलास में अगर हम भूल जावैं तो तुम यह मंत्र आके पढ़ना। राजा जो मरता था उठ खड़ा हुआ, रानी सब खुश हुईं। एक बरस उनके संग भोग बिलास किया मगर ख़ौफ़ था कि किसी वक़्त गोरखनाथ आ जावगा इस लिये हुक्म दिया कि कोई कनफटा जोगी शहर में न आने पावे। राग सुनने का राजा को बड़ा शौक़ था इस लिये गोरखनाथ गाना बजाना सीख कर गाने वालों के संग दरबार मे गये और जब मंत्र पढ़ा तब मुछन्दरनाथ को होश आया—फिर अपने पुराने चोले मे आगये।

पिय घर चेत करो री सजनी, नैहर नाहिं निबाह।
नैहर नाम कहा ले करिहौ, मरिहौ भर्म भुलाय।
पुरुष बिन का करिहौ री ॥ ४ ॥
सासुर सत्त सब्द निर्बानी, त्रिकुटी संगम ध्यान।
झिलमिल जोत जहं निसु दिन झलकै, तीन बसै इक ठाम।
सुरत दे निरत करो री ॥ ५ ॥
कहैं कबीर सोई सतवंती, पिय के रंग रंगाय।
अमर लोक हाथे करि लेइ हैं, तेरो सोहाग सोहाय।
महल बिसराम करो री ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३५ ॥

हंसा हंस मिले सुख होई ॥ टेक ॥
इहां तो पाँनी है बगुलन की कदर न जानै कोई ॥१॥
जो हंसा तोरे प्यास छीर की कूप नीर नहिं होई।
यह तो नीर सकल ममता को हंस तजा जस धोई* ॥ २ ॥
षट दरसन पाखंड छानवे भेष धरे सब कोई।
चार बरन औ बेद किताबैं हंस निराला होई ॥ ३ ॥
यह जम तीन लोक को राजा बाँधे अस्त्र सँजोई†।
सब्द जीत चलो हंस हमारे तब जम रहि है रोई ॥४॥
कहैं कबीर परतीत मान ले जिव नहिं जाय बिगोई।
लै बैठारौं अमर लोक में आवा गवन न होई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३६ ॥

माया महा ठगनी हम जानी ॥ टेक ॥
निरगुन फाँसि लिये कर डोलै बोलै मधुरी बानी ॥ १ ॥

*धोकर। †हथियार को ठीक करके।

केसव के कमला होइ बैठी सिव के भवन भवानी ॥ २ ॥
पंडा के मूरत होइ बैठी तीरथ हूं में पानी ॥ ३ ॥
जोगी के जोगिन होइ बैठी राजा के घर रानी ॥ ४ ॥
काहू के हीरा होइ बैठी काहू के कौड़ी कानी ॥ ५ ॥
भक्तन के भक्तिन होय बैठी ब्रह्मा के ब्रह्मानी ॥ ६ ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो यह सब अकथ कहानी ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३७ ॥

अवधू अमल करै सो पावै ।
जौं लग अमल असर ना होवै तौं लग प्रेम न आवै ॥ टेक ॥
बिन खाये फल स्वाद बखानै कहत न सोभा पावै ।
बिन गुरु ज्ञान गाँठि के हीने नाहक वस्तु मुलावै ॥१॥
आँधर हाथ लेय कर दीपक करि परकास दिखावै ।
औरन आगे करै चाँदना आपु अँधेरे धावै ॥ २ ॥
आँधर आप आँधर दस गोहने* जग में गुरू कहावै ।
मूल महल की खबर न जानै औरन को भरमावै ॥ ३ ॥
ले अमृत मूरख रँड सींचै कलप-बृच्छ बिसरावै ।
लैके बीज ऊसर में बोवै पाहन पानी नावै† ॥ ४ ॥
लागी आग जरै घर आपन मूरख घूर बुतावै‡ ।
पढ़ा गुना जो पंडित भूलै वाको को समुझावै ॥५॥
कहैं कबीर सुनो हो गोरख यह संतन नाहिं भावै ।
है कोई सूर पूर जग माहीं जो यह पद अर्थावै ॥ ६ ॥

*साथ में । †पत्थर की मूरत पर पानी चढ़ाता है । ‡घर में आग लगी है और घूर पर पानी डालता है ।

॥ शब्द ३८ ॥

तन घर सुखिया कोई न देखा जो देखा सो दुखिया हो।
उदय अस्त की बात कहतु हैं सब का किया विवेका हो ॥१॥
घाटे बाढ़े सब जग दुखिया क्या गिरही बैरागी हो।
सुकदेव अचारज दुख के डर से गर्भ से माया त्यागी हो* ॥२॥
जोगी दुखिया जंगम दुखिया तपसी को दुख दूना हो।
आसा तृस्ना सब को ब्यापे कोई महल न सूना हो॥ ३ ॥
सांच कहों तो कोई न माने झूठ कहा नहिं जाई हो।
ब्रह्मा बिस्नु महेसुर दुखिया जिन यह राह चलाई हो ॥४॥
अवधू दुखिया भूपति दुखिया रंक दुखी बिपरीती हो।
कहैं कबीर सकल जग दुखिया संत सुखी मन जीती हो॥५॥

॥ शब्द ३९ ॥

मानुष जनम सुधारो साधो धोखे काहे बिगाड़ो हो।
ऐसा समय बहुर नहिं पैहो जनम जुआ मति हारो हो ॥१॥
गुड़ा गुड़ी खियाल जिन भूलो मूल तत्त लौ लाओ हो।
जब लग घट सों परिचे नाहीं तब लग कछु नहिं पाओ हो २
तीरथ ब्रत और जप तप संजम या करनी मत भूलो हो।
करम फंद में जुग जुग पड़िहो फिर फिर जोनि में झूलो हो॥३
ना कछु न्हाया ना कछु धोया ना कछु घंट बजाया हो।
ना कछु नेती ना कछु धोती ना कछु नाचा गाया हो ॥४॥
सिंगी+ सेल्ही+ भभूत औ बटुआ साँईं स्वाँग से न्यारा हो।
कहैं कबीर मुक्ति जो चाहो मानो सब्द हमारा हो ॥५॥

*सुकदेव मुनि जो बारह बरस गर्भ में रहे पैदा होते ही जंगल को संसार के भय से भागे। +सिंगी मुंह से बजाने का बाजा और सेल्ही नाम साधुओं के पहिरने की सेल्ही का है।

॥ शब्द ४० ॥

जिन के नाम ना है हिये ॥ टेक ॥

क्या होवै गल माला डाले, कहा सुमिरनी लिये ॥१॥
क्या होवै पुस्तक के बाँचे, कहा संख धुन दिये ॥२॥
क्या होवै कासी में बसि के, क्या गंगा जल पिये ॥३॥
होवै कहा बरत के राखे, कहा तिलक सिर दिये ॥४॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, जाता है जम लिये ॥५॥

॥ शब्द ४१ ॥

साधो पाँड़े निपुन कसाई ॥ टेक ॥

बकरी मारि भेड़ि को धाये, दिल में दरद न आई ॥१॥
करि अस्नान तिलक दै बैठे, बिधि सों देवि पुजाई ॥२॥
आतम मारि पलक में बिनसे, रूधिर की नदी बहाई ॥३॥
अति पुनीत ऊँचे कुल कहिये, सभा माहिं अधिकाई ॥४॥
इन से दिच्छा[1] सब कोइ माँगे, हँसी आवै मोहिं भाई ॥५॥
पाप कटन को कथा सुनावैं, करम करावैं नीचा ॥६॥
बूड़त दोऊ परस्पर दीखे, गहे बाँहि जम खींचा ॥७॥
गाय बधै सो तुरुक कहावै, यह क्या इन से छोटे ॥८॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, कलि में ब्राह्मन खोटे ॥९॥

॥ शब्द ४२ ॥

को सिखवै अधमन को ज्ञाना ॥ टेक ॥

साध की संगत कबहुं न कीन्हो, रटत रटत जग जन्म सिराना[2] १
दया धर्म कबहूं नहिं चीन्हा, नहिं गुरु सब्द समाना ॥२॥

[1] मंत्र। [2] बीता।

—ं—के ऐसा राखे, साधू आय तो नहिं घर दाना ॥३॥
—े —ी—न जमपुर जैहे, मारहि मार उठै घमसाना ।४।

॥ शब्द ४३ ॥

—ि— —— कोइ करै भरमना ना टरै,
—— जजाल दुख दुन्द भारी ॥ १ ॥
——— े जाल में जक्त सब फँसि रहा,
—ग की डोरि जम देत डारी ॥ २ ॥
—न सूझै नहीं शब्द बूझै नहीं,
—— ओला नहीं गर्ब धारी ॥ ३ ॥
—न —े नहीं भर्म पूजत फिरै,
हिये के नैन क्यों फोरि डारी ॥ ४ ॥
—ि— —— जीव धरि थाप निरजीव को,
जीव के हतन अपराध भारी ॥ ५ ॥
—ीव का दर्द बेदर्द कसके नहीं,
जीभ के स्वाद नित जीव मारी ॥ ६ ॥
एक पग ठाढ़ कर जोर विनती करै,
—— —— जाउं सरन तिहारी ॥ ७ ॥
वहाँ कछु है नहीं अरज अंधा करै,
कठिन इंडौन नहिं टरत टारो ॥ ८ ॥
यही आकर्म[1] से नर्क पापी पड़ै,
करम चंडाल की राह न्यारी ॥ ९ ॥
धन्य सौभाग जिन साध संगत करी,
ज्ञान की दृष्टि लीजे विचारी ॥ १० ॥

[1] कुकर्म ।

सत्त दावा गहौ आपु निर्भय रहौ ।
    आपु को चीन्हि लखु नाम सारी ॥११॥
कहैं कब्बीर तू सत्त पर नजर कर ।
    बोलता ब्रह्म सब घट उजारी ॥ १२ ॥

॥ शब्द ४४ ॥

करो रे मन वा दिन की ततबीर* ॥ टेक ॥
जब जमराजा आनि पड़ैंगे नेक धरत नहिं धीर ॥१॥
मुंगरिन मारि के प्रान निकासत नैनन भरि आयो नीर॥२॥
भवसागर इक अगम पंथ है नदिया वहत गँभीर ॥३॥
नाव न बेड़ा लोग घनेरा खेवट है बेपीर ॥४॥
घर तिरिया अरधंगी बैठी मातु पिता सुत बीर ॥५॥
माल मुलुक की कौन चलावै संग न जात सरीर ॥६॥
लै कै बोरत नरक कुंड में व्याकुल होत सरीर ॥७॥
कहत कबीर नर अब से चेतो माफ होय तकसीर ॥८॥

॥ शब्द ४५ ॥

सुख सिंध की सैर का स्वाद तब पाइ है चाह का
    चौतरा भूलि जावै ।
बीज के माहिं ज्यों वृच्छ विस्तार यों चाह के माहिं
    सब रोग आवै ॥१॥
दृढ़ वैराग में होय आरूढ़ मन चाह के चौतरे आग दीजै।
कहैं कब्बीर यों होय निरबासना तत्त सों रत्त होय
    काज कीजै ॥२॥

*तदबीर ।

॥ शब्द ४६ ॥

साधो भाई जीवत ही करो आसा ॥ टेक ॥
जीवत समुझे जीवत बूझे जीवत मुक्ति निवासा ।
जियत करम की फाँसि न काटी मुए मुक्ति की आसा॥१॥
तन छूटे जिव मिलन कहतु है सो सब झूठी आसा ।
अबहुं मिला सो तबहुं मिलैगा नहिं तो जमपुर बासा॥२॥
दूर दूर ढूंढ़े मन लोभी मिटै न गर्भ तरासा ।
साध संत की करे न बंदगी कटै करम की फाँसा ॥३॥
सत्त गहै सतगुरु को चीन्है सत्त नाम बिस्वासा ।
कहैं कबीर साधन हितकारी हम साधन के दासा ॥४॥

॥ शब्द ४७ ॥

आगे समुझि परैगा भाई ॥टेक॥
यहाँ अहार उद्र भर खायो बहु बिधि मास बढ़ाई॥१॥
जीव जन्तु रस मार खातु हौ तनिक दरद नहिं आई ॥२॥
यहँ तो परधन लूटि खातु हौ गल बिच फाँसि लगाई ॥३॥
तिन के पीछे तीन पियादा छिन छिन खबर लगाई ॥४॥
साध संत की निंदा कीन्ही आपन जनम नसाई ॥५॥
परग परग पर काँटा घसिहै यह फल आगे आई ॥६॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो दुनियाँ है दुचिताई ॥७॥
साँच कहै तो मारा जावै झूठे जग पतियाई ॥८॥

॥ शब्द ४८ ॥

रहना नहिं देस बिराना है ॥ टेक ॥
यह संसार कागद की पुड़िया बूंद पड़े घुल जाना है॥१॥

यह संसार काँट की भाड़ी उलझ पुलझ मरि जाना है ॥२॥
यह संसार झाड़ औ झाँखर आग लगे बरि जाना है ॥३॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो सतगुरु नाम ठिकाना है॥४॥

॥ शब्द ४९ ॥

बागों ना जा रे ना जा तेरे काया में गुलजार ॥टेक॥
करनी क्यारी बोइ कर रहनी करु रखवार।
दुर्मति काग उड़ाइ के देखै अजब बहार ॥१॥
मन माली परबोधिये करि संजम की बार।
दया पौद सूखै नहीं छिमा सींच जल ढार ॥२॥
गुल औ चमन के बीच में फूला अजब गुलाब।
मुक्ति कली सतमाल की पहिरु गूंथि गल हार ॥३॥
अष्ट कमल से ऊपजै लीला अगम अपार।
कहैं कबीर चित चेत के आवागवन निवार ॥४॥

॥ शब्द ५० ॥

सुमिरन बिन गोता खावोगे ॥टेक॥
मुट्ठी बाँधे गर्भ से आये हाथ पसारे जावोगे ॥१॥
जैसे मोती परत ओस के बेर भये झरि जावोगे ॥२॥
जैसे हाट लगावै हटवा* सौदा बिन पछितावोगे ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो सौदा लेकर जावोगे ॥४॥

॥ शब्द ५१ ॥

अरे मन समुझ के लादु लदनियाँ ॥टेक॥
काहेक टटुवा काहेक पाखर काहेक भरी गौनियाँ ॥१॥

*दुकानदार।

मन के हुआ सुरति के पाखर पुन्न पाप भरीं गोनियाँ ॥२॥
— — लोग जगाती लागे छीन लेयँ करधनियाँ ॥३॥
— — तो यहीं करु भाई आगे हाट न बनियाँ ॥४॥
पानी पी तो यहीं पी भाई आगे देस निपनियाँ ॥५॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो सत्त नाम का बनियाँ ॥६॥

॥ शब्द ५२ ॥

निदाने मन भजन बिना दुख पैहौ ॥ टेक ॥
पहिला जनम भूत का पैहौ सात जनम पछितैहौ ।
— पर ले पानी पैहौ प्यासन ही मरि जैहौ ॥१ ॥
दूजे जनम सुवा का पैहौ बाग बसेरा लैहौ ।
टूटे पंख बाज मँडराने अधफड़ प्रान गँवैहौ ॥२॥
बाजीगर के बानर होइहौ लकड़िन नाच नचैहौ ।
ऊँच नीच से हाथ पसरिहौ माँगे भीख न पैहौ ॥३॥
तेली के घर बैला होइहौ आँखिन ढाँप ढँपै हौ ।
कोस पचास घरै में चलिहौ बाहर होन न पैहौ ॥३॥
पँचवाँ जनम ऊँट के पैहौ बिन तौले बोझ लदैहौ ।
बैठे से तो उठै न पैहौ घुरच घुरच मरि जैहौ ॥४॥
धोबी घर के गदहा होइहौ कटी घास ना पैहौ ।
लादी लादि आपु चढ़ि बैठै लै घाटै पहुंचैहौ ॥६॥
पंछी माँ तो कौवा होइहौ करर करर गुहरैहौ ।
उड़ि के जाइ मैला पर बैठौ गहिरे चोंच लगैहौ ॥७॥
सत्तनाम की टेर न करिहौ मनहीं मन पछितैहौ ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो नरक निसानी पैहौ ॥८॥

॥ शब्द ५३ ॥

माल जिन्हों ने जमा किया सौदा परिहारे* जाते हैं ।टेक।
ऊँचा नीचा महल बनाया जा बैठे चौवारे हैं ।
सुबह तलक तो जागे रहना नाम पुकारे जाते हैं ॥१॥
जग के रस्ते मत चल प्यारे ठग या पार घनेरे हैं ।
इस नगरी के बीच मुसाफिर अक्सर मारे जाते हैं ॥२॥
भाई बंध और कुटुंब कबीला सब ठग ठग के खाते हैं ।
आया जम जब दिया नगारा साफ अलग हो जाते हैं ३
जोरू कौन खसम है किसका कौन किसी के नाते हैं ।
कहैं कबीर जो बँदगी गाफिल काल उन्हीं को खाते हैं ४

॥ शब्द ५४ ॥

साधो यह तन ठाठ तँबूरे का ॥ टेक ॥
ऐंचत तार मरोरत खूंटी, निकसत राग हजूरे का ॥१॥
टूटे तार बिखरि गईं खूंटी. हो गया धूरम धूरे का॥२॥
या देही को गर्व न कीजै, उड़ि गया हंस तँबूरे का॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, अगम पंथ कोइ सूरे का ४

॥ शब्द ५५ ॥

नैहर में दाग लगाय आइ चुनरी॥ टेक ॥
ऊ रँगरेजवा कै मरम न जानै.
नहिं मिलै धोबिया कौन करै उजरी ॥ १ ॥
तन कै कूंड़ी ज्ञान कै सौंदन,
साबुन महँग बिकाय या नगरी ॥ २ ॥

*टोहना।

पहिरि ओढ़ि के चली ससुररिया,
गौंवाँ के लोग कहैं बड़ी फुहरी ॥ ३ ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो,
बिन सतगुरु कबहूं नहिं सुधरी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५६ ॥

अरे इन दूहुन राह न पाई ॥ टेक ॥
हिंदू अपनी करे बड़ाई गागर छुवन न देई ।
बेस्या के पायन तर सोवै यह देखो हिंदुआई ॥ १ ॥
मुसलमान के पीर औलिया मुर्गी मुर्गा खाई ।
खाला केरी बेटी ब्याहै घरहिं में करै सगाई ॥ २ ॥
बाहर से इक मुर्दा लाये धोय धाय चढ़वाई ।
सब सखियाँ मिलि जेंवन बैठीं घर भर करै बड़ाई ॥३॥
हिंदुन की हिंदुवाई देखी तुरकन की तुरकाई ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो कौन राह ह्वै जाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५७ ॥

सिपाही मन दूर खेलन मत जाव ॥ टेक ॥
दूर खेलन से मनुआँ दुखित होय, गगन मँडल मठ छाव।१।
यहि पार गंगा वाहि पार जमुना, बीच सरसुती न्हाव ॥२॥
पाँच को मारि पचीस को वस करि, तीन को पकरि मँगाव ३
कहैं कबीरा धरमदास से, सब्द में सुरत लगाव ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५८ ॥

डर लागै और हाँसी आवै, अजब जमाना आया रे॥टेक॥
धन दौलत लै माल खजाना, बेस्या नाच नचाया रे ॥
मुट्ठी अन्न साध कोइ माँगै, कहैं नाज नहिं आया रे ॥१॥

कथा होय तहँ स्रोता सोवैं, वक्ता मूड़ पचाया रे ॥
होय जहाँ कहिं स्वाँग तमासा, तनिक न नींद सताया रे २
भंग तमाखू सुलफा गाँजा, सूखा खूब उड़ाया रे ।
गुरु चरनामृत नेम न धारै, मधुवा* चाखन आया रे ॥३॥
उलटी चलन चली दुनियाँ में, ता तें जिया घबराया रे ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, फिर पाछे पछितायां रे ॥४॥

॥ शब्द ५९ ॥

अवधू भजन भेद है न्यारा ॥ टेक ॥
क्या गाये क्या लिखि बतलाये क्या भर्मे संसारा ।
क्या संध्या तर्पन के कीन्हे जो नहिं तत्त बिचारा ॥१॥
मूड़ मुड़ाये सिर जटा रखाये क्या तन लाये छारा† ।
क्या पूजा पाहन की कीन्हे क्या फल किये अहारा ॥२॥
बिन परिचे साहिब हो बैठे बिषय करैं ब्योपारा ।
ज्ञान ध्यान का मर्म न जानै वाद‡ करै अहंकारा ॥३॥
अगम अथाह महा अति गहिरा बीज न खेत निवारा§ ।
महा सो ध्यान मगन ह्वै बैठे काट करम की छारा ॥४॥
जिनके सदा अहार अंतर में केवल तत्त बिचारा ।
कहैं कबीर सुनो हो गोरख तारौं सहित परिवारा ॥ ५ ॥

*शराब । †राख । ‡झगड़ा । §इन डिंभी भेषों ने भजन भेद रूपी बीज को जो अगम अथाह और महा गहिरा है अपने हृदय-रूपी खेत में नहीं बोया; जिन सच्चे भक्तों ने उसे गहा अर्थात् सधा वह कर्म की मैल को काट कर ध्यान में मगन हो बैठे ।

॥ शब्द ६० ॥

अवधू अच्छरहूं सों न्यारा ॥ टेक ॥

जो तुम पवना गगन चढ़ावो करो गुफा में वासा ।
गगना पवना दोनों बिनसें कहँ गयो जोग तुम्हारा ॥१॥
गगना मद्धे जोती झलके पानी मद्धे तारा ।
घटि गे नीर बिनसि गे तारा निकर गयो केहि द्वारा ॥२॥
मेरु डंड पर डारि दुलैची* जोगिन तारी लाया ।
सोई सरीर पर खाक उड़ानी कच्चा जोग कमाया ॥३॥
इंगला बिनसे पिंगला बिनसे बिनसे सुखमनि नाड़ी ।
जब उनमुनि की तारी टूटै तब कहँ रही तुम्हारी ॥४॥
अद्भुत बैराग [illegible] है भाई अटके मुनिवर जोगी ।
अच्छर लों का गम्म बतावे सो है मुक्ति बिरोगी ॥५॥
कह अरु अकह दोऊ तें न्यारा सत्त असत्त के पारा ।
कहैं कबीर ताहि लखि जोगी उतरि जाव भवपारा ॥६॥

॥ शब्द ६१ ॥

जब से खबरदार रहो भाई ॥ टेक ॥

सतगुरु दीन्हा माल खजाना राखो जुगत लगाई ।
पाव रती घटने नहिं पावे दिन दिन बढ़ै सवाई ॥१॥
छिमा सील की अलफी† पहिनै जुगति लँगोट लगाई ।
दया की टोपी सिर पर दैके और अधिक बनि आई ॥२॥
साधु पाय गाफिल मत रहना निसि दिन करो कमाई ।
घट के भीतर चोर लगतु हैं बैठे घात लगाई ॥ ३ ॥

*दुर्री आसन । †साधुओं का वस्त्र बिना बँहोली का ।

तन बंदूक सुमति का सिंगरा प्रीति का गज ठहकाई ।
सुरति पलीता हर दम सुलगै वस्त पर राखु चढ़ाई ॥४॥
बाहर वाला खड़ा सिपाही ज्ञान गम्म अधिकाई ।
साहब कबीर आदि के अदली हर दम लेत जगाई ॥५॥

॥ शब्द ६२ ॥

साधो देखो जग बौराना ।
साँचि कहौ तौ मारन धावै झूठे जग पतियाना ॥टेक॥
हिन्दू कहत है राम हमारा मुसलमान रहमाना ।
आपस में दोउ लड़े मरतु हैं मरम कोइ नहिं जाना ॥१॥
बहुत मिले मोहिं नेमी धर्मी प्रात करैं असनाना ।
आतम छोड़ि पषानै पूजैं तिन का थोथा ज्ञाना ॥२॥
आसन मारि डिंभ धरि बैठे मन में बहुत गुमाना ।
पीतर पाथर पूजन लागे तीरथ बर्त भुलाना ॥ ३ ॥
माला पहिरे टोपी पहिरे छाप तिलक अनुमाना ।
साखी सब्दै गावत भूले आतम खबर न जाना ॥४॥
घर घर मंत्र जो देत फिरत हैं माया के अभिमाना ।
गुरुवा सहित सिष्य सब बूड़े अंतकाल पछिताना ॥५॥
बहुतक देखे पीर औलिया पढ़ैं किताब कुराना ।
करैं मुरीद कबर बतलावैं उनहूं खुदा न जाना ॥६॥
हिन्दू की दया मेहर तुरकन की दोनों घर से भागी ।
वह करैं जिबह वो झटका मारैं आग दोऊ घर लागी ॥७॥
या विधि हँसत चलत हैं हमको आप कहावैं स्याना ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो इन में कौन दिवाना ॥८॥

॥ शब्द ६३ ॥

तोरे जियरा बड़ा अंदेसवा मुसाफिर जैहो कौनी ओर ।टेक।
मोह का शहर कहर नर नारी दुइ फाटक घनघोर ।
कुमती नायक फाटक रोके परिहो कठिन झिंझोर ॥१॥
संशय नदी अगाड़ी बहती विषम धार जल जोर ।
मनुआ मल्लाह तुम गाफिल सोवो इहवाँ मोर औ तोर ॥२॥
निसि दिन प्रीति करो साहब से नाहिन कठिन कठोर ।
काम दिवान क्रोध है राजा बसैं पचीसो चोर ॥ ३ ॥
सत्त पुरुष इक बसैं पछिम दिस तासों करो निहोर ।
आवै दरद राह तोहि लावै तब पैहो निज ओर ॥ ४ ॥
उलटि पाछिलो पैंड़ा पकड़ो पसरा मना बटोर ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो तब पैहो निज ठौर ॥५॥

॥ शब्द ६४ ॥

क्या माँगों कछु थिर न रहाई, देखत नैन चल्यो जग जाई॥१
इक लख पूत सवालख नाती, जा रावन घर दिया न बाती२
लंका सा कोट समुद्र सी खाई, जा रावन की खबर न पाई३
सोने के महल रूपे के छाजा, छोड़ि चले नगरी के राजा ॥४॥
कोइ करै महल कोई करै टाटी, उड़ि जाय हंस पड़ी रहै माटी
आवत संग न जात संगाती, कहा भये दल बाँधे हाथी ॥६॥
कहै कबीर अंत की बारी, हाथ झारि ज्यों चला जुवारी ॥७॥

॥ शब्द ६५ ॥

पी ले प्याला हो मतवाला,
प्याला नाम अमी रस का रे ॥टेक॥

बालपना सब खेलि गँवाया,
तरुन भया नारी बस का रे ॥१॥
बिरध भया कफ बाय ने घेरा
खाट पड़ा न जाय खिसका रे ॥ २ ॥
नाभि कँवल बिच है कस्तूरी,
जैसे मिरग फिरै बन का रे ॥३॥
बिन सतगुरु इतना दुख पाया,
बैद मिले नहिं इस तन का रे ॥ ४ ॥
मातु पिता बंधू सुत तिरिया,
संग नहीं कोइ जाय सका रे ॥ ५ ॥
जब लग जीवै गुरु गुन गा ले,
धन जोबन है दिन दस का रे ॥ ६ ॥
चौरसी जो उबरा चाहै,
छोड़ु कामिनी का चसका रे ॥७॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो,
नख सिख पूर रहा बिष का रे ॥ ८ ॥

॥ शब्द ६६ ॥

लखै रे कोइ बिरला पद निरबान ॥ टेक ॥
तीन लोक में यह जम राजा,
चौथे लोक में नाम निसान ॥ १ ॥
याहि लखत इन्द्रादिक थकि गे,
ब्रह्मा थकि गे पढ़त पुरान ॥ २ ॥

गोरखदत्त वशिष्ट ब्यास मुनि,
सिम्भू थकि गे धरि धरि ध्यान ॥३॥
कहैं कबीर लखै कोइ बिरला,
जिन पायो सतगुरु कर ज्ञान ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६७ ॥

जारों मैं या जग की चतुराई ॥ टेक ॥
साँईं को नाम न कबहूं सुमिरै, जिन यह जुगति बताई ॥१॥
जोरत दाम काम अपने को, हम खैहैं लड़िका बिलसाई ॥२॥
सो धन चोर मूसि लै जावैं, रहा सहा लै जाय जमाई ॥३॥
यह माया जैसे कलवारिन, मद्य पिलाय राखै बौराई ॥४॥
इक तो पड़े धूरि में लोटैं, एक कहैं चोखी दे भाई ॥५॥
सुर नर मुनि माया छलि मारे, पीर पैगम्बर को धरि खाई ।६।
कोइ इक भाग बचे सतसंगति, हाथ मलै तिनको पछिताई॥७॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, लै फाँसी हमहूं को आई ॥८॥
गुरु की दया साध की संगति बचिगे अभय निसान बजाई ।९

॥ शब्द ६८ ॥

जियरा जावगे हम जानी ॥ टेक ॥
पाँच तत्त को बनो है पिंजरा जा में वस्तु बिरानी ।
आवत जावत कोइ न देख्यौ डूबि गयौ बिनु पानी ॥१॥
राजा जैहैं रानी जैहैं और जैहैं अभिमानी ।
जोग करंते जोगी जैहैं कथा सुनंते ज्ञानी ॥ २ ॥

पाप पुन्न की हाट लगी है धरम दंड दरवानी ।
पाँच सखी मिलि देखन आईं एक से एक सियानी ॥३॥
चंदो जैहैं सुरजौ जैहैं जैहैं पवन औ पानी ।
कहैं कबीर इक भक्त न जैहैं जिनकी मति ठहरानी ॥४॥

॥ शब्द ६९ ॥

मन तू क्यों भूला रे भाई । तेरी सुधि बुधि कहाँ हिराई १
जैसे पंछी रैन बसेरा बसै वृच्छ में आई ।
भोर भये सब आपु आपु को जहाँ तहाँ उड़ि जाई ॥२॥
सुपने में तोहि राज मिल्यो है हाकिम हुकम दुहाई ।
जागि पड़्यौ तब लाव न लसकर पलक खुले सुधि पाई३
मातु पिता बंधू सुत तिरिया ना कोइ सगो सगाई।
यह तो सब स्वारथ के संगी झूठी लोक बड़ाई ॥४॥
सागर माहीं लहर उठतु हैं गनिता गनी न जाई ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो दरिया लहर समाई ॥५॥

॥ शब्द ७० ॥

मानत नहिं मन मोरा साधो • मानत नहिं मन मोरा रे ।टेक
बार बार मैं कहि समझावौं, जग में जीवन थोरा रे ॥१॥
या काया कौ गर्ब न कीजै, क्या साँवर क्या गोरा रे ॥२॥
बिना भक्ति तन काम न आवै, कोटि सुगंधि चभोरा रे ॥३॥
या माया जिनि देखि रे भूलो, क्या हाथी क्या घोड़ा रे ॥४॥
जोरि जोरि धन बहुत बिगूचे, लाखन कोटि करोरा रे ॥५॥
दुबिधा दुरमति औ चतुराई, जनम गयो नर बौरा रे ॥६॥

अजहूं आनि मिलो सत संगति, सतगुरु मान निहोरा रे ॥७॥
तिन उलाड़ परत भुई गिरि गिरि, ज्यों बालक बिनकोराँ¹ रे ८
कहे कबीर चरन चित राखो, ज्यों सूई बिच डोरा रे ॥९॥

॥ शब्द ७१ ॥

अवधू माया तजी न जाई ॥ टेक ॥
गिरह तजि के वस्तर बाँधा वस्तर तजि के फेरी ।
लड़िका तजि के चेला कीन्हा तहुं मति माया घेरी ॥१॥
ऐसे बेल बाग में अरुभी माहिं रही अरुभाई ।
छोरे से वह छूटे नाहीं कोटिन करै उपाई ॥२॥
काम तजे तें क्रोध न जाई क्रोध तजे तें लोभा ।
लोभ तजे अहंकार न जाई मान बड़ाई सोभा ॥३॥
मन बैरागी माया त्यागी सब्द में सुरत समाई ।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो यह गम विरले पाई ॥४॥

॥ शब्द ७२ ॥

नाम भजा सोई जीता जग में, नाम भजा सोई जीता रे॥टेक
हाथ सुमिरिनी पेट कतरनी, पढ़ै भागवत गीता रे ।
हिरदय सुद्ध किया नहिं बौरे, कहत सुनत दिन बीता रे ॥१॥
आन देव की पुजा कीन्ही, गुरु से रहा अमीता रे ।
धन जोबन तेरा यहीं रहैगा, अंत समय चलि रीता रे ॥२॥
बावरिया ने बावर डारी, फंद जाल सब कीता रे ।
कहत कबीर काल आय खैहै, जैसे मृग को चीता रे ॥ ३ ॥

¹गोद ।

॥ शब्द ३३ ॥

दुलहिन अँगिया काहे न धोवाई ॥ टेक ॥

बालपने की मैली अँगिया बिषय दाग परि जाई ॥१॥
बिन धोये पिय रीझत नाहीं सेज से देत गिराई ॥२॥
सुमिरन ध्यान कै साबुन करि ले सत्तनाम दरियाई ॥३॥
दुबिधा के बँद खोल बहुरिया* मन कै मैल धोवाई ॥४॥
चेत करो तीनों पन बीते अब तो गवन नगिचाई ॥५॥
चालनहार द्वार हैं ठाढ़े अब काहे पछिताई ॥६॥
कहत कबीर सुनो री बहुरिया चित अंजन दे आई ॥७॥

॥ शब्द ३४ ॥

नाम सुमिरि पछितायगा ॥ टेक ॥

पापी जियरा लोभ करतु है आज काल उठि जायगा ॥१॥
लालच लागी जनम गँवाया माया भरम भुलायगा ॥२॥
धन जोबन का गर्ब न कीजै कागद ज्यों गलि जायगा ॥३॥
जब जम आय केस† गहि पटकै ता दिन कछु न बसायगा ४
सुमिरन भजन दया नहिं कीनी तो मुख चोटा‡ खायगा ५
धर्मराय जब लेखा माँगै क्या मुख लेके जायगा ॥६॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो साध संग तरि जायगा ॥७॥

॥ शब्द ३५ ॥

अभागा तुम ने नाम न जाना ॥ टेक ॥

करिके कौल उहाँ से आयौ इहवाँ भरम भुलाना ।
सत्त नाम बिसराय दियो है मोह मया लिपटाना ॥१॥

---

*दुलहिन । †बाल । ‡चोट ।

मात पिता सुत बंधु कुटुम्बी औ बहु माल खजाना ।
[illegible] जा जम ले चलिहै सब ही होय बिगाना ॥२॥
[illegible] फूल सेमर लखे सुगना लिपटाना ।
[illegible] सुगा कहैं उधियानी फिर पाछे पछिताना ॥३॥
[illegible] तोता पाइ के का करै गुमाना ।
[illegible] पानी के बुलबुला छिन माहिं बिलाना ॥४॥
[illegible] गुनो भाइ साधो देखो जग बौराना ।
[illegible] गये बहुरि नहिं आवो लहौ जो सत परवाना ॥५॥

॥ शब्द ७६ ॥

मोरी चुनरी में परि गयो दाग पिया ॥ टेक ॥
पाँच तत्त की बनी चुनरिया सोरह सै बँद लागे जिया ॥१॥
यह चुनरी मोरे मैके तें आई ससुरे में मनुवाँ खोय दिया ॥२॥
मलि मलि धोई दाग न छूटे ज्ञान को साबुन लाय पिया ॥३
कहैं कबीर दाग कब छुटि है जब साहब अपनाय लिया ॥४

॥ शब्द ७७ ॥

गुरु से लगन कठिन है भाई ।
लगन लगे बिन काज न सरिहै जीव प्रलय होइ जाई ॥टेक
जैसे पपिहा प्यासा बुंद का पिया पिया रटि लाई ।
प्यासे प्रान तलफ दिन राती और नीर ना भाई ॥२॥
जैसे मिरगा [illegible] सनेही सब्द सुनन को जाई ।
सब्द सुनै औ प्रान दान दे तनिको नाहिं डेराई ॥२॥

जैसे सती चढ़ी सत ऊपर पिय की राह मन भाई।
पावक देख डरे वह नाहीं हँसत बैठ सरा माईं ॥३॥
दो दल सन्मुख आन जुड़े हैं सूरा लेत लड़ाई।
टूक टूक होइ गिरे धरनि पर खेत छोड़ि नहिं जाई ॥४॥
छोड़ो तन अपने की आसा निर्भय है गुन गाई।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो नाहिं तो जनम नसाई ॥५॥

॥ शब्द १८ ॥

मेरा तेरा मनुआँ कैसे इक होइ रे ॥ टेक ॥
मैं कहता हौं आँखिन देखी, तू कहता कागद की लेखी।
मैं कहता सुरझावन हारी, तू राख्यो उरझाइ रे ॥ १ ॥
मैं कहता तू जागत रहियो, तू रहता है सोइ रे।
मैं कहता निर्मोही रहियो, तू जाना है मोहि रे ॥ २ ॥
जुगन जुगन समुझावत हारा, कही न मानत कोइ रे।
तू तो रंडी फिरै बिहंडी, सब धन हारे खोइ रे ॥ ३ ॥
सतगुरु धारा निर्मल बाहै, वा में काया धोइ रे।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, तब ही वैसा होइ रे ॥४॥

॥ शब्द १९ ॥

अवधू अंध कूप अँधियारा ॥ टेक ॥
या घट भीतर सात समुंदर याहि में नद्दी नारा ॥१॥
या घट भीतर कासी द्वारिका याहि में ठाकुरद्वारा ॥२॥

या घट भीतर चंद्र सूर है याहि में नौलख तारा ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो याहि में सत करतारा ॥४॥

॥ शब्द ८० ॥

जाग री मेरी सुरत सोहागिन जाग री ॥टेक॥
क्या तुम सोवत मोह नींद में उठि के भजनियाँ में लाग री ॥१॥
चित से शब्द सुनो सरवन दै उठत मधुर धुन राग री ॥२॥
दोउ कर जोरि शीश चरनन दै भक्ति अचल वर माँग री ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो जगत पीठ दै भाग री ॥४॥

॥ शब्द ८१ ॥

भजो हो सतगुरु नाम उरी* ॥ टेक ॥
जप तप साधन कछु नहिं लागत खर्चत ना गठरी ॥१॥
संपति संतति सुख के कारन या सों भूल परी ॥२॥
जेहि मुख सत्त नाम नहिं निकसत सो मुख धूरि परी ॥३॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो गुरु चरनन सुधरी ॥४॥

॥ शब्द ८२ ॥

अवधू भूले को घर लावै, सो जन हम को भावै ॥टेक॥
घर में जोग भोग घर ही में, घर तजि वन नहिं जावै ।
वन के गये कलपना उपजै, तब धौं कहाँ समावै ॥१॥
घर में जुक्ति मुक्ति घर ही में, जो गुरु अलख लखावै ।
सहज सुन्न में रहै समाना, सहज समाधि लगावै ॥२॥

*हृदय से ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

कहैं कबीर सुनो [illegible] ॥

। शब्द [illegible] ।

को जानै बात पराये मन की । टेक ।

रात अँधेरी चोरा डाँटै आस लगाये पराये धन की ।१।
आँधर निरग बनै बन डोलै लागो बान खबर ना तन की ।२।
महा मोह की नींद परी है चुनरी लेगा सुहागिन तन की ।३।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो गुरु जाने हैं पराये मन की ।४

॥ शब्द [illegible] ॥

समुझ नर मूढ़ यिगारी रे ॥ टेक ॥

आया लाहा कारने तैं क्यों पूंजी हारी रे ॥१॥
गर्भ वास विनती करी, सो तैं आन विसारी रे ॥२॥
माया देख तू भूलिया और सुन्दर नारी रे ॥३॥
बड़े साह आगे गये, ओछा व्योपारी रे ॥४॥
लौंग सुपारी छाँड़ि के, क्यों लादी खारी रे ॥५॥
तीरथ बरत में भटकता, नाहिं तत्त विचारी रे ॥६॥
आन देव को पूजना, तेरी होगी ख्वारी रे ॥७॥

नोट ।

[illegible] लै चला, करि पल्ला भारी रे ॥८॥
[illegible] जग में चला, जैसे हारा ज्वारी रे ॥९॥

॥ शब्द ८५ ॥

[illegible] मंगल गाओ मेरी राजनी, भई प्रभात*
[illegible] भई रजनी† ॥१॥

[illegible] होत भैना‡, सतगुरु सब्द समुझ ले सैना ॥२
[illegible] गंग लाओ, तब हंसा अपना घर पाओ ॥३
[illegible] फूली फुलवारी, मनसा मारि करो रखवारी ॥४
[illegible] अमृत फल लागा, पावैगा कोइ संत सुभागा ॥५
कहै कबीर गूंगे की सैना, अमी महा रस झाँके नैना ॥६

॥ शब्द ८६ ॥

साचमुच खेल ले मैदाना ॥ टेक ॥
सब्द गुरु को दृढ़ करि बाँधो, सुरति की खींच कमाना।
कड़ाबीन करु मन को वस करि, मारो मोह निदाना ॥१॥
छाका फरी ज्ञान का गदका, बाँधि मरहटी बाना।
सनमुख जाय लड़ै जो कोई, वही सूर मरदाना ॥२॥
भंजक ध्यान ज्ञान की पट्टी, प्रेम बरूद खजाना।
भरि भरि तोप झड़ाझड़ मारो, लूटो मुलुक बिगाना ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, प्रेम में हो मस्ताना।
अमर लोक में डेरा दे करि, सतगुरु हना§ निसाना ॥४॥

*सुबह। †रात। ‡बहिन। §मारा।

॥ शब्द ८७ ॥

भजु मन नाम उमिर रहि थोड़ी ॥ टेक ॥

चारि जने मिलि लेन को आये लिये काठ की घोड़ी ।
जोरि लकड़िया फूंक अस दीनो जस वृंदावन की होरी ॥१॥
सीस महल के दस दरवाजे आन काल ने घेरी ।
आगर तोड़ी नागर तोड़ी निकसे प्रान खुपड़िया फोड़ी ॥२॥
पाटी पकरि वाकी माता रोवै बहियाँ पकरि सग भाई ।
लट छिटकाये तिरिया रोवै बिछुरत है मोरी हंस की जोड़ी ॥३॥
सत्तनाम का सुमिरन करि ले बाँध गाँठ नू पोढ़ी ।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो जिन जोड़ी तिन तोड़ी ॥४॥

॥ शब्द ८८ ॥

अरे मन मूरख खेतीवान, जतन बिन मिरगन खेत उजाड़ा ॥ टेक ॥

पाँच मिरग पच्चीस मिरगनी, ता में एक सिंगारा[1] ।
अपने अपने रस के भोगी, चरत फिरैं न्यारा न्यारा ॥१॥
काम क्रोध दुइ मुक्ख मिरम हैं, नित उठि चरत सबारा[2] ।
मारे मरैं टरैं नहिं टारे, बिड़वत नाहिं बिडारा[3] ॥२॥
अति परचंड महा दुख दारुन, वेद सास्त्र पचि हारा ।
प्रेम बान लै चढ़्यो पारधी[4] भाव भक्ति करि मारा ॥३॥
सत की बेड़[5] धर्म की खाईं गुरु कै सब्द रखारा[6] ।
कहैं कबीर चरन नहिं पावैं अब की बार सम्हारा ॥४॥

---

[1]सींग वाला, [2]सवेरे। [3]हाँकने से। [4]शिकारी। [5]चारदीवारी। [6]रखवारा।

॥ शब्द ८९ ॥

ना जानें तेरा साहब कैसा है ॥ टेक ॥

मसजिद भीतर मुल्ला पुकारै, क्या साहब तेरा बहिरा है।
चिउँटी के पग नेवर बाजे, सो भी साहब सुनता है ॥१॥
पंडित होय के आसन मारै, लम्बी माला जपता है।
अंदर तेरे कपट कतरनी, सो भी साहब लखता है ॥२॥
ऊँचा नीचा महल बनाया, गहिरी नेंव जमाता है।
चलने का मनसूबा नाहीं, रहने को मन करता है ॥३॥
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी, गाड़ि जमीं में धरता है।
जिस लहना है सो लै जैहै, पापी बहि बहि मरता है ॥४॥
सतवन्ती को गजी मिलै नहिं, बेस्या पहिरै खासा है।
जेहि घर साधू भीख न पावै, भड़ुवा खात बतासा है ॥५॥
हीरा पाय परख नहिं जानै, कौड़ी परखन करता है।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, हरि जैसे को तैसा है ॥६॥

॥ शब्द ९० ॥

मुखड़ा क्या देखै दर्पन में, तेरे दया धरम नहिं तन में ॥टेक॥

आम की डार कोइलिया बोलै, सुवना बोलै बन में।
घरबारी तो घर में राजी, फक्कड़ राजी बन में ॥१॥
ऐंठी धोती पाग लपेटी, तेल चुआ जुलफन में।
गली गली की सखी रिझाईं, दाग लगाया तन में ॥२॥
पाथर की इक नाव बनाई, उतरा चाहे छिन में।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, वे क्या चढ़ैंगे रन में ॥३॥

॥ शब्द ९१ ॥

करम गति टारे नाहिं टरी ॥टेक॥

मुनि बसिष्ट से पंडित ज्ञानी सोध के लगन धरी।
सीता हरन मरन दसरथ को बन में बिपति परी* ॥१॥
कहँ वह फंद कहाँ वह पारधी† कहँ वह मिरग चरी।
सीता को हरि लेगयो रावन सोने की लंक जरी ॥२॥
नीच हाथ हरिचन्द‡ बिकाने बलि§ पाताल धरी।
कोटि गाय नित पुन्न करत नृग गिरगिट जोनि परी ॥३॥

*रामचंद्र जी का बनोबास, उन के पिता दसरथ का उन के बियोग में प्रान तजना, मारीच को मृगा बना कर रावन का सीता जी को हर ले जाना और फिर रामचंद्र का रावन को मारना और सीता जी को लाना यह कथा प्रायः सब लोग जानते हैं।

†शिकारी।

‡राजा हरिश्चन्द्र भारी दानी और सत्यवादी थे जिन्हों ने विश्वामित्र जी को अपना सब राज पाट यज्ञ की दक्षिना में दे दिया उस पर मुनि जी ने तीन भार सोना दान-प्रतिष्ठा का मांगा और [illegible]। राजा हरिश्चन्द्र ने उस के लिये काशी में जाकर अपने को एक डोम्हे के हाथ और अपनी स्त्री और पुत्र को एक ब्राह्मन के हाथ बेच कर मुनि जी को संतुष्ट किया।

§राजा बलि बड़े प्रतापी और दानी थे जिन के द्वारे पर आप भगवान बौना का भेष धर कर तीन परग पृथ्वी मांगने गये जब राजा बलि ने संकल्प कर दिया तब भगवान ने बैराट रूप धारन करके एक परग में स्वर्गादिक और एक में सारी पृथ्वी नाप ली और कहा कि अब बाकी तीसरा परग देव। राजा ने अपना शरीर भेंट किया जिसे तीसरे परग से नाप कर भगवान ने उन्हें अमर करके पाताल का राज दिया।

‖राजा नृग रोज एक लाख गऊ दान दिया करते थे एक बार कोई गऊ जो पहिले दिन दान हो चुकी थी नई गऊवों में आ मिली और

... जिन के आपु सारथी तिन पर बिपति परी।
... को गर्ब घटायो जदु कुल नास करी ॥ ४ ॥
... मनु जो भानु ... बिधि संजोग परी।
... गुनो भाउ राधे होनी होके रही ॥५॥

भेद बानी

॥ शब्द १ ॥

... एक आपु सब माहीं।
... भरम है किर्तम ज्यों दर्पन में छाहीं ॥ टेक।
... तरंग जिमि जल तें उपजै फिर जल माहिं रहाई।
... भाँड पाँच तत्त की बिनसे कहाँ समाई ॥ १ ॥

राजा ने उसे अनजान में दूसरे ब्राह्मन को संकल्प कर दिया। इस पर पहिले और दूसरे दिन के दान पाने वाले ब्राह्मनों में झगड़ा मचा और दोनों राजा के पास न्याव को गये। दोनों वही गऊ लेने पर हठ करते थे इस लिये राजा की बुद्धि चकराई और सोच में पड़ कर दोनों की ... पर सिर हिला देते। इस पर उन ब्राह्मनों ने सराप दिया कि तुम गिरगिट की तरह सिर हिलाते हो वही बन जावगे। इस लिये राजा नृग मरने पर गिरगिट की जोनि पाकर एक अंधे कुए में पड़े हुए थे जब कृस्नावतार हुआ तब श्रीकृस्न ने उन को तारा।

*पांडवों के रथ पर श्रीकृस्न महाभारत की लड़ाई में आप सारथी बने और दुरजोधन का घमंड तोड़ा और कौरवों के कुल का और परम धाम सिधारने के पहिले अपने जदु कुल का भी नाश किया। पांडवों पर ... बिपति पड़ी थी कि अपना सब राज पाट अपनी स्त्री द्रोपदी ... के हाथ जुए में हार गये और मुद्दत तक बनोबास में ... ।

या विधि सदा देह गति सब की या विधि मनहिं बिचारो ।
आपा होय न्याव करि न्यारो परम तत्व निरुवारो ॥२॥
सहजै रहै समाय सहज में ना कहुं आय न जावै ।
धरै न ध्यान करै नहिं जप तप राम रहीम न गावै ॥३॥
तीरथ वर्त सकल परित्यागै सुन्न डोरि नहिं लावै ।
यह धोखा जब समुझि परै तब पूजै काहि पुजावै ॥४॥
जोग जुगत तें भरम न छूटै जब लग आप न सूझै ।
कहैं कबीर सोइ सतगुरु पूरा जो कोइ समुझै बूझै ॥५॥

॥ शब्द २ ॥

साधो एक रूप सब माहीं ।
अपने मनहिं बिचारि के देखो और दूसरो नाहीं ॥ टेक ॥
एकै तुचा रुधिर पुनि एकै बिप्र सूद्र के माहीं ।
कहीं नारि कहिं नर होइ बोलैं गैब पुरुष वह आहीं ॥१॥
आपै गुरु होय मंत्र देत हैं सिष होय सबै सुनाहीं ।
जो जस गहै लहै तस मारग तिन के सतगुरु आहीं ॥२॥
सब्द पुकार सत्त मैं भाषौं अंतर राखौं नाहीं ।
कहैं कबीर ज्ञान जेहि निर्मल बिरले ताहि लखाहीं ॥३॥

॥ शब्द ३ ॥

साधो को है कहँ से आयो ॥ टेक ॥
खात पियत को बोलत डोलत या को अंत न पायो ।
केहि के मन धौं कहां बसतु है को धौं नाच नचायो ॥१॥

पावक सर्व अंग काठहिं में को धौं डहकि जगायो ।
ह्वै गयो खाक तेज पुनि वा को कहु धौं कहाँ समायो ॥२॥
भानु प्रकास कूप जल पूरन दृष्टि दरस जो पायो ।
आभा करम अंत कछु नाहीं जोति खींचि ले आयो ॥३॥
अहै अपार पार कछु नाहीं सतगुरु जिन्हैं लखायो ।
कहैं कबीर जेहि सूझ बूझ जस तेइ तस भाष सुनायो ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

साधो सहजै काया सोधो ।
करता आप आपु में करता लख मन को परमोधो ॥ टेक ॥
जैसे बट का बीज ताहि में पत्र फूल फल छाया ।
काया मद्धे बुन्द बिराजे बुन्दै मद्धे काया ॥ १ ॥
अग्नि पवन पानी पिरथी नभ ता बिन मेला नाहीं ।
काजी पंडित करो निबेरा का के साँईं न माहीं ॥ २ ॥
साँचे नाम अगम की आसा है वाही में साँचा ।
करता बीज लिये है खेलै त्रिगुन तीन तत पाँचा ॥ ३ ॥
जल भरि कुम्भ जले बिच धरिया बाहर भीतर सोई ।
उन को नाम कहन को नाहीं दूजा धोखा होई ॥ ४ ॥
कठिन पंथ सतगुरु को मिलना खोजत खोजत पाया ।
टक लग खोज मिटी जब दुबिधा ना कहुं गया न आया ॥५॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो सत्त शब्द निज सारा ।
आपा मद्धे आपे बोलै आपे सिरजनहारा ॥ ६ ॥

॥ शब्द ५ ॥

साधो दुविधा कहँ से आई ।
नाना भाव विचार करतु है कौने मतिहिं बौराई ॥ टेक ॥
ऋग¹ कहै निराकार निरलेपी अगम अगोचर साँई ।
आवै न जाय मरै नहिं जीवै रूप बरन कछु नाहीं ॥१॥
जजुर¹ कहै सरगुन परमेसर दस औतार धराया ।
गोपिन के सँग रहस रचो है सोई पुरानन गाया ॥२॥
साम¹ कहै वह ब्रह्म अखंडित और न दूजा कोई ।
आपै अपरम अवगति कहिये सत्त पदारथ सोई ॥३॥
अथरवन¹ कहै परो पथ दीसै सत्त पदारथ नाहीं ।
जे जे गये बहुरि नहिं आये मरि मरि कहाँ समाहीं ॥४॥
यह परमान सभन के लीन्हा ज्यों अँधरन को हाथी ।
अछै बाप की खबर न जानी पुत्र हुता नहिं साथी ॥५॥
जा प्रकार अँधरे को हाथी या विधि वेद बखानै ।
अपनी अपनी सब कोइ भाषै का को ध्यानहिं ठानै ॥६॥
साँच अहै अँधरे को हाथी औ साँचे हैं सगरे ।
हाथ की टोई साषि कहतु हैं हैं आँखिन के अँधरे ॥७॥
सब्द अतीत सब्द सो अपना बूझै बिरला कोई ।
कहैं कबीर सतगुरु की सैना³ आप मिटे तब सोई ॥८॥

॥ शब्द ६ ॥

सार सब्द गहि बाचिहौ² मानौ इतबारा ॥ १ ॥
सत्तपुरुष अच्छै बिरिछ निरंजन डारा ॥ २ ॥

¹एक वेद का नाम । ²इशारा । ³बचोगे ।

तीन देव साखा भये पाती संसारा ॥ ३ ॥
ब्रह्मा बेद सही किया सिव जोग पसारा ॥ ४ ॥
बिस्नु माया परगट किया उरले ब्योहारा ॥ ५ ॥
निरलैवा ब्याधा, भये लिये बिष कर चारा ॥ ६ ॥
कर्म की बंसी डारि के फाँसा संसारा ॥ ७ ॥
जोति सरूपी हाकिमा जिन अमल पसारा ॥ ८ ॥
तीन लोक दसहूं दिसा जम रोके द्वारा ॥ ९ ॥
अमल मिटावौं ताहि को पठवौं भव पारा ॥ १०॥
कहैं कबीर अमर करौं जो होय हमारा ॥ ११॥

॥ शब्द ७ ॥

महरम होय सो जानै साधो ऐसा देस हमारा ॥ टेक
बेद कतेब पार नहिं पावत कहन सुनन सों न्यारा ।
जाति बरन कुल किरिया नाहीं संध्या नेम अचारा ॥१॥
बिन जल बूंद परत जहँ भारी नहिं मीठा नहि खारा ।
सुन्न महल में नौबत बाजे किंगरी बीन सितारा ॥२॥
बिन बादर जहँ बिजुरी चमकै बिन सूरज उँजियारा ।
बिना सीप जहँ मोती उपजै बिन सुर सब्द उचारा ॥३॥
जोति लजाय ब्रह्म जहँ दरसै आगे अगम अपारा ।
कहैं कबीर वहँ रहनि हमारी बूझै गुरुमुख प्यारा ॥४॥

* पहिला † चिड़ीमार ।

॥ शब्द ८ ॥

अवधू बेगम देस हमारा ॥ टेक ॥

राजा रंक फकीर बादसा सब से कहौं पुकारा ।
जो तुम चाहत अहौ परम पद बसिहो देस हमारा ॥१॥
जो तुम आये भीने होइ के तजो मनी को भारा ।
ऐसी रहनि रहो रे गोरख[1] सहज उतरि जाव पारा ॥२॥
धरनि अकास गगन कछु नाहीं नहीं चंद्र नहिं तारा ।
सत्तनाम की हैं महतावैं साहब के दरबारा ॥३॥
बचना चाहो कठिन काल से गहो सब्द टकसारा ।
कहैं कबीर सुनो हो गोरख[1] सत्तनाम है सारा ॥४॥

॥ शब्द ९ ॥

जहवाँ से आयो अमर वह देसवा ॥ टेक ॥

पानी न पौन न धरती अकसवा ।
चाँद न सूर न रैन दिवसवा ॥ १ ॥
बाम्हन छत्री न सूद्र बैसवा ।
मुगल पठान न सैयद सेखवा ॥ २ ॥
आदि जोति नहिं गौर गनेसवा ।
ब्रह्मा बिस्नु महेस न सेसवा ॥ ३ ॥
जोगी न जंगम मुनि दुरवेसवा ।
आदि न अन्त न काल कलेसवा ॥ ४ ॥

---

[1] गोरखनाथ जोगी जो कबीर साहब के समय मे थे ।

दास कबीर ले आये सँदेसवा ।
सार सब्द गहि चलौ वहि देसवा ॥ ४ ॥

॥ शब्द १० ॥

मोतिया बरसै रौरे देसवाँ दिन राती ॥ टेक ॥

मुरली सब्द सुन मन आनँद भयो, जोति बरै बिनु बाती ।
बिना मूल के कमल प्रगट भयो, फुलवा फुलत भाँती भाँती१
जैसे चकोर चन्द्रमा चितवै, जैसे चातक स्वाँती ।
तैसे संत सुरति के होइके, होइगे जनम सँघाती ॥२॥
या जग में बहु ठग लागतु हैं, पर धन हरत न डेराती ।
कहैं कबीर जतन करो साधो, सत्तगुरू की थाथी ॥३॥

॥ शब्द ११ ॥

नैहरवा हमकाँ नहिं भावै ॥ टेक ॥

साँईं की नगरी परम अति सुन्दर जहँ कोइ जाय न आवै।
चाँद सुरज जहँ पवन न पानी को सँदेस पहुंचावै,
दरद यह साँईं को सुनावै ॥ १ ॥
आगे चलौं पंथ नहिं सूझै पीछे दोष लगावै ।
केहि बिधि ससुरे जावँ मोरी सजनी बिरहा जोर जनावै,
बिषै रस नाच नचावै ॥ २ ॥
बिन सतगुरु अपनो नहिं कोई जो यह राह बतावै,
कहत कबीर सुनो भाइ साधो सपने न प्रीतम पावै,
तपन यह जिय की बुझावै ॥ ३ ॥

॥ शब्द १२ ॥

गगन मठ गैब निसान गड़े ॥ टेक ॥

गुदा* में मेख सेस सिर ऊपर डेरा अचल खड़े ॥ १ ॥
चंद्रहार चँदवा जहँ टाँगे मुक्ता मनिक मढ़े ॥ २ ॥
महिमा तासु देख मन थिर करि रवि ससि जोति जड़े ॥३॥
रहत हजूर पूर पद सेवत समरथ ज्ञान बड़े ॥ ४ ॥
संत सिपाही करैं चाकरी तेहि दरबार अड़े ॥ ५ ॥
बिना नगाड़े नौबत बाजे अनहद सब्द झरे ॥ ६ ॥
कहैं कबीर पियै जोई जन माता† फिर न मरे ॥ ७ ॥

॥ शब्द १३ ॥

वा घर की सुध कोइ न बतावै, जा घर से
जिव आया हो ॥टेक ॥
धरती अकास पवन नहिं पानी, नाहीं तब आदि माया हो॥१
ब्रह्मा बिस्नु महेस नहीं तब, जीव कहाँ से आया हो ॥२॥
पानी पवन के दहिया जमायो, अगिन के
जामत दीन्हा हो ॥३॥
चाँद सुरज दोउ बने अहीरा, मथि दहिया
घिउ काढ़ा हो ॥४॥
यह मनसा माया के लोभी बारबार पछिताया हो ॥५॥
लख नहिं परै नाम साहब का, फिर फिर
भटका खाया हो ॥६॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, वह घर बिरले पाया हो ॥७॥

*बानी में ठेठ हिंदी शब्द गुदा का लिखा है। † मस्त।

॥ शब्द १४ ॥

गगन घटा घहरानी साधो, गगन घटा घहरानी ॥टेक॥
पूरब दिसि से उठी बदरिया, रिमझिम बरसत पानी ।
आपन आपन मेंड़ि सम्हारो, बह्यो जात यह पानी ॥१॥
मन के बैल सुरति हरवाहा, जोत खेत निर्बानी ।
दुबिधा दूब छोलकर बाहर, बोवो नाम की धानी ॥२॥
जोग जुगति करि कर रखवारी, चर न जाय मृग धानी ।
बाली झार कूटि घर लावे, सोई कुसल किसानी ॥ ३ ॥
पाँच सखी मिलि कीन्ह रसोइयाँ, एक से एक सयानी ।
दूनों थार बराबर परसे, जेवैं मुनि अरु ज्ञानी ॥ ४ ॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, यह पद है निर्बानी ।
जो यह पद को परचा पावे, ता को नाम बिज्ञानी ॥५॥

॥ शब्द १५ ॥

झीनी झीनी बीनी चदरिया ॥ टेक ॥
काहे के ताना काहे के भरनी कौने तार से बीनी चदरिया ॥ १ ॥
इँगला पिंगला ताना भरनी सुखमन तार से बीनी चदरिया ॥ २ ॥
आठ कँवल दल चरखा डोलै पाँच तत्त गुन तीनी चदरिया ॥ ३ ॥
साँईं को सियत मास दस लागे ठोक ठोक के बीनी

सो चादर सुर नर मुनि ओढ़िन ओढ़ि के मैली कीनी
चदरिया ॥ ५ ॥
दास कबीर जतन से ओढ़िन ज्यों के त्यों धर दीनी
चदरिया ॥ ६ ॥

॥ शब्द १६ ॥

फल मीठा पै ऊँचा तरवर* कौनि जतन करि लीजै ।
नेक† निचोइ सुधा रस वा को कौनि जुगति सों पीजै ॥१॥
पेड़ विकट‡ है महा सिलसिला§, अगह गह्यो नहिं जावै ।
तन मन डारि चढ़ै सरधा सों, तब वा फल को खावै ॥२॥
बहुतक लोग चढ़े बिन भेदै, देखी देखा चाँहीं ।
रपटि पाँव गिरि परे अधर तें, आइ परे भुइँ माहीं ॥३॥
सत्त सब्द के खूँटे धरि पग, धरि गुरु-ज्ञानहिं डोरा ।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, तब वा फल को तोरा ॥४॥

॥ शब्द १७ ॥

मुनियाँ पिंजड़े वाली ना, तेरो सतगुरु है बेपारी ।टेक।
पाँच तत्त का बना पिंजड़ा, तामें रहती मुनियाँ ।
उड़ि के मुनियाँ डार पै बैठी, झींखन लगी सारी दुनियाँ ।१।
अलग डार पर बैठी मुनियाँ, पिये प्रेम रस बूटी ।
क्या करिहै जमराज तिहारो, नाम कहत तन छूटी ॥२॥
मुनियाँ की गति मुनियाँ जानै, और कहैं सब झूठी ।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, गुरु चरनन की मूठी ।३।

*पेड़ । †थोड़ा सा । ‡कठिन, अड़बड़ । §फिसलाने वाला ।

॥ शब्द १८ ॥

पिया ऊँची रे अटरिया तोरी देखन चली ॥ टेक ॥
ऊंची अटरिया जरद किनरिया, लगी नाम की डोरी ।
चाँद सुरज सम दियना बरतु है, ता बिच भूली डगरिया ॥१॥
पाँच पचीस तीन घर बनियाँ, मनुवाँ है चौधरिया ।
मुन्सी है कुतवाल ज्ञान को, चहुं दिस लागी बजरिया ॥२॥
आठ मरातिब दस दर्वाजा, नौ में लगीं किवरिया ।
खिरकी बैठ गोरी चितवन लागी, उपराँ झाँप झोपरिया ३
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, गुरु के चरन बलिहरिया ।
साध संत मिलि सौदा करि हैं, झौंखे मूरख अनरिया ॥४॥

॥ शब्द १९ ॥

रस गगन गुफा में अजर झरै ॥ टेक ॥
बिन बाजा झनकार उठै जहँ समुझि परै जब ध्यान धरै १
बिना ताल जहँ कँवल फुलाने तेहि चढ़ि हंसा केल करै ॥२॥
बिन चंदा उँजियारी दरसै जहँ तहँ हंसा नजर परै ॥३॥
दसवें द्वारे ताड़ी लागी अलख पुरुष जाको ध्यान धरै ॥४॥
काल कराल निकट नहिं आवै काम क्रोध मद लोभ जरै ॥५॥
जुगन जुगन की तृषा बुझानी कर्म भर्म अघ व्याधि टरै ॥६॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो अमर होय कबहूं न मरै ॥७॥

॥ शब्द २० ॥

मुरसिद नैनों बीच नबी है।
स्याह सपेद तिलों बिच तारा अवगति अलख रबी है।टेक।
आँखी मद्धे पाँखी चमकै पाँखी मद्धे द्वारा ।
तेहि द्वारे दुर्बीन लगावै उतरै भवजल पारा ॥२॥
सुन्न सहर में बास हमारी तहँ सरबंगी जावै ।
साहब कबीर सदा के संगी सब्द महल ले आवै ॥३॥

॥ शब्द २१ ॥

सत्त सुकृत सतनाम जक्त जानै नहीं ।
बिना प्रेम परतीत कहा मानै नहीं ॥१॥
जीव अनंत संसार न चीन्हत पीव को ।
कितना कहु समुझाय चौरासि क जीव को ॥२॥
आगे धाम अखंड सो पद निर्बान है ।
भूख नींद वहँ नाहिं निअच्छर नाम है ॥३॥
कहैं कबीर पुकारि सुनो मन भावना ।
हंसा चलु सतलोक बहुरि नहिं आवना ॥४॥

॥ शब्द २२ ॥

कर नैनों दीदार महल में प्यारा है ॥टेक॥
काम क्रोध मद लोभ बिसारो, सील संतोष छिमा सत धारो,
मद्द माँस मिथ्या तजि डारो ।
हो ज्ञान घोड़े असवार भरम से न्यारा है ॥ १ ॥

------

* मालिक ।

जोनी नैनो बस्ती पाओ, आसन पद्म जुगत से लाओ
कुम्भक कर रेचक करवाओ।
पहिले मूल सुधार कारज हो सारा है ॥२॥
मूल कँवल दल चतुर बखानो, कलिंग जाप लाल रँग मानो,
देव गनेस तहँ रोपा थानो।
रिध सिध चँवर ढुलारा है ॥३॥
स्वाद चक्र षट दल विस्तारो, ब्रह्म सावित्री रूप निहारो
उलटि नागिनी का सिर मारो।
तहाँ सब्द ओंकारा है ॥ ४ ॥
नाभी अष्ट कँवल दल साजा, सेत सिंघासन विस्नु विराजा
हिरिंग जाप तासु मुख गाजा।
लछमी सिव आधारा है ॥ ५ ॥
द्वादस कँवल हृदय के माहीं, जंग गौर सिव ध्यान लगाईं,
सोहं सब्द तहाँ धुन छाई।
गन करें जैजैकारा है ॥६॥
षोडस कँवल कंठ के माहीं, तेहि मध बसे अविद्या बाई,
हरि हर ब्रह्मा चंवर ढुराई।
जहँ श्रृँग नाम उचारा है ॥ ७ ॥
ता पर कंज कँवल है भाई, बग भौंरा* दुइ रूप लखाई
निज मन करत तहाँ ठकुराई,
सो नैनन पिछवारा है ॥ ८ ॥

*बगला और भौंरा अर्थात सेत-श्याम पद।

कँवलन भेद किया निर्वारा, यह सब रचना पिंड मँझारा,
सतसँग कर सतगुरु सिर धारा।
वह सत नाम उचारा है ॥ ९ ॥

आँख कान मुख बन्द कराओ, अनहद झिंगा सब्द सुनाओ,
दोनों तिल इक तार मिलाओ।
तब देखो गुलजारा है ॥ १० ॥

चंद सूर एकै घर लाओ, सुखमन सेनी ध्यान लगाओ,
तिरबेनी के सिंध समाओ।
भौर उतर चल पारा है ॥ ११ ॥

घंटा संख सुनो धुन दोई, सहस कँवल दल जगमग होई,
ता मध करता निरखो सोई।
बंक नाल धस पारा है ॥ १२ ॥

डाकिनी साकिनी बहु किलकारें, जम किंकर धर्म दूत हकारें,
सत्तनाम सुन भागें सारे।
जब सतगुरु नाम उचारा है ॥ १३ ॥

गगन मँडल बिच उर्धमुख कुइया, गुरमुख साधू भरभर पीया,
निगुरे प्यास मरे बिन कीया*।
जाके हिये अँधियारा है ॥ १४ ॥

त्रिकुटी महल में बिद्या सारा, घनहर† गरजें बजें नगारा,
लाल बरन सूरज उँजियारा।
चत्रकँवल मँझार सब्द ओंकारा है ॥ १५ ॥

*करनी। †बादल।

नाथ सोई जिन गह गढ़ लीन्हा, नौ दरवाजे परगट चीन्हा,
दसवाँ खोल जाय जिन दीन्हा ।
जहाँ कुफल रहिया मारा है ॥ १६ ॥
आगे सेन गुन्न है भाई, मान सरोवर पैठो न्हाई,
हंसन मिलि हंसा होइ जाई ।
मिलै जो अमी अहारा है ॥ १७ ॥
किंगरी सारंग बजै सितारा, अच्छर ब्रह्म सुन्न दरबारा,
द्वादस भानु हंस उँजियारा ।
खट दल कँवल मँझार सब्द ररंकारा है ॥ १८ ॥
महा सुन्न सिंध विषमी घाटी, बिन सतगुरु पावै नहिं बाटी
व्याघर* सिंघ सरप बहु काटी ।
तहँ सहज अचिंत पसारा है ॥ १९ ॥
अष्ट दल कँवल पारब्रह्म भाई, दहिने द्वादस अचिंत रहाई
बायें दसदल सहज समाई ।
यों कँवलन निरवारा है ॥ २० ॥
पाँच ब्रह्म पाँचो अँड बीनो, पाँच ब्रह्म निःअच्छर चीनो,
चार मुकाम गुप्त तहँ कीनो ।
जा मध बंदीवान पुरुष दरबारा है ॥ २१ ॥
दो पर्वत के संध निहारो, भँवर गुफा तें संत पुकारो,
हंसा करते केल अपारो ।
तहाँ गुरन दर्बारा है ॥ २२ ॥

---

* बाघ ।

सहस अठासी दीप रचाये, हीरे पन्ने महल जड़ाये,
मुरली बजत अखंड सदाये,
तहँ सोहं झनकारा है ॥ २३ ॥
सोंह हद्द तजी जब भाई, सत्त लोक की हद पुनि आई,
उठत सुगंध महा अधिकाई,
जा को वार न पारा है ॥ २४ ॥
षोड़स भानु हंस को रूपा, बीना सत धुन बजै अनूपा,
हंसा करत चँवर सिर भूपा।
सत्त पुरुष दर्बारा है ॥ २५ ॥
कोटिन भानु उदय जो होई, एते ही पुनि चंद्र लखोई,
पुरुष रोम सम एक न होई।
ऐसा पुरुष दीदारा है ॥ २६ ॥
आगे अलख लोक है भाई, अलख पुरुष की तहँ ठकुराई,
अरबन सूर रोम सम नाहीं।
ऐसा अलख निहारा है ॥ २७ ॥
ता पर अगम महल इक साजा, अगम पुरुष ताहि को राजा,
खरबन सूर रोम इक लाजा।
ऐसा अगम अपारा है ॥ २८ ॥
ता पर अकह लोक है भाई, पुरुष अनामी तहाँ रहाई,
जो पहुंचा जानेगा वाही।
कहन सुनन तें न्यारा है ॥ २९ ॥

माया भेद किया निर्वारा, यह सब रचना पिंड मँझारा,
माया अवगति जाल पसारा ।
सो कारीगर भारा है ॥ ३० ॥
आदि माया कीन्ही चतुराई, झूठी बाजी पिंड दिखाई,
अवगति* रचन रची अँड माहीं ।
ता का प्रतिबिंब डारा है ॥ ३१ ॥
शब्द बिहंगम चाल हमारी, कहैं कबीर सतगुर दई तारी,
खुले कपाट सब्द झनकारी ।
पिंड ब्रंड के पार सो देस हमारा है ॥ ३२॥

॥ शब्द ७३ ॥

कर नैनों दीदार यह पिंड से न्यारा है, तू हिरदय सोच
बिचार यह अँड मँझारा है ॥ टेक ॥
चोरी जारी† निंदा चारो, मिथ्या तज सतगुरु सिर धारो,
सतसंग कर सत नाम उचारो, तब सनमुख लहो दीदारा
है ॥ १ ॥
जे जन ऐसी करी कमाई, तिनकी फैली जग रोसनाई,
अष्ट प्रमान जगह खुद पाई ।
तिन देखा अंड मँझारा है ॥ २ ॥
मोरी अंड को अवगत राई, अमर कोट अकह नकल
बनाई ।
सुद्ध ब्रह्म पद तहँ ठहराई ।
सो नाम अनामी धारा है ॥ ३ ॥

* बुद्धि मे । † पर स्त्री गमन ।

सतवीं सुन्न अंड के माहीं, झिलमिलाहट की नकल बनाई;
महा काल तहँ आन रहाई ।
सो अगम पुरुष उच्चारा है ॥ ४ ॥
छठवीं सुन्न जो अंड मँझारा, अगम महल की नकल सुधारा
निरगुन काल तहाँ पग धारा ।
सो अलख पुरुष कहो न्यारा है ॥ ५ ॥
पंचम सुन्न जो अंड के माहीं, सत्तलोक की नकल बनाई
माया सहित निरंजन राई ।
सो सत्त पुरुष दीदारा है ॥ ६ ॥
चौथी सुन्न अंड के माहीं, पद निर्वान की नकल बनाई
अवगति कला हो सतगुरु आई ।
सो सोहं पद सारा है ॥ ७ ॥
तीजी सुन्न की सुनो बड़ाई, एक सुन्न के दोय बनाई,
ऊपर महासुन्न अधिकाई ।
नीचे सुन्न पसारा है ॥ ८ ॥
सतवीं सुन्न महाकाल रहाई, तासु कला महासुन्न समाई
पारब्रह्म कर थाप्यो ताही ।
सो निःअक्षर सारा है ॥ ९ ॥
छठवीं सुन्न जो निरगुन राई, तासु कला आ सुन्न समाई,
अच्छर ब्रह्म कहै पुनि ताही,
सोई सब्द ररंकारा है ॥ १० ॥

सप्तम सुन्न निरंजन राई· तासु कला दूजी सुन छाई,
पुरुष प्रकिरती पदवी पाई ।
सुक्ष्म सरगुन रचन पसारा है ॥ ११ ॥

पुरुष प्रकृति दूजी सुन माहीं, तासु कला पिरथम सुन आई
जोत निरंजन नाम धराई ।
सरगुन स्थूल पसारा है ॥ १२ ॥

पिरथम सुन्न जो जोत रहाई, ता की कला अविद्या बाई,
पुत्रन संग पुत्री उपजाई ।
यह सिंध बैराट पसारा है ॥ १३ ॥

सतयें अकास उतर पुनि आई, ब्रह्मा बिस्नु समाधि जगाई,
पुत्रन संग पुत्री परनाई ।
यहँ श्टॅग नाम उचारा है ॥ १४ ॥

छठे अकास सिव अवगति भौंरा, जंग गौर रिद्धि करती चौंरा
गिरि कैलास गन करते सोरा ।
तहँ सोहँ सिर मौरा है ॥ १५ ॥

पंचम अकास में बिस्नु बिराजे, लक्ष्मी सहित सिंहासन गाजे
हिरिंग बैकुंठ भक्त समाजे ।
जिन भक्तन कारज सारा है ॥ १६ ॥

चौथे अकास ब्रह्मा बिस्तारा, सावित्री सँग करत बिहारा
ब्रह्म ऋद्धि ओंग पद सारा ।
यह जग सिरजनहारा है ॥ १७ ॥

तीजे अकास रहे धर्मराई, नर्क सुर्ग जिन लीन्ह बनाई,
करमन फल जीवन भुगताई।
ऐसा अदल पसारा है॥ १८॥
दूजे अकास में इन्द्र रहाई, देव मुनी बासा तहँ पाई,
रंभा करती निरत सदाई।
कलिंग सब्द उच्चारा है॥ १९॥
प्रथम अकास मृत्तु है लोका, मरन जनम का नित जहँ धोखा,
सो हंसा पहुंचे सत लोका।
जिन सतगुरु नाम उचारा है॥ २०॥
चौदह तबक किया निरवारा, अब नीचे का सुनो बिचारा,
सात तबक में छः रखवारा।
भिन भिन सुनो पसारा है॥ २१॥
सेस धौल बाराह कहाई, मीन कच्छ औ कुरम रहाई,
सो छः रहे सात के माहीं।
यह पाताल पसारा है॥ २२॥

॥ शब्द २४ ॥

कोइ सुनता है गुरु ज्ञानी, गगन में आवाज होती झीनी। १॥
पहिले होता नाद बिन्दु से, फेर जमाया पानी॥ २॥
सब घट पूरन पूर रहा है, आदि पुरुष निर्बानी॥ ३॥
जो तन पाया पटा लिखाया, तृस्ना नहीं बुझानी॥ ४॥
अमृत छोड़ि बिषय रस चाखा उलटी फाँस फँसानी॥५॥
ओअं सोहं बाजा बाजे, त्रिकुटी सुरत समानी॥ ६॥

इड़ा पिंगला सुषमन सोधे, सुन्न धुजा फहरानी ॥ ७ ॥
दीद बरदीद हम नजरों देखा, अजरा अमर निसानी ॥८॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, यही आदि की बानी ॥९॥

॥ शब्द २५ ॥

साधो ऐसा धुंध अँधियारा ॥ टेक ॥
या घट अंतर बाग बगीचे, याही में सिरजनहारा ॥ १ ॥
या घट अंतर सात समुंदर, याही में नौ लख तारा ॥ २ ॥
या घट अंतर हीरा मोती, याही में परखनहारा ॥ ३ ॥
या घट अंतर अनहद गरजे, याही में उठत फुहारा ॥४॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, याही में गुरू हमारा ॥५॥

॥ शब्द २६ ॥

अवधू सो जोगी गुरु मेरा, या पद को करै निवेरा ॥टेक॥
तरवर एक मूल बिन ठाढ़ा, बिन फूले फल लागे ।
साखा पत्र नहीं कछु वा के, अष्ट कमल दल गाजे ॥ १ ॥
चढ़ तरवर दो पंछी बैठे, एक गुरू इक चेला ।
चेला रहा सो चुन चुन खाया, गुरू निरन्तर खेला ॥२॥
बिन करताल पखावज बाजै, बिन रसना गुन गावै ।
गावनहार के रूप न रेखा, सतगुरु मिलै तो बतावै ॥३॥
गगन मंडल में उर्ध मुख कुइयाँ, जहाँ अमी को बासा ।
सगुरा होय सो भर भर पीवै निगुरा जाय पियासा ॥४॥
सुन्न सिखर पर गैया बियानी, धरती छीर जमाया ।
माखन रहा सो संतन खाया, छाछ जगत भरमाया ॥५॥

पंछी को खोज मीन को मारग, कहैं कबीर दोउ भारी ।
अपरम्पार पार पुरुपोत्तम, मूरति की बलिहारी ॥ ६ ॥

॥ शब्द २७ ॥

हंसा लोक हमारे ऐहो, ताते अमृत फल तुम पैहो ॥टेक॥
लोक हमारा अगम दूर है पार न पावै कोई ।
अति आधीन होय जो कोई ता को देउँ लखाई ॥ १ ॥
मिरत लोक से हंसा आये पुहप दीप चलि जाई ।
अंबु दीप में सुमिरन करिहो तब वह लोक दिखाई ॥२॥
माटी का पिंड छूटि जायगा, औ यह सकल बिकारा ।
ज्यों जल माहिं रहत है पुरइन* ऐसे हंस हमारा ॥ ३ ॥
लोक हमारे ऐहो हंसा, तब सुख पैहो भाई ।
सुख सागर असनान करोगे, अजर अमर होइ जाई ॥४॥
कहैं कबीर सुनो धर्मदासा, हंसन करो बधाई ।
सेत सिंघासन बैठक दैहौं, जुग जुग राज कराई ॥ ५ ॥

॥ शब्द २८ ॥

ऐसा लो तत ऐसा लो, मैं केहि विधि कथौ गँभीरा लो ॥टेक॥
बाहर कहौं तो सतगुरु लाजै। भीतर कहौं तो झूठा लो ॥
बाहर भीतर सकल निरंतर। गुरु परतापै दीठा लो ॥१॥
दृष्टि न मुष्टि न अगम अगोचर। पुस्तक लिखा न जाई लो ॥
जिन पहिचाना तिन भल जाना। कहे न को पतियाई लो॥२॥
मीन चलै जल मग में जोवै। परम तत्त धौं कैसा लो ॥
पुहप' बास हूं तें कछु झीना। परम तत्त धौं ऐसा लो ॥३॥

*कोई। 'फूल।

आकासे उड़ि गयो बिहंगम। पाछे खोज न दरसी लो ॥
कहैं कबीर सतगुरु दाया तें। बिरला सतपद परसीलो ॥४॥

॥ शब्द २९ ॥

बाबा अगम अगोचर कैसा, तातें कहि समझाओं ऐसा॥टेक॥
जो दीसे सो तो है नाहीं, है सो कहा न जाई।
सैना बैना कहि समझाओं, गूंगे का गुड़ भाई ॥ १ ॥
दृष्टि न दीसे मुष्टि न आवे, बिनसे नाहिं नियारा।
ऐसा ज्ञान कथा गुरु मेरे, पंडित करो बिचारा ॥ २ ॥

॥ शब्द ३० ॥

बिन देखे परतीति न आवै, कहे न कोउ पतियाना।
समुझा होय सो सब्दै चीन्है, अचरज होय अयाना ॥३॥
कोई ध्यावै निराकार को, कोइ ध्यावै आकारा।
वह तो इन दोऊ तें न्यारा, जानै जाननहारा ॥ ४ ॥
काजी कथै कतेब कुराना, पंडित वेद पुराना।
वह अच्छर तो लखा न जाई, मात्रा लगै न काना ॥५॥
नादी बादी पढ़ना गुनना, बहु चतुराई भीना।
कहैं कबीर सो पड़ै न परलय, नाम भक्ति जिन चीन्हा ॥६॥



झूलना

॥ शब्द १ ॥

ज्ञान का गेंद कर सुर्त का डंड कर,
खेल चौगान मैदान माहीं ॥ १ ॥
जगत का भरमना छोड़ दे बालके,
आय जा भेष भगवंत पाहीं ॥ २ ॥
भेष भगवंत की शेष महिमा करे,
शेष के सीस पर चरन डारै ॥ ३ ॥
काम दल जीति के कंवल दल सोधि के,
ब्रह्म को बेधि के क्रोध मारै ॥ ४ ॥
पदम आसन करै पवन परिचै करै,
गगन के महल पर मदन जारै ॥ ५ ॥
कहत कब्बीर कोइ संत जन जौहरी,
करम की रेख पर मेख मारै ॥ ६ ॥

॥ शब्द २ ॥

पाप पुन्न के बीज दोऊ,
विज्ञान अगिन में जारिये जी ॥ १ ॥
पाँचो चोर विवेक सों बस करि,
विचार नगर में मारिये जी ॥ २ ॥
चिदानन्द सागर में जाइये,
मन चित दोऊ को डारिये जी ॥ ३ ॥

कहैं कबीर एक आप कहा,
  कितने को पार उतारिये जी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

तीरथ में सब पानी है,
  होवे नहिं कछु अन्हाय देखा ॥ १ ॥
प्रतिमा सकल बनी जड़ है,
  बोलै नहिं बोलाय देखा ॥ २ ॥
पुरान कुरान सब बात हो बात है,
  घट का परदा खोल देखा ॥ ३ ॥
अनुभव की बात कबीर कहैं,
  यह सब है झूठी पोल देखा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

दो सूर चलै सुभाव सेती,
  नाभी से उलटा आवता है ॥ १ ॥
बीच इंगला पिंगला तीन नाड़ी,
  सुषमन से भोजन पावता है ॥ २ ॥
पूरक करै कुम्भक करै,
  रेचक करै झरि जावता है ॥ ३ ॥
कायम कबीर का झूलना जी,
  क्या भूल परे पछितावता है ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

सूर को कौन सिखावता है,
रन माहिं असी* का मारना जी ॥ १ ॥
सती को कौन सिखावता है,
सँग स्वामी के तन जारना जी ॥ २ ॥
हंस को कौन सिखावता है,
नीर छीर का भिन्न विचारना जी ॥ ३ ॥
कबीर को कौन सिखावता है,
तत्त रँगों को धारना जी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

तख्त बना हाड़ चाम का जी, दाना पानी क
भोग लगावता है ॥ १ ॥
मल नीर झरै, लोहु माँस बढ़ै, आपु आपु को
अंस बढ़ावता है ॥ २ ॥
नाद विंदु के बीच कलोल करै, सो आतम राम
कहावता है ॥ ३ ॥
अस्थान यही कहँ ढूंढ़ता है, दया देस कबीर
बतावता है ॥ ४ ॥

॥ शब्द ७ ॥

दरिया की लहर दरियाव है जी, दरिया और लहर में
भिन्न कोयम+ ॥ १ ॥

*तलवार। +क्या।

[illegible] भरम जाय ॥टेक॥

[illegible] ज्ञान की करि पिचकारी, छिमा चलावनहार ।
आनन्द ब्रह्म जो मिलन लागे, पाँच पचीस मँझार ॥१॥

[illegible] गली में होरी खेलैं, मची प्रेम की कींच ।
लोभ मोह दोऊ कटि भागे, सुन सुन सब्द अजीत ॥२॥

त्रिकुटी महल में बाजा बाजै, होत छतीसो राग ।
सुरत सखी जहँ देखि तमाशा, सतगुरु खेलैं फाग ॥ ३ ॥

ईंगला पिंगला सुखमना हो, सुरत निरत दोउ नारि ।
अपने पिया संग होरी खेलैं, लज्जा कान निवारि ॥४॥

सुन्न महल में होत कुतूहल, करैं राग अनुराग ।
अपने पुरुष के दरसन पावैं, पूरन प्रेम सुहाग ॥ ५ ॥

सतगुरु मिले फगुआ निज पायो, मारग दियो लखाय ।
कहैं कबीर जो यह गति पावै, सो जिव लोक सिधाय॥६॥

[illegible] सकता है । * गुम हो गया । † कहते हैं ।

॥ शब्द २ ॥

काया नगर मँझार संत खेलैं होरी ।
गावत राग सरस सुर सोहै, अति आनंद भयो री ॥टेक॥
चंदन सील सबुद्धि अरगजा, केसर करनी गहो री ।
अगर अगम्म सुगम करि लीन्हा, अभय उर माँहि धरो री ॥१॥
प्रीति फुलेल गुलाल ज्ञान करि, लेहु जुगत भरि झोरी ।
चोवा चित चेतन परकासा, आवति बास घनो री ॥२॥
त्रिकुटी महल में बाजा बाजै, जगमग जोत उजेरी ।
सहज रंग रचि रह्यो सकल तन, छूटत नाहिं करेरी ॥३॥
अनहद बाजे बजैं मधुर धुन, बिन करताल तँबूरा ।
बिन रसना जहँ राग छतीसो, होत महानंद पूरा ॥ ४ ॥
सुन्न महल इक रंग महल से, कहूं टरत नहिं टारी ।
कहैं कबीर समुझि लो साधो, निर्गुन कह्यो सदा री ॥५॥

॥ शब्द ३ ॥

हमारे को खेलै ऐसी होरी, जा में आवागवन लागी
डोरी ॥ टेक ॥
स्रवन न सुन्यौ नैन नहिं देख्यौ, पिय पिय पिय लागी लौ री।
पंथ निहारत जनम सिराना, परघट मिले न चोरी ॥१॥
जा कारन गृह तें कढ़ि निकसी, लोक लाज कुल तोरी ।
चोवा चंदन और अरगजा, रुपरा रंग भरो री ॥ २ ॥
एकन हूं मृगछाला पहिरी, एकन गुदरी झोरी ।
बहुत भेष धर स्वाँग बनाये, लौ नहिं लगी ठगोरी ॥३॥

[illegible] राचेसर, देस दिसंतर दौरी ।
[illegible] प्रदच्छिना, पुस्कर हूं में लुटी री ॥४॥
[illegible] भागवत गीता, चारो बरन ढंढोरी* ।
[illegible] सतगुरु बिनु, भर्म मिटै नहिं भव री ॥५॥

॥ शब्द ४ ॥

[illegible] आये आज, खेलन फाग री ।
[illegible] गगन शब्द बोले, अति सुख मंगल राग ॥टेक॥
[illegible] रंग घोले, अनहद बानी राग री ।
[illegible] अनुराग होतु है, क्या सोवै उठि जाग री ॥१॥
[illegible] पवन बिछौना, बहुत करौं सनमान री ।
[illegible] अमर पद योंही अविचल जुग जुग बास री ॥२॥
चरन पखार लेहुं चरनोदक, उठि उनके पग लाग री ।
पाँच सखी मिलि मंगल गावें, पिव अपने सँग पाग री ॥३॥
पचामिर्त भाव से लेवौं, परम पुरुष भरतार री ।
महाप्रसाद मंन मुख पावौं, आन खुलो मेरो भाग री ॥४॥
चौरासी को बंद छुड़ावन, आये सतगुरु आप री ।
पान परवाना देन जीवन को, वे पावैं सुख बास री ॥५॥
चोवा चंदन अगर कुमकुमा, पुहुप माल गल हार री ।
[illegible] माँग मुक्ति फल लेहूं, जिव आपन के काज री ॥६॥
सोरहो सिंगार धर्नोसा अभरन, सुरत सिंगार सँवार री ।
कहत कबीर मिले सुख सागर आवा गवन निवार री ॥७॥

* ढंढोरा । फाग खेलने वालों की भीड़ ।

॥ शब्द ५ ॥

साधो हम घर कंत सुजान, खेल्यो रंग होरी ।
जनम जनम की मिटी कलपना, पायो जीवन प्रान री॥टेक॥
पाँच सखी मिलि मंगल गावैं, गुरमुख सब्द विचार री ।
बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ, अनहद सब्द गुंजार री ॥१॥
खेलन चली पंथ प्रीतम के, तन की तपन गई री ।
पिचुकारी छूटै अति अद्भुत, रस की कींच भई री ॥२॥
साहब मिलि आपा बिसरायो, लाग्यो खेल अपार री ।
चहुं दिस पिय पिय धूम मची है, रटना लगी हमार री ॥३॥
सुख सागर असनान कियो है, निर्मल भयो सरीर री ।
आवागवन की मिटी कल्पना, फगुवा पायो कबीर री ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

जहँ सतगुर खेलत ऋतु बसंत । परम जोत जहँ साध संत ॥१
तीन लोक से भिन्न राज । जहँ अनहद बाजा बजै बाज ॥२
चहुं दिस जोति की बहै धार । बिरला जन कोइ उतरै पार ॥३
कोटि कृस्न जहँ जोरैं हाथ । कोटि बिस्नु जहँ नवैं माथ ॥४
कोटिन ब्रह्मा पढ़ैं पुरान । कोटि महेस जहँ धरैं ध्यान ॥५॥
कोटि सरस्वति धारैं राग । कोटि इन्द्र जहँ गगन लाग ॥६
सुर गन्धर्व मुनि गने न जायँ। जहँ साहिब प्रगटे आप आय ७
चोवा चंदन औ अबीर । पुहुप बास रस रह्यो गँभीर ॥८॥
सिरजत हिये निवास लीन्ह । सो यहि लोक से रहत भिन्न ॥९
जब बसंत गहि राग लीन्ह । सतगुरु सब्द उचार कीन्ह ॥१०
कहैं कबीर मन हृदय लाय । नरक-उधारन नाम आहि ॥११

रेखता

॥ १ ॥

रैन दिन संत यों सोवता देखता,
संसार की ओर से पीठ दीये।
गगन और पवन फिर फूल झाले नहीं,
चंद और सूर को सम्म कीये ॥ १ ॥
सुरत की चढ़ चकोर ज्यों रहतु है,
गगन जो निरत का तार बाजे।
जोगिया मगन है रैन दिन गुफा में,
कहै कबीर पिउ गगन गाजे ॥ २ ॥

॥ २ ॥

सात और पञ्च की आरती कौन सी,
रैन दिन आरती संत गावे।
सुन्न निरबान तहँ गैब की झालरा,
गैब के घंट का नाद आवै ॥ १ ॥
तहँ नीव बिन देहरा* देव निर्बान है,
गगन के तख्त पर जुगत सारी।
कहै कबीर तहँ रैन दिन आरती,
पालिया पाँच पूजा उतारी ॥ २ ॥

॥ ३ ॥

साँईं आप की सेव तो आप ही जानिहो,
आप का भेव कहो कौन पावे।
आपनी आपनी बुद्धि अनुमान सों,
बचन बिलास करि लहर लावै ॥ १ ॥

*मंदिर।

तू कहै तैसा नहीं, है सो दीखै नहीं,
निगम हूं कहत नहिं पार जावै ।
कहैं कब्बीर या सैन गूंगा तई,
होय गूंगा सोई सैन पावै ॥ २ ॥

॥ ४ ॥

कर्म श्रौर भर्म संसार सब करतु है,
पीव की परख कोइ संत जानै ।
सुरत औ निरत मन पवन को पकर करि,
गंग श्रौर जमुन के घाट आनै ॥ १ ॥
पाँच को नाथ करि साथ सोहूं लिया,
अधर दरियाव का सुक्ख मानै ।
कहैं कब्बीर सोइ संत निर्भय घरा,
जन्म और मरन का भर्म भानै ॥ २ ॥

॥ ५ ॥

गंग उलटी धरो जमुन वासा करो,[*]
पलट पंच तीरथ पाप जावै ।
नीर निर्मल तहाँ रैन दिन भरतु है,
न्हाय जो वहुरि भव सिंध न आवै ॥ १ ॥
फिरत बौरे तहाँ वुद्धि को नास है,
वाज के झपट में सिंघ नाहीं ।

[*] गंग अर्थात दहिनी स्वाँसा को चढ़ाओ औ जमुन अर्थात बाँई स्वाँसा के साथ मिलाओ ।

कहै कबीर उस जुक्ति को गहैगा,
जनम औ मरन तब अंत पाई ॥ २ ॥

॥ ६ ॥

ऐन मौजूद में अजब बिसराम है,
होय मौजूद तो सही पावै ।
[illegible] पवन को फेर उलटा चढ़ै,
पाँच पचीस को उलटि लावै ॥ १ ॥
गगन की ओर गुरु सिंध का झूलना,
[illegible] की घोर तहँ नाद गावै ।
[illegible] बिन कँवल तहँ देख अति फूलिया,
कहै कबीर मन भँवर छावै ॥ २ ॥

॥ ७ ॥

चन्द के बीच में कँवल अति फूलिया,
तासु का सुक्ख कोइ संत जानै ।
कुलुफ नौद्वार औ पवन को रोकना,
तिरकुटी मद्ध मन भँवर आनै ॥ १ ॥
सब्द की घोर चहुं ओर ही होत है,
अधर दरियाव को सुक्ख मानै ।
कहै कबीर यों झूल सुख सिंध में,
जन्म औ मरन का भर्म भानै ॥ २ ॥

॥ ८ ॥

गंग औ जमुन के घाट को खोजि ले,
भँवर गुंजार तहँ करत भाई ।

सरसुती नीर तहँ देखु निर्मल बहै,
तासु के नीर पिये प्यास जाई ॥ १ ॥
पाँच की प्यास तहँ देखि पूरी भई,
तीन की ताप तहँ लगे नाहीं ।
कहैं कब्बीर यह अगम का खेल है,
गैब का चाँदना देख माहीं ॥ २ ॥

॥ ९ ॥

माड़ि मत्थान मन रई* को फेरना,
होत घमसान तहँ गगन गाजै ।
उठत झनकार तहँ नाद अनहद घूरै,
तिरकुटी महल के बैठ छाजै ॥ १ ॥
नाम की नेत कर चित्त को फेरिया,
तत्त को ताय कर घिर्त लीया ।
कहैं कब्बीर यों संत निर्भय हुआ,
परम सुख धाम तहँ लागि जीया ॥ २ ॥

॥ १० ॥

गड़ा निस्सान तहँ सुन्न के बीच में,
उलटि के सुरति फिर नाहिं आवै ।
दूध को मत्थ कर घिर्त न्यारा किया,
बहुरि फिर तत्त में ना समावै ॥ १ ॥
माड़ि मत्थान तहँ पाँच उलटा किया,
नाम नौनीत† लै सुरत फेरी ।

*राय, राजा । †मक्खन ।

कहै कबीर सो सत निर्भय हुआ,
जन्म औ मरन की मिटी फेरी ॥

॥ ११ ॥

... तें सूर जगा रही,
... तहाँ सत फूले ।
... नूर बरसत रहै,
... तहाँ पाँच भूले ॥ १ ॥
... ज्यों देखु अंतर नहीं
... पी एक आहीं ।
... गूंगा तहँ,
... गम्म नाहीं ॥ २ ॥

॥ १२ ॥

... गुरु-ज्ञान बिन ना लहै
लहै गुरु-ज्ञान सोइ संत पूरा ।
... करि खोड़री परगटै
... तहाँ बजै तूरा ॥ १ ॥
इंगला पिंगला सुषमना सम करै,
अर्ध औ उर्ध बिच ध्यान लावै ।
... सोइ संत निर्भय रहै,
... की चोट फिर नाहिं खावै ॥

॥ १३ ॥

अधर आसन किया अगम प्याला पि

पंथ बिन जाइ चल सहर बेगमपुरे,
दया गुरुदेव की सहज आई ॥ १ ॥
ध्यान धर देखिया नैन बिन पेखिया,
अगम अगाध सब कहत गाई ।
कहैं कब्बीर कोइ भेद बिरला लहै,
गहै सो कहै या सैन भाई ॥ २ ॥

॥ ४ ॥

सहर बेगमपुरा गम्म को ना लहै,
होय बेगम्म सो गम्म पावै ।
गुनों की गम्म ना अजब बिस्राम है,
सैन को लखै सोइ सैन गावै ॥ १ ॥
मुक्ख बानी तिको* स्वाद कैसे कहै,
स्वाद पावै सोई सुक्ख मानै ।
कहैं कब्बीर या सैन गूंगा तईं,
होय गूंगा सोई सैन जानै ॥ २ ॥

॥ १५ ॥

अधर ही ख्याल औ अधर ही चाल है,
अधर के बीच तहँ मट्ठ कीया ।
खेल उलटा चला जाय चैाथे मिला,
सिंध के मुक्ख फिर सीस दीया ॥ १ ॥

*तिस का ।

... ... गोर टंकोर तहँ अघर है,
... ... परस करि पीर पाया।
... ...ीर मह मेल अवधूत का,
मेलि अवधूत घर सहज आया ॥ २ ॥

॥ १६ ॥

... अवधूत मस्तान माता रहै,
... ... गुथि लिया पूरा।
... ... उस्वाँस का प्रेम प्याला पिया,
... ... तहाँ बजे तूरा ॥ १ ॥
... ... नाम-राता रहै,
... ... लिया सदा खेलै।
कहै कबीर गुरु पीर सों सुरखरू,
परम सुख धाम तहँ प्रान मेलै ॥ २ ॥

॥ १७ ॥

छका सो थका फिर देह धारै नहीं,
करम औ कपट सब दूर कीया।
जिन स्वाँस उस्वाँस का प्रेम प्याला पिया,
नाम दरियाव तहँ पैसि[*] जीया ॥ १ ॥
चढ़ी मनवाल औ हुआ मन साबिता[†],
फटिक ज्यों फेर नहिं फूटि जावै।
कहै कबीर जिन बास निर्भय किया,
बहुरि संसार में नाहिं आवै ॥ २ ॥

---

[*] ...। [†] पैठ कर। [‡] थिर।

॥ १८ ॥

तरक संसार सों फरक फर्रक सदा,
गरक* गुरु ज्ञान में जुक्त जोगी।
अर्ध औ उर्ध के बीच आसन किया,
वंक प्याला पिवै रस्स भोगी ॥ १ ॥
अर्ध दरियाव तहँ जाय डोरी लगी,
महल बारीक का भेद पाया।
कहैं कब्बीर यों संत निर्भय हुआ,
परम सुख धाम तहँ प्रान लाया ॥ २ ॥

॥ १९ ॥

माड़ि मतवाल तहँ ब्रह्म भाठी जरै,
पिवै कोइ सूरमा सीस मेलै।
पाँच को पेल सैतान को पकरि के,
प्रेम प्याला जहाँ अधर झेलै ॥ १ ॥
पलटि मन पवन को उलटि सूधा कँवल,
अर्ध औ उर्ध विच ध्यान लावै।
कहैं कब्बीर मस्तान माता रहै,
विना कर ताँतिया नाद गावै ॥ २ ॥

॥ २० ॥

आठ हूं पहर मतवाल लागी रहै,
आठ हूं पहर की छाक† पीवै।

*डूबा हुआ। †प्याला।

आठ हूं पहर मस्तान माता रहै,
  ब्रह्म की छौल में साध जीवै ॥ १ ॥
साँच ही कहतु औ साँच ही गहतु है,
  काँच को त्याग करि साँच लागा ।
कहै कब्बीर यों साध निर्भय हुआ,
  जनम औ मरन का भर्म भागा ॥ २ ॥

॥ २१ ॥

मगन कल्लोल दरियाव के बीच में,
  ब्रह्म की छौल* में हंस झूलै ।
अर्ध औ उर्ध की पैंग बाढ़ी तहाँ,
  पलट मन पवन को कँवल फूलै ॥ १ ॥
गगन गाजै तहाँ सदा पावस† झरै,
  होत झनकार नित बजत तूरा ।
वेद कत्तेब की गम्म नाहीं तहाँ,
  कहै कब्बीर कोइ रमै सूरा ॥ २ ॥

॥ २२ ॥

गगन की गुफा तहँ गैब का चाँदना,
  उदय औ अस्त का नाँव नाहीं ।
दिवस औ रैन तहँ नेक नहिं पाइये,
  प्रेम परकास के सिंध माहीं ॥ १ ॥

* आनन्द । † वर्षा ।

सदा आनंद दुख दुन्द व्यापै नहीं,
पूरनानंद भरपूर देखा ।
भर्म और भ्रांति तहँ नेक आवै नहीं,
कहैं कब्बीर रस एक पेखा ॥ २ ॥

॥ २३ ॥

खेल ब्रह्मंड का पिंड में देखिया,
जगत की भर्मना दूरि भागी ।
बाहरा भीतरा एक आकासवत,
सुषमना डोरि तहँ उलटि लागी ॥ १ ॥
पवन को पलट करि सुन्न में घर किया,
धरिया में अधर भरपूर देखा ।
कहैं कब्बीर गुरु पूर की मेहर सों,
तिरकुटी मद्ध दीदार पेखा ॥ २ ॥

॥ २४ ॥

देख दीदार मस्तान मैं होइ रह्यो,
सकल भरपूर है नूर तेरा ।
सुभग दरियाव तहँ हंस मोती चुगैं,
काल का जाल तहँ नाहिं नेड़ा ॥ १ ॥
ज्ञान का थाल औ सहज मति वाति है,
अधर आसन किया अगम डेरा ।
कहैं कब्बीर तहँ भर्म भासै नहीं,
जन्म औ मरन का मिटा फेरा ॥ २ ॥

॥ २५ ॥

जहँ परकास तहँ रैन कहँ पाइये,
रैन परकास नहिं सूर भासै ।
ज्ञान परकास अज्ञान कहँ पाइये,
होय अज्ञान तहँ ज्ञान नासै ॥ १ ॥
काम बलवान तहँ नाम कहँ पाइये,
नाम जहँ होय तहँ काम नाहीं ।
कहै कबीर यह सत्त बीचार है,
समुझ बिचार करि देख माहीं ॥ २ ॥

॥ २६ ॥

एक समसेर इकसार बजती रहै,
खेल कोइ सूरमा संत झेलै ।
काम दल जीत करि क्रोध पैमाल* करि,
परम सुख धाम तहँ सुरत मेलै ॥ १ ॥
सील संतोष करि ज्ञान का खड़ग ले,
आय मैदान में खेल खेलै ।
कहै कबीर कोइ संत जन सूरमा,
सीस को सौंप करि करम ठेलै ॥ २ ॥

॥ २७ ॥

जबहि समसेर संग्राम में पैसिये,
देह परजंत कर जुद्ध भाई ।

*पीसना । †तलवार ।

काट सिर बैरियाँ दाब जहँ का तहाँ,
 आय दरबार में सीस नाई ॥ १ ॥
करत मतवाल जहँ संत जन सूरमा,
 घुरत निस्सान तहँ गगन धाई ।
कहैं कब्बीर अब नाम सों सुरखरु,
 मौज दरबार की भक्ति पाई ॥ २ ॥

॥ २८ ॥

देह बंदूक और पवन दारु* किया,
 ज्ञान गोली तहाँ खूब डाटो ।
सुरत की जामकी मूठ बाँधे लगी,
 भर्म की भीत+ सब दूर फाटो ॥ १ ॥
कहैं कब्बीर कोइ खेलिहैं सूरमा,
 कायराँ खेल यह होत नाहीं ।
आस की फाँस को काटि निर्भय भया,
 नाम रस रस्स कर गरक माहीं ॥ २ ॥

॥ २९ ॥

ज्ञान समसेर को बाँधि जोगी चढ़ै,
 मार मन मीर रन धीर हूवा ।
खेत को जीत करि बिसन: सब पेलिया,
 मिला हरि माहिं अब नाहिं जूवा ॥ १ ॥
जगत में जस्स औ दाद दरगाह में,
 खेल यह खेलिहै सूर कोई ।

*बारूद । +दीवार । :विषय ।

कहै कबीर यह सूर का खेल है,
कायरां खेल यह नाहिं होई ॥ २ ॥

॥ ३० ॥

सूर संग्राम को देखि भागे नहीं,
देखि भागे सोई सूर नाहीं ।
काम औ क्रोध मद लोभ सों जूझना,
मचा घमशान तहं खेत माहीं ॥ १ ॥
सील और साँच संतोष साही भये,
नाम समशेर तहं खूब बाजै ॥ २ ॥
कहै कबीर कोइ जूझिहै सूरमा,
कायरां भीड़ तहं तुरत भाजै ॥ ३ ॥

॥ ३१ ॥

साध का खेल तो विकट बेंड़ा मती,
सती औ सूर की चाल आगे ।
सूर घमसान है पलक दो चार का,
सती घमसान पल एक लागे ॥ १ ॥
साध संग्राम है रैन दिन जूझना,
देह परजंत का काम भाई ।
कहै कबीर टुक बाग ढीली करे,
उलटि मन गगन सों जमीं आई ॥ २ ॥

मिश्रित

॥ शब्द १ ॥

तन मन धन बाजी लागी हो ॥ टेक ॥

चौपड़ खेलूं पीव से रे, तन मन बाजी लगाय ।
हारी तो पिय की भई रे, जीती तो पिय मोर हो ॥१॥
चौसरिया के खेल में रे, जुग्ग मिलन की आस ।
नर्द अकेली रह गई रे, नहिं जीवन की आस हो ॥२॥
चार बरन घर एक है रे, भाँति भाँति के लोग ।
मनसा वाचा कर्मना कोइ, प्रीति निबाहो ओर हो ॥३॥
लख चौरासी भरमत भरमत, पौ पै अटकी आय ।
जो अबके पौ ना पड़ी रे, फिर चौरासी जाय हो ॥४॥
कहैं कबीर धर्मदास से रे, जीती बाजी मत हार ।
अबके सुरत चढ़ाय दे रे, सोई सुहागिन नार हो ॥५॥

॥ शब्द २ ॥

जन को दीनता जब आवै ॥ टेक ॥

रहै अधीन दीनता भाषै दुरमति दूरि बहावै ।
सो पद देवँ दास अपने को ब्रह्मादिक नहिं पावै ॥१॥
औरन को ऊँचो करि जानै आपुन नीच कहावै ।
तुम तें अवधू साँच कहतु हौं सो मेरे मन भावै ॥२॥
सब घट एक ब्रह्म जो जानै दुविधा दूर बहावै ।
सकल भर्मना त्यागि के अवधू इक गुर के गुन गावै ॥३॥

... भेष तो त्यागे सब अभिमान नसावे ।
... गमावें पाहि गुनि सब बिसरावे ॥४॥
... की संगत जोग जुक्ति तें पावे ।
... तो पाभो बहुरि न भवजल आवे ॥५॥

॥ शब्द ३ ॥

... पारा। जिन मनतें आपा डारा ॥टेक॥
... मैं ... रे भाई कोई कहे मैं त्यागी ।
... मैं ... जोगी अरु सबन को लागी ॥ १ ॥
... मैं जोगी रे भाई कोई कहे मैं भोगी ।
... आपा दूरि न डारा कैसे जीवे रोगी ॥ २ ॥
... कहे मैं दाना रे भाई कोई कहे मैं तपसी ।
... नाम निश्चय नाहिं जाना सब माया में खपसी ३
... कहे ... सब जानीं कोई कहे मैं रहनी ।
... देव सों परिचय नाहीं यह सब झूठी कहनी ॥४॥
कोई कहे धर्म सब साधे और बरत सब कीन्हा ।
... की आँटी निकसी नाहीं करज बहुत सिर लीन्हा ५
... गुमान सब दूर निवारे करनी को बल नाहीं ।
कहे कबीर साहब का बंदा पहुंचा निज पद माहीं ॥६॥

॥ शब्द ४ ॥

... का निरंजनहार बढ़ैया इक ना मरे ॥ टेक ॥
बाबुल मेरा ब्याह करा दो अनजाया वर लाय ।
अनजाया वर ना मिले तो तोहि से मेरा ब्याह ॥१॥

हरे हरे बाँस कटा नोरे बाभुल पानन मड़वा छाय ।
सुरति निरति की भाँवरि डारी ज्ञान की गाँठि लगाय २
सास मरै ननदी मरै रे लहुरा देवर मरि जाय ।
एक वढ़ैया ना मरै चरखे का सिरजनहार ॥ ३ ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो चरखा लखो न जाय ।
या चरखे को जो लखे रे आवागवन छुटि जाय ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

जहँ लोभ मोह के खंभ दोऊ, मन रच्यो है हिंडोर ।
तहँ झूलैं जीव जहान, जहँ कतहूं नहिं थिर ठौर ॥ १ ॥
चतुरा झूलैं चतुराइयाँ, औ झूलैं राजा सेव ।
औ चंद सूर दोऊ झूलैं, नाहीं पावैं भेव ॥ २ ॥
चौरासी लच्छहुं जिव झूलैं, झूलैं रवि ससि धाय ।
कोटिन कल्प जुग बीतिया, आवे न कबहूं हाय ॥३॥
धरनी आकासहु दोऊ झूलैं, झूलैं पवनहुं नीर ।
धरि देह हरि आपहु झूलैं, लखहीं संत कबीर ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

मोको कहाँ ढूंढो बंदे मैं तो तेरे पास में ॥ टेक ॥
ना मैं छगरी ना मैं भेंड़ी न मैं छुरी गँडास में ॥१॥
नहीं खाल में नहीं पूंछ में ना हड्डी ना मास में ॥२॥
ना मैं देवल ना मैं मस्जिद ना काबे कैलास में ॥३॥
ना तो कौनो क्रिया कर्म में नहीं जोग वैराग में ॥४॥

[illegible] पल भर की तालास में ॥५॥
[illegible] के तारए मेरी पुरी मवास* में ॥६॥
[illegible] सुनो भाई साधो सब स्वाँसों की स्वाँस में ॥७॥

॥ शब्द ७ ॥

[illegible] मन को लगावे। मन के लगाये गुरु पावे १
[illegible] ढोलिया ढोल बजावे ।
[illegible] ऊपर सुरत बाँस पर लावे ॥२॥
[illegible] में, आरा काटने आवे ।
[illegible] तन निरखे मनि तज प्रान गँवावे ३
[illegible] कूप जल कर छोड़े बतरावे‡
[illegible] वचन राचै, सुरति डोर पर लावे ॥४॥
[illegible] चढ़ी मन ऊपर, अपनी काया जरावे ।
[illegible] सब कुटुंब तियागे, सुरत पिया पर लावे ॥५॥
धूप दीप नैवेद अरगजा, ज्ञान की आरत लावे ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, फेर जनम नहिं पावे ॥६॥

॥ शब्द ८ ॥

ऐसी दिवानी दुनियाँ, भक्ति भाव नहिं बूझै जी ॥१॥
कोइ आवै तो बेटा माँगे, यही गुसाँईं दीजै जी ॥२॥
कोई आवै दुख का मारा, हम पर किरपा कीजै जी ॥३॥
कोइ आवै तो दौलत माँगे, भेंट रुपैया लीजै जी ॥४॥
कोई करावे ब्याह सगाई, सुनत गुसाँईं रीझै जी ॥५॥

* मरम । † साँप । ‡ बात करती है ।

साँचे का कोइ गाहक नाहीं, झूठे जक्त पतीजै जी ॥६॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, अंधों को क्या कीजै जी ॥७॥

॥ शब्द ९ ॥

सतगुरु चारो बरन बिचारी ॥ टेक ॥

ब्राह्मन वही ब्रह्म को चीन्है, पहिरै जनेव बिचारी ॥१॥
साध के सौ गुन जनेव के नौ गुन, सो पहिरे ब्रह्मचारी ॥२॥
छत्री वही पाप को छै करै, ज्ञान बाँधे तरवारी ॥३॥
अंतर दिल बिच दाया राखै, कबहूं न आवे हारी ॥४॥
बैस वही जो बिसया त्यागै, त्याग देय पर नारी ॥५॥
ममता मारि के मंजन लावै, प्रान दान देहारी ॥६॥
सूद्र वही जो सूधो राहै, छोड़ देय अपकारी ॥७॥
गुरु की दया साध की संगत, पावै अचल पद भारी ॥८॥
जो जन भजै सोई जन उबरै, या में जीत न हारी ॥९॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, नामै गहो सँभारी ॥१०॥

॥ शब्द १० ॥

संतन जात न पूछो निरगुनियाँ ॥ टेक ॥

साध बराम्हन साध छत्तरी, साधै जाती बनियाँ ।
साधन माँ छत्तीस कौम है, टेढ़ी तोर पुछनियाँ* ॥१॥
साधै नाऊ साधै धोबी, साध जाति है बरियाँ ।
साधन माँ रैदास संत हैं, सुपच ऋषी सो भँगियाँ ॥२॥

*सवाल ।

[illegible] हीन बने हैं, कबहू नाहिं पहिचनियाँ ।
[illegible] जगत मां फेरी, काल को फंद पसरियाँ ॥३॥
[illegible] सब्द रूप जिन देहियाँ ।
[illegible] सतरूप वहि जनियाँ ॥४॥

॥ शब्द ११ ॥

[illegible] पिय ने गंवारी ।
[illegible] पिय की प्यारी ॥ १ ॥
[illegible] बनी चुनरिया ।
[illegible] पहिरया पारी ॥ २ ॥
[illegible] जा में आँचल लागे ।
[illegible] जोति उंजारी ॥ ३ ॥
बिनु नागे यह बनी चुनरिया ।
दास कबीर बलिहारी ॥ ४ ॥

॥ शब्द १२ ॥

[illegible] बस कीन्हा जग में काहू न मन बस कीन्हा ॥टेक॥
[illegible] ऋषि [illegible] बन में रहते बिषै बिकार न जाने ।
[illegible] नारि नृप दसरथ ने पकरि अजोध्या आने ॥ १ ॥

[illegible] अकेले बन मे रहते थे पवन का अहार करते थे और एक [illegible] पर सवासा मारते थे । राजा दशरथ के औलाद नहीं होती [illegible] उनके कुल के परोहित थे उन्होंने कहा कि विधि [illegible] हवा और होम होगा तब बेटा होने की उम्मेद हो सकती [illegible] सिवाय श्रृंगी ऋषि के और कोई नहीं करा सकता [illegible] हुक्म हुआ कि जो कोई श्रृंगी ऋषि को यहाँ लावेगा

सूखे पत्र पवन भषि रहते पाराशर* से ज्ञानी ।
भरमे रूप देख वनिता को कामकन्दला† जानी ॥ २ ॥

उसको हीरे जवाहिर का दान भर कर मिलेगा। एक वेश्या ने कहा मैं ले आती हूं वह वहाँ गई देखा कि ऋषि जी बड़ी तपस्या में बैठे हैं। जिस दरख़्त पर कि ज़बान लगाते थे वहाँ एक उँगली गुड़ की लगा दी ऋषि जी ने जब ज़बान लगाई स्वाद लग गई पहले एक दफ़ा ज़बान मारते थे उस रोज़ दो दफ़ा मारी दूसरे रोज़ तीन बार मारी इसी तरह रस बढ़ता गया और ताक़त आने लगी। वह वेश्या जो छिप के बैठी थी उसने हलुवा पेश किया तब थोड़ा थोड़ा हलुवा खाने लगे बदन जो दुबला था वह पुष्ट होने लगा ताक़त आई वेश्या पास रही सब कार्रवाई जारी होगई, दो तीन लड़के हुए। किसी बहाने ऋषी जी से वेश्या ने कहा चलो राज दरबार मे यहाँ जंगल में भूखे मरते हैं ऋषि बिचारे उसके साथ हो लिये। दो लड़कों को दोनों कंधों पर उठाया और एक का हाथ पकड़ा पीछे वह वेश्या चली। इस दशा से राजा दशरथ के दरबार मे पहुंचे और वहाँ कथा होम वग़ैरह भी कराई। तब वहाँ किसी ने ताना मारा तब होश आया एक दम लड़कों को वहीं पटक के भागे और जाना कि माया ने लूट लिया।

*पाराशर ऋषि ने मछोदरी से नाव मे भोग किया (यह स्त्री ऋषी के बीज से मछली के पेट से पैदा हुई थी जो बीज गंगा मे नहाने वक्त ऋषि जी का किसी समय मे गिर गया था और एक मछली ने खा लिया था) उस मछोदरी ने कहा अभी दिन है लोग देखते हैं तब ऋषि ने अपनी सिद्ध शक्ति से अँधेरा कर दिया आकाश मे बादल आ गये। फिर स्त्री ने कहा मेरे बदन से मछली की बदबू आती है ऋषि ने बदबू को बदल के खुशबू कर दिया। नतीजा इस संगम का यह हुआ कि व्यास जी उस मछोदरी से पैदा हुए।

†कामकन्दला एक परम सुन्दर स्त्री अयोध्या मे हो गई है।

[illegible] जा की नार सुनी गी निस दिन हीं संग राखी।
[illegible] नारि अहिल्या निगम कहत है साखी ॥ २ ॥
[illegible] जा के ता को मन क्यों डोले।
[illegible] देख मोहिनी हा हा करिके बोले ॥ [illegible]
[illegible] जग-उपराजा कहावे।
[illegible] औरत बिन जिव आराम न पावे ॥ ५ ॥

[illegible] अहिल्या पर राजा इन्द्र मोहित हुए सोचा कि [illegible] इसलिये चाँद को हुक्म [illegible] रात को बारह बजे के वक्त जहाँ कि तीन बजे [illegible] निकलना और मुर्ग को कहा कि तू बारह बजे रात को [illegible] किया और गौतम धोखा खाकर अधीरात [illegible] के नदी को चले गये। इन्द्र भीतर गौतम [illegible] के आये तब सब हाल मालूम होगया— [illegible] कि तुमको कलङ्क लगेगा और अपनी स्त्री [illegible] हिल्या [illegible] जायगी मुर्ग को कहा कि हिन्दू तुझको [illegible] और इन्द्र को श्राप दिया कि एक काम इन्द्री [illegible] तू ने ऐसा अत्याचार किया तेरे शरीर में हज़ार वैसीही इन्द्री [illegible]।

[illegible] जिन के पार्वती ऐसी सुन्दर स्त्री थी उनको छोड़ के [illegible] माया का देख कर उसके पीछे दौड़े और जोश में बीज [illegible] गिर गया (इसी बीज से पारा पैदा हुआ) जब देखा माया का [illegible] तब अपने इष्टदेव को श्राप दिया कि, जैसे हम स्त्री के पीछे [illegible] तुम भी दौड़ोगे—इसी से त्रेताजुग में राम औतार हुआ, [illegible] के पीछे बन बन दौड़ना।

[illegible] बातें बाल्या।

वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें और जो दुर्लभ ग्रंथ संतबानी के उन को मिलें उन्हें भेज कर इस परोपकार के काम में सहायता करें।

यद्यपि ऊपर लिखे हुए कारनो से इन पुस्तकों के छापने में बहुत व्यय होता है तौ भी सर्व साधारन के उपकार हेतु दाम आध आना फ़ी आठ पृष्ठ से अधिक किसी का नही रक्खा गया है। जो लोग सबस्क्राइबर अर्थात पक्के गाहक होकर कुछ पेशगी जमा कर देंगे जिन की तादाद दो रुपये से कम न हो उन को डाक महसूल और मनीआर्डर कमिशन भी हर पुस्तक पर न देना पड़ेगा और जो पुस्तकें अब तक छप गई हैं और जिन के नाम आगे लिखे हैं सब एक साथ लेने से पक्के गाहकों के लिये दाम मे एक रुपये की कमी कर दी जायगी और डाक महसूल भी न लिया जायगा—पेशगी दाम न भेजने वाले सबस्क्राइबरों के लिये केवल डाक महसूल छोड़ दिया जायगा।

अब भीखा साहब, बिहार के दरिया साहब और गरीबदास, की बानी हाथ में लीगई है॥

प्रोप्राइटर, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग,
इलाहाबाद।

जूलाई १९०६ ई०